गुरुत्व ज्योतिष

श्रावण मास विशेष

NOT FOR SALE

Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष

मासिक ई-पत्रिका

जुलाई 2019

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvakaryalay.in

http://gk.yolasite.com/

www.shrigems.com

www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,

गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,

गुरुत्व कार्यालय

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

कौन है गुरु?

हिन्दू सभ्यता का इतिहास जितना पुरातन है, गुरु शब्द भी उतना ही पुरातन है।
आजके आधुनिक युग में गुरु शब्द का अर्थ चाहे जितना बदला हो, लेकिन पारंपरिक हिन्दू धर्म शास्त्रों-ग्रंथों में गुरु शब्द की महिमा अपार हैं, हिन्दू धर्म शास्त्रों-ग्रंथों गुरु को भगवान के समान या भगवान से भी अधिक महत्व दिया गया हैं।

सरल शब्दों में वर्णन करे तो मनुष्य को छोटा हो या बड़ा किसे भी कार्य को सीखने के लिए किसी ना किसी रुप में गुरु की आवश्यक्ता होती हैं। फिर चाहे वह कार्य भौतिक जीवन से जुड़ा हो या आध्यात्मिक जीवन से से जुड़ा हो, वह कार्य गुरुकृपा के बिना संपन्न नहीं हो सकता।

सरल भाषा में गुरु की व्याख्या करनी हो, तो हमारे धर्मग्रंथ-शास्त्र एवं विद्वानों ने गुरु को ज्ञान का भंडार कहा है।

मनुष्य के जीवन में अनेक गुरु होते हैं। छोटे बालको को अक्षर ज्ञान देने वाले शिक्षक/शिक्षिका को 'विद्या गुरु' कहा जाता है। उसी प्रकार उपनयन-संस्कार, विवाह-संस्कार, इत्यादि धार्मिक षोडश संस्कार करने वाले को कुलगुरु या कुल पुरोहित कहा जाता है। नौकरी-व्यापार-कार्य क्षेत्र से संबंधित ज्ञान देने वाले को व्यवसाय गुरु कहा जाता है। इसी प्रकार अध्यात्म की ओर अग्रस्त करने वाले को अध्यात्म गुरु कहा जाता है।

इनके अतिरिक्त भी जीवन में अनेक गुरु होते हैं। जिससे भी हम प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में कुछ भी सीखते हैं, हिन्दू संस्कृति में उसे गुरु कहा जाता है।

महापुरुषो के मतानुशार व्यक्ति को अपने जीवन में पूर्णता किसी सद्गुरु गुरु की शरण में जाने से प्राप्त हो सकती हैं। भारतीय धर्मशास्त्रो में गुरुको ब्रह्म स्वरुप कहां गया हैं।
किसी सद्द गुरु के प्राप्त होने पर व्यक्ति के सभी धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य आदि समाप्त हो जाते हैं।

यस्य स्मरणमात्रेण ज्ञानमुत्पद्यते स्वयम् । सः एव सर्वसम्पत्तिः तस्मात्संपूजयेद् गुरुम् ।।

अर्थात: जिनके स्मरण मात्र से ज्ञान अपने आप प्रकट होने लगता है और वे ही सर्व सम्पदा रूप हैं, अतः श्री गुरुदेव की पूजा करनी चाहिए।
हमारे ऋषि मुनि के मतानुशार गुरु उसे मानना चाहिये जो

प्रेरकः सूचकश्वैव वाचको दर्शकस्तथा । शिक्षको बोधकश्चैव षडेते गुरवः स्मृताः ॥

अर्थात: प्रेरणा देनेवाले, सूचन देनेवाले, सच बतानेवाले, सही रास्ता दिखानेवाले, शिक्षण देनेवाले, और बोध करानेवाले ये सब गुरु समान हैं।

गुरुशब्द की परिभाषा शब्दो में लिखना या बताना एक मूर्खता हैं एक ओछापन हैं। क्योकि गुरु की महिमा अनंत हैं अपार हैं। इस लिये कबिरजी ने लिखा हैं।

गुरु गोविंद दोनो खड़े काके लागू पांव, गुरु बलिहारी आपने गोविंद दियो बताए।

गुरु की तुलना किसी अन्य से करना कभी भी संभव नहीं हैं। इस लिये शास्त्र कहते हैं।

दृष्टान्तो नैव दृष्टस्त्रिभुवनजठरे सद्गुरोर्ज्ञानदातुः स्पर्शश्चेत्तत्र कल्प्यः स नयति यदहो स्वहृतामश्मसारम् ।
न स्पर्शत्वं तथापि श्रितचरगुणयुगे सद्गुरुः स्वीयशिष्ये स्वीयं साम्यं विधते भवति निरुपमस्तेवालौकिकोऽपि ॥

अर्थात: तीनों लोक, स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल में ज्ञान देनेवाले गुरु के लिए कोई उपमा नहीं दिखाई देती । गुरु को पारसमणि के जैसा मानते है, तो वह ठीक नहीं है, कारण पारसमणि केवल लोहे को सोना बनाता है, पर स्वयं जैसा

नहि बनाता ! सद्बुरु तो अपने चरणों का आश्रय लेनेवाले शिष्य को अपने जैसा बना देता है; इस लिए गुरुदेव के लिए कोई उपमा नहि है, गुरु तो अलौकिक है ।

इस कलियुग में धर्म के नाम पर गुरुके नाम का ठोंगी चोला पहनने वालो की भी कमी नहीं हैं इस लिये शास्त्रो में लिखा हैं।

सर्वाभिलाषिणः सर्वभोजिनः सपरिग्रहाः । अब्रह्मचारिणो मिथ्योपदेशा गुरवो न तु ॥

अर्थात: अभिलाषा रखनेवाले, सब भोग करनेवाले, संग्रह करनेवाले, ब्रह्मचर्य का पालन न करनेवाले, और मिथ्या उपदेश करनेवाले, गुरु नहि होते है ।

जो गुरु अविद्या, असंयम, अनाचार, कदाचार, दुराचार, पापाचार आदि से मुक्ति दिलाता है, वही गुरु नमस्कार योग्य है।

भारत वर्ष में अनादिकाल से विभिन्न पर्व मनाये जाते हैं, एवं भगवान शिव से संबंधी अनेक व्रत-त्यौहात मनाए जाते रहे हैं। इन उतसवो में श्रावण मास का अपना विशेष महत्व हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुशार श्रावण मास में चार सोमवार (कभी-कभी पांच सोमवार होते हैं) , एक प्रदोष व्रत तथा एक शिवरात्रि शामिल होत हैं इन सबका संयोग एकसाथ श्रावण महीने में होता हैं, इसलिए श्रावण का महीना शिव कृपा हेतु शीघ्र शुभ फल देने वाला मानागया हैं।

शिवपुराण के अनुशार श्रावण माह में द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने से समस्त तीर्थों के दर्शन का पूण्य एक साथ हि प्राप्त हो जाता हैं। **पद्म पुराण** के अनुशार श्रावण माह में द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने से मनुष्य कि समस्त शुभ कामनाएं पूर्ण होती हैं एवं उसे संसार के समस्त सुखों कि प्ताप्ति होकर उसे शिव कृपा से मोक्ष कि प्राप्ति हो जाती हैं।

श्रावण मास इस साल 17 जुलाई से 15 अगस्त के बीच रहेगा। इस दौरान 22 जुलाई , 29 जुलाई, 5 अगस्त, 12 अगस्त को चार सोमवार श्रावण मास में पड़ रहे हैं। कई प्रदेशो में 15 अगस्त से 30 अगस्त के बीच रहेगा, इस कारण इन प्रदेशों में 5 अगस्त, 12 अगस्त, 19 अगस्त, 26 अगस्त को चार सोमवार श्रावण मास में पड़ रहे हैं। श्रावण मास के समस्त सोमवारों के दिन व्रत करने से पूरे साल भर के सोमवार के व्रत समान पुण्य फल मिलता हैं। सोमवार के व्रत के दिन प्रातःकाल ही स्नान इत्यादि से निवृत्त होकर, शिव मंदिर, देवालय घरमें जाकर शिव लिंग पर जल, दूध, दही, शहद, घी, चीनी, श्वेत चंदन, रोली(कुमकुम), बिल्व पत्र(बेल पत्र), भांग, धतूरा आदि सें अभिषेक किया जाता हैं।

इस मासिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो भगवान शिवजी की कृपा
आपके परिवार पर बनी रहे। शिवजी से यही प्राथना हैं...

चिंतन जोशी

***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

गुरु प्रार्थना

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गुरुर्ब्रह्मा ग्रुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

भावार्थ: गुरु ब्रह्मा हैं, गुरु विष्णु हैं, गुरु हि शंकर हैं; गुरु हि साक्षात् परब्रह्म हैं; एसे सद्गुरु को नमन ।

ध्यानमूलं गुरुर्मूतिः पूजामूलम गुरुर पदम्।
मंत्रमूलं गुरुर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरुर कृपा।।

भावार्थ: गुरु की मूर्ति ध्यान का मूल कारण है, गुरु के चरण पूजा का मूल कारण हैं, वाणी जगत के समस्त मंत्रों का और गुरु की कृपा मोक्ष प्राप्ति का मूल कारण हैं।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव
बंधुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

ब्रह्मानंदं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति द्वंद्वातीतं
गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम् । एकं नित्यं
विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभुतं भावातीतं त्रिगुणरहितं
सद्गुरुं तं नमामि ॥

भावार्थ: ब्रह्मा के आनंदरुप परम् सुखरुप, ज्ञानमूर्ति, द्वंद्व से परे, आकाश जैसे निर्लेप, और सूक्ष्म "तत्त्वमसि" इस ईशतत्त्व की अनुभूति हि जिसका लक्ष्य है; अद्वितीय, नित्य विमल, अचल, भावातीत, और त्रिगुणरहित - ऐसे सद्गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ ।

गुर्वष्टकम्

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं,
यशश्चारु चित्रं धनं मेरु तुल्यम्।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥१॥

कलत्रं धनं पुत्र पौत्रादिसर्वं,
गृहो बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम्।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥२॥

षड़ंगादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या,
कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥३॥

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः,
सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥४॥

क्षमामण्डले भूपभूपलबृब्दैः,
सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम्।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥५॥

यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापात्,
जगद्वस्तु सर्वं करे यत्प्रसादात्।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥६॥

न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ,
न कन्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम्।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥७॥

अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये,
न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्ध्ये।
मनश्चेन लग्नं गुरोरघ्रिपद्मे,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥८॥

गुरोरष्टकं यः पठेत्पुरायदेही,
यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही।
लमेद्वाच्छिताथं पदं ब्रह्मसंज्ञं,
गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम्॥९॥

॥इति श्रीमद आद्य शंकराचार्यविरचितम् गुर्वष्टकम् संपूर्णम्॥

भावार्थ: (१) यदि शरीर रूपवान हो, पत्नी भी रूपसी हो और सत्कीर्ति चारों दिशाओं में विस्तरित हो, सुमेरु पर्वत के तुल्य अपार धन हो, किंतु गुरु के श्रीचरणों में यदि मन आसक्त न हो तो इन सारी उपलब्धियों से क्या लाभ?

(२) **यदि** पत्नी, धन, पुत्र-पौत्र, कुटुंब, गृह एवं स्वजन, आदि प्रारब्ध से सर्व सुलभ हो किंतु गुरु के श्रीचरणों में यदि मन आसक्त न हो तो इस प्रारब्ध-सुख से क्या लाभ?

(३) **यदि** वेद एवं ६ वेदांगादि शास्त्र जिन्हें कंठस्थ हों, जिनमें सुन्दर काव्य निर्माण की प्रतिभा हो, किंतु उनका मन यदि गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न हो तो इन सदगुणों से क्या लाभ?

(४) जिन्हें विदेशों में समान आदर मिलता हो, अपने देश में जिनका नित्य जय-जयकार से स्वागत किया जाता हो और जिसके समान दूसरा कोई सदाचारी भक्त नहीं, यदि उनका भी मन गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न हो तो सदगुणों से क्या लाभ?

(५) जिन महानुभाव के चरण कमल भूमण्डल के राजा-महाराजाओं से नित्य पूजित रहते हों, किंतु उनका मन यदि गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न हो तो इस सदभाग्य से क्या लाभ?

(६) दानवृत्ति के प्रताप से जिनकी कीर्ति चारो दिशा में व्याप्त हो, अति उदार गुरु की सहज कृपा दृष्टि से जिन्हें संसार के सारे सुख-एश्वर्य हस्तगत हों, किंतु उनका मन यदि गुरु के श्रीचरणों में आसक्तभाव न रखता हो तो इन सारे एशवर्यों से क्या लाभ?

(७) जिनका मन भोग, योग, अश्व, राज्य, स्त्री-सुख और धन भोग से कभी विचलित न होता हो, फिर भी गुरु के श्रीचरणों के प्रति आसक्त न बन पाया हो तो मन की इस अटलता से क्या लाभ?

(८) जिनका मन वन या अपने विशाल भवन में, अपने कार्य या शरीर में तथा अमूल्य भण्डार में आसक्त न हो, पर गुरु के श्रीचरणों में भी वह मन आसक्त न हो पाये तो इन सारी अनासक्तियों का क्या लाभ?

(९) जो यति, राजा, ब्रह्मचारी एवं गृहस्थ इस गुरु अष्टक का पठन-पाठन करता है और जिसका मन गुरु के वचन में आसक्त है, वह पुण्यशाली शरीरधारी अपने इच्छिताथं एवं ब्रह्मपद इन दोनों को संप्राप्त कर लेता है यह निश्चित है।

गुरुमंत्र के प्रभाव से ईष्ट दर्शन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

विद्वानो के अनुशार शास्त्रोक्त उल्लेख हैं की कोई भी मंत्र निश्चित रूप से अपना प्रभाव अवश्य रखते हैं।

जिस प्रकार पानी में कंकड़-पत्थर डालने से उसमें तरंगे उठती हैं उसी प्रकार से मंत्रजप के प्रभाव से हमारे भीतर आध्यात्मिक तरंग उत्पन्न होती हैं। जो हमारे इर्द-गिर्द सूक्ष्म रूप से एक सुरक्षा कवच जैसा प्रकाशित वलय (अर्थात ओरा) का निर्माण होता हैं। उन ओरा का सूक्ष्म जगत में उसका प्रभाव पड़ता है। जो खुली आंखो से सामान्य व्यक्ति को उसका प्रभाव दिखाई नहीं देता। उस सुरक्षा कवच से व्यक्ति को नकारात्मक प्रभावी जीव व शक्तिया उसके पास नहीं आ सकतीं।

श्रीमदभगवदगीता की 'श्री मधुसूदनी टीका' प्रचलित एवं महत्त्वपूर्ण टीकाओं में से एक हैं। इस टीका के रचयिता श्री मधुसूदन सरस्वतीजी जब संकल्प करके लेखनकार्य के लिए बैठे ही थे कि एक तेजस्वी आभा लिये परमहंस संन्यासी अचानक घर का द्वार खोलकर भीतर आये और बोलेः "अरे मधुसूदन! तू गीता पर टीका लिखता है तो गीताकार से मिला भी है कि ऐसे ही कलम उठाकर बैठ गया है? तूने कभी भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन किये हैं कि ऐसे ही उनके वचनों पर टीका लिखने लग गया?"

श्री मधुसूदनजी तो थे वेदान्ती, अद्वैतवादी। वे बोलेः "दर्शन तो नहीं किये। निराकार ब्रह्म-परमात्मा सबमें एक ही है। श्रीकृष्ण के रूप में उनका दर्शन करने का हमारा प्रयोजन भी नहीं है। हमें तो केवल उनकी गीता का अर्थ स्पष्ट करना है।"

"संन्यासी बोले नहीं ....पहले उनके दर्शन करो फिर उनके शास्त्र पर टीका लिखो। लो यह मंत्र। छः महीने इसका अनुष्ठान करो। भगवान प्रकट होंगे। उनसे प्रेरणा मिले फिर लेखनकार्य का प्रारंभ करो।"

मंत्र देकर बाबाजी चले गये। श्री मधुसूदनजी ने अनुष्ठान शुरु किया। अनुष्ठान के छः महीने पूर्ण हो गये लेकिन श्रीकृष्ण के दर्शन न हुए। 'अनुष्ठान में कुछ त्रुटि रह गई होगी' ऐसा सोचकर श्री मधुसूदनजी ने दूसरे छः महीने में दूसरा अनुष्ठान किया फिर भी श्रीकृष्ण दर्शन न हुए।

दो बार अनुष्ठान के उरांत असफलता प्राप्त होने पर श्री मधुसूदन के चित्त में ग्लानि हो गई। सोचा किः 'किसी अजनबी बाबाजी के कहने से मैंने बारह मास बिगाड़ दिये अनुष्ठानों में।

सबमें ब्रह्म माननेवाला मैं 'हे कृष्ण ...हे भगवान ... दर्शन दो ...दर्शन दो...' ऐसे मेरा गिड़गिड़ाना ?

जो श्रीकृष्ण की आत्मा है वही मेरी आत्मा है। उसी आत्मा में मस्त रहता तो ठीक रहता। श्रीकृष्ण आये नहीं और पूरा वर्ष भी चला गया। अब क्या टीका लिखना ?"

वे ऊब गये। अब न टीका लिख सकते हैं न तीसरा अनुष्ठान कर सकते हैं। चले गये यात्रा करने को तीर्थ में। वहाँ पहुँचे तो सामने से एक चमार आ रहा था। उस चमार ने इनको पहली बार देखा और श्री मधुसूदनजी ने भी चमार को पहली बार देखा।

चमार ने कहाः "बस, स्वामीजी! थक गये न दो अनुष्ठान करके?"

श्रीमधुसूदन स्वामी चौंके ! सोचाः "अरे मैंने अनुष्ठान किये, यह मेरे सिवा और कोई जानता नहीं। इस चमार को कैसे पता चला?"

वे चमार से बोलेः "तेरे को कैसे पता चला?", "कैसे भी पता चला। बात सच्ची करता हूँ कि नहीं ? दो अनुष्ठान करके थककर आये हो। ऊब गये, तभी इधर आये हो। बोलो, सच कि नहीं?"

"भाई ! तू भी अन्तर्यामी गुरु जैसा लग रहा है। सच बता, तूने कैसे जाना ?"

"स्वामी जी ! मैं अन्तर्यामी भी नहीं और गुरु भी नहीं। मैं तो हूँ जाति का चमार। मैंने भूत को अपने वश में

किया है। मेरे भूत ने बतायी आपके अन्तःकरण की बात।"

श्री मधुसूदनजी बोले "भाई! देख श्रीकृष्ण के तो दर्शन नहीं हुए, कोई बात नहीं। प्रणव का जप किया, कोई दर्शन नहीं हुए। गायत्री का जप किया, दर्शन नहीं हुए। अब तू अपने भूत का ही दर्शन करा दे, चल।"

चमार ने कहाः "स्वामी जी! मेरा भूत तो तीन दिन के अंदर ही दर्शन दे सकता है। 72घण्टे में ही वह आ जायेगा। लो यह मंत्र और उसकी विधि।"

श्री मधुसूदनजी ने चमार द्वारा बताई गई पूर्ण विधि जाप किया। एक दिन बीता, दूसरा बीता, तीसरा भी बीत गया और चौथा शुरु हो गया। 72घण्टे तो पूरे हो गये। भूत आया नहीं। गये चमार के पास। श्री मधुसूदनजी बोलेः "श्री कृष्ण के दर्शन तो नहीं हुए मुझे तेरा भूत भी नहीं दिखता?" चमार ने कहाः "स्वामी जी! दिखना चाहिए।"

श्री मधुसूदनजी ने कहाः "नहीं दिखा।"

चमार ने कहाः "मैं उसे रोज बुलाता हूँ, रोज देखता हूँ। ठहरिये, मैं बुलाता हूँ, उसे।" वह गया एक तरफ और अपनी विधि करके उस भूत को बुलाया, भूत से बात की और वापस आकर बोलाः

"बाबा जी! वह भूत बोलता है कि मधुसूदन स्वामी ने ज्यों ही मेरा नाम स्मरण किया, तो मैं खिंचकर आने लगा। लेकिन उनके करीब जाने से मेरे को आग जैसी तपन लगी। उनका तेज मेरे से सहा नहीं गया। उन्होंने सकारात्मक शक्तिओं का अनुष्ठान किया है तो उनका आध्यात्मिक ओज इतना बढ़ गया है कि हमारे जैसे तुच्छ शक्तियां उनके करीब खड़े नहीं रह सकते। अब तुम मेरी ओर से उनको हाथ जोड़कर प्रार्थना करना कि वे फिर से अनुष्ठान करें तो सब प्रतिबन्ध दूर हो जायेंगे और भगवान श्रीकृष्ण मिलेंगे। बाद में जो गीता की टीका लिखेंगे। वह बहुत प्रसिद्ध होगी।"

श्री मधुसूदन जी ने फिर से अनुष्ठान किया, भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन हुए और बाद में भगवदगीता पर टीका लिखी। आज भी वह 'श्री मधुसूदनी टीका' के नाम से पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।

जिन्हें सद्द भाग्य से गुरुमंत्र मिला है और वहं पूर्ण निष्ठा व विश्वास से विधि-विधान से उसका जप करता है। उसे सभी प्रकार कि सिद्धिया स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। उसे नकारात्मक शक्तियां व प्रभावीजीव कष्ट नहीं पहूंचा सकते।

***

गुरुमंत्र के प्रभाव से रक्षा

संकलन गुरुत्व कार्यालय

'स्कन्द पुराण' के ब्रह्मोत्तर खण्ड में उल्लेख हैः काशी नरेश की कन्या कलावती के साथ मथुरा के दाशार्ह नामक राजा का विवाह हुआ।

विवाह के बाद राजा ने अपनी पत्नी को बुलाया और संसार-व्यवहार स्थापीत करने की बात कहीं परंतु पत्नी ने इन्कार कर दिया। तब राजा ने जबर्दस्ती करने की बात कही।

पत्नी ने कहाः "स्त्री के साथ संसार-व्यवहार करना हो तो बल-प्रयोग नहीं, प्यार स्नेह-प्रयोग करना चाहिए।

पत्नी ने कहाः नाथ ! मैं आपकी पत्नी हूँ, फिर भी आप मेरे साथ बल-प्रयोग करके संसार-व्यवहार न करें।"

आखिर वह राजा था। पत्नी की बात सुनी-अनसुनी करके पत्नी के नजदीक गया। ज्यों ही उसने पत्नी का स्पर्श किया त्यों ही उसके शरीर में विद्युत जैसा करंट लगा।

उसका स्पर्श करते ही राजा का अंग-अंग जलने लगा। वह दूर हटा और बोलाः "क्या बात है? तुम इतनी सुन्दर और कोमल हो फिर भी तुम्हारे शरीर के स्पर्श से मुझे जलन होने लगी?"

पत्नीः "नाथ ! मैंने बाल्यकाल में दुर्वासा ऋषि से गुरुमंत्र लिया था। वह जपने से मेरी सात्त्विक ऊर्जा का विकास हुआ है।

जैसे, रात और दोपहर एक साथ नहीं रहते उसी तरह आपने शराब पीने वाली वेश्याओं के साथ और कुलटाओं के साथ जो संसार-भोग भोगा हैं, उससे आपके पाप के कण आपके शरीर में, मन में, बुद्धि में अधिक है और मैंने जो मंत्रजप किया है उसके कारण मेरे शरीर में ओज, तेज, आध्यात्मिक कण अधिक हैं।

इसलिए मैं आपके नजदीक नहीं आती थी बल्कि आपसे थोड़ी दूर रहकर आपसे प्रार्थना करती थी। आप बुद्धिमान हैं बलवान हैं, यशस्वी हैं धर्म की बात भी आपने सुन रखी है। फिर भी आपने शराब पीनेवाली वेश्याओं के साथ और कुलटाओं के साथ भोग भोगे हैं।"

राजाः "तुम्हें इस बात का पता कैसे चल गया?"

पत्नीः "नाथ ! हृदय शुद्ध होता है तो यह ख्याल स्वतः आ जाता है।"

राजा प्रभावित हुआ और रानी से बोलाः "तुम मुझे भी भगवान शिव का वह मंत्र दे दो।"

रानीः"आप मेरे पति हैं। मैं आपकी गुरु नहीं बन सकती। हम दोनों गर्गाचार्य महाराज के पास चलते हैं।"

दोनों गर्गाचार्यजी के पास गये और उनसे प्रार्थना की। उन्होंने स्नानादि से पवित्र हो, यमुना तट पर अपने शिवस्वरूप के ध्यान में बैठकर राजा-रानी को द्रष्टीपात से पावन किया। फिर शिवमंत्र देकर अपनी शांभवी दीक्षा से राजा पर शक्तिपात किया। विद्वानो के मतानुशार कथा मे उल्लेख हैं कि देखते-ही-देखते सैकडो तुच्छ परमाणु राजा के शरीर से निकल-निकलकर पलायन कर गये।

गुरुमंत्र के जप से अलौकिक सिद्धिया प्राप्त होती हैं

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

कौंडिण्यपुर में शशांगर नाम के राजा राज्य करते थे। वे प्रजापालक थे। उनकी रानी मंदाकिनी भी पतिव्रता, धर्मपरायण थी। लेकिन संतान न होने के कारण दोनों दुःखी रहते थे।

उन्होंने रामेश्वर जाकर संतान प्राप्ति के लिए शिवजी की पूजा, तपस्या का विचार किया। पत्नी को लेकर राजा रामेश्वर की ओर चल पड़े। मार्ग में कृष्णा-तुंगभद्रा नदी के संगम-स्थल पर दोनों ने स्नान किया और वहीं निवास करते हुए वे शिवजी की आराधना करने लगे।

एक दिन स्नान करके दोनों लौट रहे थे कि राजा को मित्रि सरोवर में एक शिवलिंग दिखाई पड़ा। उन्होंने वह शिवलिंग उठा लिया और अत्यंत श्रद्धा से उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की। राजा रानी पूर्ण निष्ठा से शिवजी की पूजा-अर्चना करने लगे। संगम में स्नान करके शिवलिंग की पूजा करना उनका नित्यक्रम बन गया।

एक दिन कृष्णा नदी में स्नान करके राजा सूर्यदेवता को अर्घ्य देने के लिए अंजलि में जल ले रहे थे, तभी उन्हें एक शिशु दिखाई दिया। उन्हें आसपास दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आया। तब राजा ने सोचा कि 'जरूर भगवान शिवजी की कृपा से ही मुझे इस शिशु की प्राप्ति हुई है !' वे अत्यंत हर्षित हुए और अपनी पत्नी के पास जाकर उसको सब वृत्तांत सुनाया।

वह बालक गोद में रखते ही मंदाकिनी के आचल से दूध की धारा बहने लगी। रानी मंदाकिनी बालक को स्तनपान कराने लगी। धीरे-धीरे बालक बड़ा होने लगा। वह बालक कृष्णा नदी के संगम-स्थान पर प्राप्त होने के कारण उसका नाम '**कृष्णागर**' रखा गया।

राजा-रानी कृष्णागर को लेकर अपनी राजधानी कौंडिण्युपर में वापस लौट आये। ऐसे अलौकिक बालक को देखने के लिए सभी राज्यवासी राजभवन में आये। बड़े उत्साह के साथ समारोहपूर्वक उत्सव मनाया गया।

जब कृष्णागर 17 वर्ष का युवक हुआ तब राजा ने अपने मंत्रियों को कृष्णागर के लिए उत्तम कन्या ढूँढने की आज्ञा दी। परंतु कृष्णागर के योग्य कन्या उन्हें कहीं भी न मिली। उसके बाद कुछ ही दिनों में रानी मंदाकिनी की मृत्यु हो गयी। अपनी प्रिय रानी के मर जाने का राजा को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने वर्षभर श्राद्धादि सभी कार्य पूरे किये और अपनी मदन-पीड़ा के कारण चित्रकूट के राजा भुजध्वज की नवयौवना कन्या भुजावंती के साथ दूसरा विवाह किया। उस समय भुजावंती की उम्र 13 वर्ष की थी और राजा शशांगर का पुत्र कृष्णागर की उम्र 17 वर्ष की थी।

एक दिन राजा शिकार खेलने राजधानी से बाहर गये हुए थे। कृष्णागर महल के प्रांगण में खड़े होकर खेल रहा था। उसका शरीर अत्यंत सुंदर व आकर्षक होने के कारण भुजावंती उस पर आसक्त हो गयी। उसने एक दासी के द्वारा कृष्णागर को अपने पास बुलवाया और उसका हाथ पकड़कर कामेच्छा पूरण करने की माँग की।

तब कृष्णागर न कहाः "हे माते ! मैं तो आपका पुत्र हूँ और आप मेरी माता हैं। अतः आपको यह शोभा नहीं देता। आप माता होकर भी पुत्र से ऐसा पापकर्म करवाना चाहती हो !'

ऐसा कहकर गुस्से से कृष्णागर वहाँ से चला गया। कृष्णागर के वहां से चले जाने के बाद में भुजावंती को अपने पापकर्म पर पश्चाताप होने लगा। राजा को इस बात का पता चल जायेगा, इस भय के कारण वह आत्महत्या करने के लिए प्रेरित हुई। परंतु उसकी दासी ने उसे समझायाः 'राजा के आने के बाद तुम ही कृष्णागर के खिलाफ बोलना शुरु कर दो कि उसने मेरा सतीत्व लूटने की कोशिश की। यहाँ मेरे सतीत्व की रक्षा नहीं हो सकती। कृष्णागर बुरी नियत का है, अब आपको जो करना है सो करो, मेरी तो जीने की इच्छा नहीं।'

राजा के आने के बाद रानी ने सब वृत्तान्त इसी प्रकार राजा को बताया जिस प्रकार से दासी ने बताया। राजा ने कृष्णागर की ऐसी हरकत सुनकर क्रोध के आवेश में अपने मंत्रियों को उसके हाथ-पैर तोड़ने की आज्ञा दे दी।

आज्ञानुसार वे कृष्णागर को ले गये। परंतु राजसेवकों को लगा कि राजा ने आवेश में आकर आज्ञा दी है। कहीं अनर्थ न हो जाय ! इसलिए कुछ सेवक पुनः राजा के पास आये। राजा का मन परिवर्तन करने की अभिलाषा से वापस आये हुए कुछ राजसेवक और अन्य नगर निवासी अपनी आज्ञा वापस लेने के राजा से अनुनय-विनय करने लगे। परंतु राजा का आवेश शांत नहीं हुआ और फिर से वही आज्ञा दी।

फिर राजसेवक कृष्णागर को चौराहे पर ले आये। सोने के चौरंग (चौकी) पर बिठाया और उसके हाथ पैर बाँध दिये। यह दृश्य देखकर नगरवासियों की आँखों मे दयावश आँसू बह रहे थे। आखिर सेवकों ने आज्ञाधीन होकर कृष्णागर के हाथ-पैर तोड़ दिये। कृष्णागर वहीं चौराहे पर पड़ा रहा।

कुछ समय बाद दैवयोग से नाथ पंथ के योगी मछेंद्रनाथ अपने शिष्य गोरखनाथ के साथ उसी राज्य में आये। वहाँ लोगों के द्वारा कृष्णागर के विषय में चर्चा सुनी। परंतु ध्यान करके उन्होंने वास्तविक रहस्य का पता लगाया। दोनों ने कृष्णागर को चौरंग पर देखा, इसलिए उसका नाम 'चौरंगीनाथ' रख दिया। फिर राजा से स्वीकृति लेकर चौरंगीनाथ को गोद में उठा लिया और बदरिकाश्रम गये। मछेन्द्रनाथ ने गोरखनाथ से कहाः "तुम चौरंगी को नाथ पंथ की दीक्षा दो और सर्व विद्याओं में इसे पारंगत करके इसके द्वारा राजा को योग सामर्थ्य दिखाकर रानी को दंड दिलवाओ।"

गोरखनाथ ने कहाः "पहले मैं चौरंगी का तप सामर्थ्य देखूँगा।" गोरखनाथ के इस विचार को मछेंद्रनाथ ने स्वीकृति दी।

चौरंगीनाथ को पर्वत की गुफा में बिठाकर गोरखनाथ ने कहाः 'तुम्हारे मस्तक के ऊपर जो शिला है, उस पर दृष्टि टिकाये रखना और मैं जो मंत्र देता हूँ उसी का जप चालू रखना। अगर दृष्टि वहाँ से हटी तो शिला तुम पर गिर जायेगी और तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। इसलिए शिला पर ही दृष्टि टिका कर रखना।' ऐसा कहकर गोरखनाथ ने उसे मंत्रोपदेश दिया और गुफा का द्वार इस तरह से बंद किया कि अंदर कोई वन्य पशु प्रवेश न कर सके। फिर अपने योगबल से चामुण्डा देवी को प्रकट करके आज्ञा दी कि इसके लिए रोज फल लाकर रखना ताकि यह उन्हें खाकर जीवित रहे।

उसके बाद दोनों तीर्थयात्रा के लिए चले गये। चौरंगीनाथ शिला गिरने के भय से उसी पर दृष्टि जमाये बैठे थे। फल की ओर तो कभी देखा ही नहीं वायु भक्षण करके बैठे रहते। इस प्रकार की योगसाधना से उनका शरीर कृश हो गया।

मछेंद्रनाथ और गोरखनाथ तीर्थाटन करते हुए जब प्रयाग पहुँचे तो वहाँ उन्हें एक शिवमंदिर के पास राजा त्रिविक्रम का अंतिम संस्कार होते हुए दिखाई पड़ा। नगरवासियों को अत्यंत दुःखी देखकर गोरखनाथ को अत्यंत दयाभाव उमड़ आया और उन्होंने मछेन्द्रनाथ से प्रार्थना की कि राजा को पुनः जीवित करें। परंतु राजा ब्रह्मस्वरूप में लीन हुए थे इसलिए मछेन्द्रनाथ ने राजा को जीवित करने की स्वीकृति नहीं दी। परंतु गोरखनाथ ने कहाः "मैं राजा को जीवित करके प्रजा को सुखी

करूँगा। अगर मैं ऐसा नहीं कर पाया तो स्वयं देह त्याग दूँगा।"

प्रथम गोरखनाथ ने ध्यान के द्वारा राजा का जीवनकाल देखा तो सचमुच वह ब्रह्म में लीन हो चुका था। फिर गुरुदेव को दिए हुए वचन की पूर्ति के लिए गोरखनाथ प्राणत्याग करने के लिए तैयार हुए। तब गुरु मछेंद्रनाथ ने कहाः "राजा की आत्मा ब्रह्म में लीन हुई है तो मैं इसके शरीर में प्रवेश करके 12 वर्ष तक रहूँगा। बाद में मैं लोक कल्याण के लिए मैं मेरे शरीर में पुनः प्रवेश करूँगा। तब तक तू मेरा यह शरीर सँभाल कर रखना।"

मछेंद्रनाथ ने तुरंत देहत्याग करके राजा के मृत शरीर में प्रवेश किया। राजा उठकर बैठ गया। यह आश्चर्य देखकर सभी जनता हर्षित हुई। फिर प्रजा ने अग्नि को शांत करने के लिए राजा का सोने का पुतला बनाकर अंत्यसंस्कार-विधि की।

गोरखनाथ की भेंट शिवमंदिर की पुजारिन से हुई। उन्होंने उसे सब वृत्तान्त सुनाया और गुरुदेव का शरीर 12 वर्ष तक सुरक्षित रखने का योग्य स्थान पूछा। तब पुजारिन ने शिवमंदिर की गुफा दिखायी। गोरखनाथ ने गुरुवर के शरीर को गुफा में रखा। फिर वे राजा से आज्ञा लेकर आगे तीर्थयात्रा के लिए निकल पड़े।

12 वर्ष बाद गोरखनाथ पुनः बदरिकाश्रम पहुँचे। वहाँ चौरंगीनाथ की गुफा में प्रवेश किया। देखा कि एकाग्रता, गुरुमंत्र का जप तथा तपस्या के प्रभाव से चौरंगीनाथ के कटे हुए हाथ-पैर पुनः निकल आये हैं।

यह देखकर गोरखनाथ अत्यंत प्रसन्न हुए। फिर चौरंगीनाथ को सभी विद्याएँ सिखाकर तीर्थयात्रा करने साथ में ले गये। चलते-चलते वे कौंडिण्यपुर पहुँचे। वहाँ राजा शशांगर के बाग में रुक गये। गोरखनाथ ने चौरंगीनाथ तो आज्ञा दी कि राजा के सामने अपनी शक्ति प्रदर्शित करे।

चौरंगीनाथ ने वातास्त्र मंत्र से अभिमंत्रित भस्म का प्रयोग करके राजा के बाग में जोरों की आँधी चला दी। वृक्षादि टूट-टूटकर गिरने लगे, माली लोग ऊपर उठकर धरती पर गिरने लगे। इस आँधी का प्रभाव केवल बाग में ही दिखायी दे रहा था इसलिए लोगों ने राजा के पास समाचार पहुँचाया। राजा हाथी-घोड़े, लशकर आदि के साथ बाग में पहुँचे। चौरंगीनाथ ने वातास्त्र के द्वारा राजा का सम्पूर्ण लशकर आदि आकाश में उठाकर फिर नीचे पटकना शुरु किया। कुछ नगरवासियों ने चौरंगीनाथ को अनुनय-विनय किया तब उसने पर्वतास्त्र का प्रयोग करके राजा को उसके लशकर सहित पर्वत पर पहुँचा दिया और पर्वत को आकाश में उठाकर धरती पर पटक दिया।

फिर गोरखनाथ ने चौरंगीनाथ को आज्ञा दी कि वह अपने पिता का चरणस्पर्श करे। चौरंगीनाथ राजा का चरणस्पर्श करने लगे किंतु राजा ने उन्हें पहचाना नहीं। तब गोरखनाथ ने बतायाः "तुमने जिसके हाथ-पैर कटवाकर चौराहे पर डलवा दिया था, यह वही तुम्हारा पुत्र कृष्णागर अब योगी चौरंगीनाथ बन गया है।"

गोरखनाथ ने रानी भुजावंती का संपूर्ण वृत्तान्त राजा को सुनाया। राजा को अपने कृत्य पर पश्चाताप हुआ। उन्होंने रानी को राज्य से बाहर निकाल दिया। गोरखनाथ ने राजा से कहाः "अब तुम तीसरा विवाह करो। तीसरी रानी के द्वारा तुम्हें एक अत्यंत गुणवान, बुद्धिशाली और दीर्घजीवी पुत्र की प्राप्ति होगी। वही राज्य का उत्तराधिकारी बनेगा और तुम्हारा नाम रोशन करेगा।" राजा ने तीसरा विवाह किया। उससे जो पुत्र प्राप्त हुआ, समय पाकर उस पर राज्य का भार सौंपकर राजा वन में चले गये और ईश्वरप्राप्ति के साधन में लग गये। गोरखनाथ के साथ तीर्थों की यात्रा करके चौरंगीनाथ बदरिकाश्रम में रहने लगे।

इस प्रकार गुरुकृपा से कृष्णागर को गुरुमंत्र प्राप्त हुवा गुरुमंत्र का निष्ठा से जप कर के उन्हें सिद्धिया प्राप्त हुई व अपना खोया हुवा मान-समान पूनः प्राप्त हुवा।

आरुणि की गुरुभक्ति

संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक कथा के अनुशार महर्षि आयोदधौम्य के आश्रम में बहुत से शिष्य थे। सभी शिष्य गुरुदेव महर्षि आयोदधौम्य की बड़े प्रेम से सेवा करते थे। एक दिन संध्या के समय वर्षा होने लगी। मौसम को देखते हुएं अंदाजा लगना मुश्किल था की अगले कुछ समय तक वर्षा होगी या नहीं, इसका कुछ ठीक-ठिकाना नहीं था। वर्षा बहुत जोरसे हो रही थी। महर्षिने सोचा कि कहीं अपने धान के खेत की मेड़ अधिक पानी भरने से टूट जायगी तो खेतमें से सब पानी बह जायगा। पीछे फिर वर्षा न हो तो धान बिना पानी के सूख जायेगा। हर्षिने आरुणि से कहा—'बेटा आरुणि !तुम खेत पर जाकर देखो, की कही मेड़ टूटनेसे खेत का पानी बह न जाय।'

आरुणि अपने गुरुदेव की आज्ञा पाकर वर्षा में भीगते हुए खेतपर चले गये। वहाँ जाकर उन्हेंने देखा कि खेतकी मेड़ एक स्थान पर टूट गयी है और वहाँ से बड़े जोरसे पानी बाहर निकल रहा है। आरुणि ने टूटे हुए स्थान पर मिट्टी रखकर मेड़ बाँधना चाहा। पानी वेग से निकल रहा था और वर्षा से मिट्टी भी गीली हो गयी थी, इस लिये आरुणि जितनी मिट्टी मेड़ बाँधने के लिये रखते थे, उसे पानी बहा ले जाता था। बहुत देर परिश्रम करके भी जब आरुणि मेड़ न बाँध सके तो वे उस टूटी मेड़के पास स्वयं लेट गये। उनके शरीरसे पानीका बहाव रुक गया।

उस दिन पूरी रात आरुणि पानीभरे खेतमें मेड़से सटे पड़े रहे। सर्दी से उनका सारा शरीर भी अकड़ गया, लेकिन गुरुदेव के खेतका पानी बहने न पाये, इस विचार से वे न तो तनिक भी हिले और न उन्होंने करवट बदली। इस कारण आरुणि के शरीरमें भयंकर पीड़ा होते रहने पर भी वे चुपचाप पड़े रहे। सबेरा होने पर पूजा और हवन करके सब शिष्य गुरुदेव को प्रणाम करते थे। महर्षि आयोदधौम्यने देखा कि आज सबेरे आरुणि प्रणाम करने नहीं आया।

महर्षिने दूसरे विद्यार्थियोंसे पूछा:'आरुणि कहाँ है?'

विद्यार्थियों ने कहा: 'कल शामको आपने आरुणि को खेतकी मेड़ बाँधनेको भेजा था, तबसे वह लौटकर नहीं आया।'

महर्षि उसी समय दूसरे विद्यर्थियों को साथ लेकर आरुणि को ढूँढ़ने निकल पड़े। महर्षि ने खेत पर जाकर आरुणि को पुकारा। आरुणि से ठण्ड के मारे बोला तक नहीं जाता था। उन्होंने किसी प्रकार अपने गुरुदेवकी को उत्तर दिया। महर्षि ने वहाँ पहुँच कर अपने आज्ञाकारी शिष्यको उठाकर हृदय से लगा लिया, आशीर्वाद दिया:'पुत्र आरुणि ! तुम्हें सब विद्याएँ अपने-आप ही आ जायँ।' अपने गुरुदेव के आशीर्वाद से आरुणि बड़े भारी विद्वान हो गए।

सद् गुरु के त्याग से दरिद्रता आती हैं

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शिवाजी के गुरुदेव श्री समर्थ रामदास के इर्द-गिर्द राजसी और भोजन-भगत बहुत हो गये थे। तुकारामजी की भक्त सादगी युक्त रहते थे।

तुकारामजी कहीं भी भजन-कीर्तन करने जाते तो कीर्तन करानेवाले गृहस्थ का सीरा-पूड़ी, आदि भोजन ग्रहण नहीं करते थे। तुकारामजी सादी-सूदी रोटी, तंदूर की भाजी और छाछ लेते। घोड़ागाडी, ताँगा आदि का उपयोग नहीं करते और पैदल चलकर जाते। उनका जीवन एक तपस्वी का जीवन था।

तुकारामजी के कई सारे शिष्यो में से एक शिष्य न्व देखा कि समर्थ रामदास के साथ में जो लोग जाते हैं वे अच्छे कपड़े पहनते हैं, सीरा-पूड़ी आदि उत्तम प्रखार के व्यंजन खाते हैं। कुछ भी हो, समर्थ रामदास शिवाजी महाराज के गुरु हैं, अर्थात राजगुरु हैं। उनके यहां रहने वाले शिष्यों को खाने-पीने का, अमन-चमन आदि का, खूब मौज है। उनके शिष्यों को समाज में मान-सम्मान भी मिलता है। हमारे गुरु तुकारामजी महाराज के पास कुछ नहीं है। मखमल के गद्दी-तकिये नहीं, खाने-पहनने की ठीक व्यवस्था नहीं। यहाँ रहकर क्या करें ?

शिष्य के चितमें इस प्रकार का चिंतन-मनन करते-करते समर्थ रामदास की मण्डली में जाने का आकर्षण पैदा हो गया हुआ।

शिष्य पहुँचा समर्थजी के पास और हाथ जोड़कर प्रार्थना कीः "महाराज ! आप मुझे अपना शिष्य बनायें। आपकी मण्डली में रहूँगा, भजन-कीर्तन आदि करूँगा। आपकी सेवा में रहूँगा।"

समर्थ जी ने पूछाः "तू पहले कहाँ रहता था?"

शिष्य बोला: "तुकारामजी महाराज के वहाँ।" ।

"तुकारामजी महाराज से तूने गुरुमंत्र लिया है तो मैं तुझे कैसे मंत्र दूँ?

अगर मेरा शिष्य बनना है, मेरा मंत्र लेना है तो तुकारामजी को मंत्र और माला वापस दे आ। पहले गुरुमंत्र का त्याग कर तो मैं तेरा गुरु बनूँ।"

समर्थजी ने उसको सत्य समझाने के लिए वापस भेज दिया। शिष्य तो खुश हो गया कि मैं अभी तुकारामजी का त्याग करके आता हूँ।

तुकाराम जैसे सदगुरु का त्याग करने की कुबुद्धि शिष्य को आयी ?

समर्थजी ने उसको सबक सिखाने का निश्चय किया।

चेला खुश होता हुआ तुकारामजी के पास पहुँचाः

"महाराज ! मुझे आपका शिष्य अब नहीं रहना है।"

तुकारामजी ने कहाः "मैंने तुझे शिष्य बनाने के लिए खत लिखकर बुलाया ही कहाँ था ? तू ही अपने आप आकर शिष्य बना था, भाई ! कण्ठी मैंने कहाँ पहनाई है ? तूने ही अपने हाथ से बाँधी है। मेरे गुरुदेव ने जो मंत्र मुझे दिया था वह तुझे बता दिया। उसमें मेरा कुछ नहीं है।"
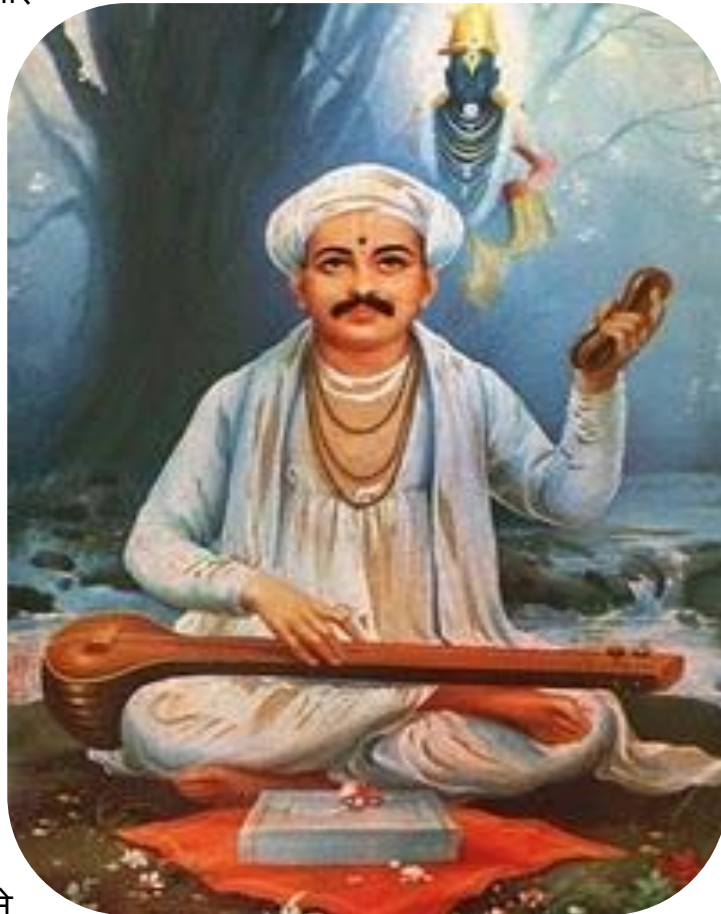
शिष्य: "फिर भी महाराज ! मुझे यह कण्ठी नहीं चाहिए।"

तुकारामजी: "नहीं चाहिए तो तोड़ दो।"

चेले ने खींचकर कण्ठी तोड़ दी। "अब आपका मंत्र ?"

तुकारामजी ने कहा:"वह तो मेरे गुरुदेव आपाजी चैतन्य का प्रसाद है। उसमें मेरा कुछ नहीं है।"

शिष्य बोला: "महाराज ! मुझे वह नहीं चाहिए। मुझे तो दूसरा गुरु करना है।"

तुकारामजी बोले: "अच्छा, तो मंत्र त्याग दे।"

"कैसे त्यागूँ ?"

"मंत्र बोलकर पत्थर पर थूक दे। मंत्र का त्याग हो जायगा।"

उस अभागे शिष्य ने गुरुमंत्र का त्याग करने के लिए मंत्र बोलकर पत्थर पर थूक दिया।

तब अनोखी घटना घटी। पत्थर पर थूकते ही वह मंत्र उस पत्थर पर अंकित हो गया।

शिष्य तुकारामजी के यहां से वह गया समर्थ जी के पास। बोलाः "महाराज ! मैं मंत्र और कण्ठी वापस दे आया हूँ। अब आप मुझे अपना शिष्य बनाओ।"

समर्थ जी ने पूछा: "मंत्र का त्याग किया उस समय क्या हुआ था ?"

शिष्य बोला: "वह मंत्र पत्थर पर अंकित हो गया था।"

समर्थजी बोले: "ऐसे गुरुदेव का त्याग करके आया जिनका मंत्र पत्थर पर अंकित हो जाता है ? पत्थर जैसे पत्थर पर मंत्र का प्रभाव पड़ा लेकिन तुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो कमबख्त तू मेरे पास क्या लेने आया है ? तू तो पत्थर से भी गया बीता है तो इधर तू क्या करेगा ? खाने के लिए आया है ?"

शिष्य बोला:"महाराज ! वहाँ गुरु का त्याग किया और यहाँ आपने मुझे लटकता रखा ?"

समर्थजी बोले: "तेरे जैसे लटकते ही रहते हैं। अब जा, घंटी बजाता रेह। अगले जन्म में तू बैल बन जाना, गधा बन जाना, घोड़ा बन जाना।"

विद्वानो के मतानुशार शास्त्र कहते हैं गुरु का दिया हुआ मंत्र त्यागने से आदमी दरिद्र हो जाता है।

समर्थजी ने सुनादियाः "तेरे जैसे गुरुद्रोही को मैं शिष्य बनाऊँगा ? जा भाई, जा। अपना रास्ता नाप।"

वह तो रामदासजी के समक्ष कान पकड़कर उठ-बैठ करने लगा, नाक रगड़ने लगा। रोते-रोते प्रार्थना करने लगा। तब करुणामूर्ति स्वामी रामदास ने कहाः "तुकारामजी उदार आत्मा हैं। वहाँ जा। मेरी ओर से प्रार्थना करना। कहना कि समर्थ ने प्रणाम कहे हैं। तू अपनी गलती की क्षमा माँगना।"

शिष्य अपने गुरु के पास वापस लौटा। तुकारामजी समझ गये कि समर्थ का भेजा हुआ है तो मैं इन्कार कैसे करूँ ?

बोलेः "अच्छा भाई ! तू आया था, कण्ठी लिया था। हमने दी, तूने छोड़ी। फिर लेने आया है तो फिर दे देते हैं। समर्थ ने भेजा है तो चलो ठीक है। समर्थ की जय हो !"

स्वयं भगवान शंकरजी ने कहां हैं:

गुरुत्यागत् भवेन्मृत्युः मंत्रत्यागात् दरिद्रता।
गुरुमंत्रपरित्यागी रौरवं नरकं व्रजेत्।। (गुरुगीता)

विद्वानो के अनुशार गुरुभक्तियोग के अनुशार एक बार गुरु कर लेने के बाद गुरु का त्याग नहीं करना चाहिए। गुरु का त्याग करने से तो यह अच्छा है कि शिष्य पहले से ही गुरु न करे और संसार में सड़ता रहे, भटकता रहे। एक बार गुरु करके उनका त्याग कभी नहीं करना चाहिए।

मंत्रजाप से शास्त्रज्ञान

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

रामवल्लभशरणजी किसी संत के दर्शनगये।

संत ने पूछाः तूम्हें "क्या चाहिए?"

रामवल्लभशरणः "महाराज ! भगवान इश्वर की भक्ति और शास्त्रों का ज्ञान चाहिए।"

रामवल्लभशरणजी ने ईमानदारी से माँगा था।

रामवल्लभशरजी का सच्चाई का जीवन था। कम बोलते थे। उनके भितर भगवान के लिए तड़प थी।

संत ने पूछाः "ठीक है। बस न?"

रामवल्लभशरणः "जी, महाराज।"

संत ने हनुमानजी का मंत्र दिया।

रामवल्लभशरजी एकाग्रचित्त होकर पूर्ण निष्ठा व तत्परता से मंत्र जप कर रहे थे। मंत्र जप करते समय हनुमानजी प्रकट हो गये।

हनुमान जी ने पूछाः "क्या चाहिए?"

"आपके दर्शन तो हो गये। शास्त्रों का ज्ञान चाहिए।"

हनुमानजीः "बस, इतनी सी बात? जाओ, तीन दिन के अंदर तूम जितने भी ग्रन्थ देखोगे उन सबका अर्थसहित अभिप्राय तुम्हारे हृदय में प्रकट हो जायेगा।"

रामवल्लभशरजी काशी चले गये और काशी के विश्वविद्यालय आदि के ग्रंथ देखे। वे बड़े भारी विद्वान हो गये। जिन्होंने रामवल्लभशरजी के साथ वार्तालाप किया और शास्त्र-विषयक प्रश्नोत्तर किये हैं वे ही लोग उन्हें भलीप्रकार से जानते हैं । दुनिया के अच्छे-अच्छे विद्वान उनका लोहा मानते हैं। रामवल्लभशरजी केवल मंत्रजाप करते-करते अनुष्ठान में सफल हुए। हनुमानजी के साक्षात दर्शन हो गये और तीन दिन के अंदर जितने शास्त्र देखे उन शास्त्रों का अभिप्राय उनके हृदय में प्रकट हो गया।

एकलव्य की गुरुभक्ति

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक कथा के अनुशार हिरण्यधनु का एकलव्य नाम का एक लड़का था। हिरण्यधनु जाति से भील थे।

उस काल में धनुर्विद्या में द्रोणाचार्यजी को महारथ हासिल थी इस लिये उनका नाम व कीर्ति चारो और फेली हुई थी। द्रोणाचार्य जी कौरवों एवं पांडवों के गुरु थे इस लिये उन्हें धनुर्विद्या शिखाते थे। एकलव्य धनुर्विद्या सीखने के उद्देश्य से गुरु द्रोणाचार्य के पास गया लेकिन द्रोणाचार्य ने कहा कि वे राजकुमारों के अलावा और किसी को धनुर्विद्या नहीं सिखा सकते।

द्रोणाचार्य जी के मना करने के बावजुद एकलव्य ने मन-ही-मन द्रोणाचार्य को अपना गुरु मान लिया था। इस के लिए एकलव्य की गुरु द्रोणाचार्य जी के प्रति श्रद्धा कम नहीं हुई।

एकलव्य वहाँ से वापस घर न जाकर सीधे जंगल में चला गया। वहाँ जाकर उसने द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनायी। एकलव्य हररोज गुरुमूर्ति का पूजन करता, फिर उसकी तरफ एकटक देखते-देखते ध्यान करता और उससे प्रेरणा लेकर धनुर्विद्या का अभ्यास करता हुवा धनुर्विद्या सीखने लगा। एकाग्रता के कारण एकलव्य को प्रेरणा मिलने लगी। इस प्रकार अभ्यास करते-करते वह धनुर्विद्या में बहुत आगे बढ़ गया।

एक बार द्रोणाचार्य धनुर्विद्या के अभ्यास के लिए पांडवों और कौरवों को जंगल में ले गये। उनके साथ एक कुत्ता भी था, वह दौड़ते-दौड़ते आगे निकल गया। जहाँ एकलव्य धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा था, वहाँ वह कुत्ता रुक गया। एकलव्य के विचित्र वेष को देखकर कुत्ता भौंकने लगा।

एकलव्य ने कुत्ते को चोट न लगे और उसका भौंकना भी बंद हो जाए इस प्रकार उसके मुँह में सात बाण भर दिये।

जब कुत्ता इस दशा में द्रोणाचार्य के पास पहुँचा तो कुत्ते की यह हालत देखकर अर्जुन को विचार आयाः 'कुत्ते के मुँह में चोट न लगे इस प्रकार बाण मारने की विद्या तो मैं भी नहीं जानता!'

अर्जुन ने गुरु द्रोणाचार्य से कहाः "गुरूदेव! आपने तो कहा था कि तेरी बराबरी कर सके ऐसा कोई भी धनुर्धारी नहीं होगा परंतु ऐसी अद्‌भुत और अनोखी विद्या तो मैं भी नहीं जानता।"

द्रोणाचार्य भी विचार में पड़ गये। इस जंगल में ऐसा कुशल धनुर्धर कौन होगा? आगे जाकर देखा तो उन्हे हिरण्यधनु का पुत्र एकलव्य दिखायी पड़ा।

द्रोणाचार्य ने पूछाः "बेटा! तुमने यह विद्या कहाँ से सीखी?"

एकलव्य ने कहाः "गुरुदेव! आपकी कृपा से ही सीखी है।"

द्रोणाचार्य तो अर्जुन को वचन दे चुके थे कि उसके जैसा कोई दूसरा धनुर्धर नहीं होगा किंतु एकलव्य तो अर्जुन से भी आगे बढ़ गया।

द्रोणाचार्य ने एकलव्य से कहाः "मेरी मूर्ति को सामने रखकर तुमने धनुर्विद्या तो सीखी परंतु गुरुदक्षिणा?"

एकलव्य ने कहाः "आप जो माँगें।" द्रोणाचार्य ने कहाः "तुम्हारे दाहिने हाथ का अँगूठा।" एकलव्य ने एक पल भी विचार किये बिना अपने दाहिने हाथ का अँगूठा काट कर गुरुदेव के चरणों में अर्पित कर दिया।

द्रोणाचार्य ने कहाः "पुत्र! अर्जुन भले ही धनुर्विद्या में सबसे आगे रहे क्योंकि मैं उसको वचन दे चुका हूँ परन्तु जब तक सूर्य, चाँद और नक्षत्र रहेंगे, तुम्हारा गुणगान होता रहेगा।" एकलव्य की गुरुभक्ति उसे धनुर्विद्या में सफलता के साथ ही द्रोणाचार्य जैसे विद्वान को गुरुदक्षिणा में अपना अंगूठा देकर उनके हृदय में अपने लिए आदर प्रकट कर दिया। विद्वानो के मातानुशार गुरुभक्ति, श्रद्धा और लगनपूर्वक कोई भी कार्य करने से अवश्य सफलता प्राप्त होती है।

***

श्रीकृष्ण की गुरूसेवा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

सहस्त्र मुखो से भी गुरु की महिमा बखाण ना संभव नहीं हैं। क्योकी गुरु की महिमा अपरंपार हैं। इसी लिये तो स्वयं भगवान को भी जगत के कल्याणा हेतु जब मानवरूप में अवतरित होना पडता हैं तो ज्ञान प्राप्ति हेतु गुरू की आवश्यक्ता होती हैं।

पौराणिक शास्त्रो के अनुशार द्वापर युग में जब भगवान श्रीकृष्ण जब भूलोक पर अवतरित हुएं। कालांतर में कंस का विनाश होने के पश्चयात भगवान श्रीकृष्ण ने शास्त्रोक्त विधि-विधान से अपने हाथ में समिधा लेकर अपने गुरू श्रीसांदीपनी के आश्रम में गये। गुरुआश्रम में श्रीकृष्ण भक्तिपूर्वक गुरू की सेवा करने लगे। गुरू आश्रम में सेवा करते हुए भगवान श्रीकृष्ण ने वेद-वेदांग, उपनिषद, मीमांसादि षड्दर्शन, अस्त्र-शस्त्रविद्या, धर्मशास्त्र और राजनीति आदि अनेको विद्याएं प्राप्त की। श्रीकृष्ण नें अपनी प्रखर बुद्धि के कारण गुरू के एक बारबताने मात्र से ही सब सीख लिया। विष्णुपुराण के अनुशार श्रीकृष्ण ने 64 कलाएँ केवल64 दिन में ही सीख लीं। जब विद्या अभ्यास पूर्ण हुआ, तब श्रीकृष्ण ने गुरूदेव से दक्षिणा हेतु अनुरोध किया। श्रीकृष्णः "गुरूदेव ! आज्ञा कीजिए, मैं आपकी क्या सेवा करूँ ?" गुरूः "कोई आवश्यकता नहीं है।" श्रीकृष्णः "गुरूदेव आपको तो कुछ नहीं चाहिए, किंतु हमें दिये बिना चैन नहीं पड़ेगा। कुछ तो आज्ञा करें !" गुरूः "अच्छा जाओ, अपनी गुरू माँ से पूछ लो।" श्रीकृष्ण गुरूपत्नी के पास गये और बोलेः "माँ ! कोई सेवा हो तो बताइये।"

गुरूपत्नी जानती थीं कि श्रीकृष्ण कोई साधारण मानव नहीं स्वयं भगवान हैं, अतः वे बोलीः "मेरा पुत्र प्रभास क्षेत्र में मर गया है। उसे लाकर दे दो ताकि मैं उसे पयः पान करा सकूँ।"

श्रीकृष्ण बोले: "जो आज्ञा।"

श्रीकृष्ण रथ पर सवार होकर प्रभास क्षेत्र पहुँचे। समुद्र ने उन्हें देखकर उनकी यथायोग्य पूजा की। श्रीकृष्ण बोलेः "तुमने अपनी बड़ी बड़ी लहरों से हमारे गुरूपुत्र को हर लिया था। अब उसे शीघ्र लौटा दो।"

समुद्रः "मैंने बालक को नहीं हरा है, मेरे भीतर शंखरूप से पंचजन नामक एक बड़ा दैत्य रहता है, निसंदेह उसी ने आपके गुरूपुत्र का हरण किया है।"

श्रीकृष्ण ने उसीक्षण जल के भीतर घुसकर पंचजन नामक दैत्य को मार डाला, पर उसके पेट में गुरूपुत्र नहीं मिला। तब उसके शरीर का पांचजन्य शंख लेकर श्रीकृष्ण जल से बाहर निकल कर यमराज की यमनी पुरी में गये। वहाँ भगवान ने उस शंख को बजाया। कथा कहती हैं कि शंख ध्वनि को सुनकर नारकीय जीवों के पाप नष्ट हो गये और वे सभी जीव वैकुंठ पहुँच गये।

यमराज ने श्रीकृष्ण को देखकर उनकी बड़ी भक्ति के साथ पूजा की और प्रार्थना करते हुए कहाः "हे पुरूषोत्तम ! मैं आपकी क्या सेवा करूँ ?"

श्रीकृष्णः "तुम्हारे दूत कर्मबंधन के अनुसार हमारे गुरूपुत्र को यहाँ ले आये हैं। उसे मेरी आज्ञा से वापस दे दो।"

'जो आज्ञा' कहकर यमराज उस बालक को ले आये।

श्रीकृष्ण ने गुरूपुत्र को, जिस रुप में वह मरा था उसी रुपमें पूनः उसका शरीर बनाकर, रत्नादि के साथ गुरूचरणों में अर्पित कर दिया।

श्रीकृष्ण ने कहा:"गुरूदेव ! और जो कुछ भी आप चाहें, आज्ञा करें।"

गुरूदेवः "वत्स ! तुमने अपनी गुरूदक्षिणा भली प्रकार से संपन्न कर दी। तुम्हारे जैसे शिष्य से गुरू की कौन-सी कामना अवशेष रह सकती है?

वत्स ! अब तुम अपने घर जाओ।

गुरूदेव ने श्रीकृष्ण को आशिर्वाद देते हुवे कहां वत्स ! तुम्हारी कीर्ति श्रोताओं को पवित्र करने वाली होगी और तुम्हारे द्वारा **अर्जित ज्ञान व विद्या हर समय उपस्थित और नवीन बनी रहकर सभीलोक में तुम्हारे अभीष्ट फल को देने में समर्थ हों।"**

देवर्षि नारद ने एक मल्लाह को अपना गुरु बनाया

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

पौराणिक कथा के अनुशार एक बार देवर्षि नारद ने वैकुण्ठ में प्रवेश किया। प्रवेश करते ही भगवान विष्णु और लक्ष्मी जी "देवर्षि नारद" का खूब आदर-सत्कार करने लगे।

भगवान विष्णु ने नारदजी का हाथ पकड़ा और आराम करने को कहा। एक तरफ भगवान विष्णु नारद जी की सेवा कर रहे हैं और दूसरी तरफ लक्ष्मी जी पंखा हाँक रही हैं।

नारद जी कहते हैं- "भगवान ! अब छोड़ो। यह लीला किस बात की है ?

नाथ ! यह क्या राज समझाने की युक्ति है ? आप मेरी सेवा कर रहे हैं और माता जी पंखा हाँक रही हैं ?"

"नारद ! तू गुरूओं के लोक से आया है। यमपुरी में पाप भोगे जाते हैं, वैकुण्ठ में पुण्यों का फल भोगा जाता है लेकिन मृत्युलोक में सदगुरू की प्राप्ति होती है और जीव सदा के लिए मुक्त हो जाता है।

मालूम होता है, तू किसी गुरू की शरण ग्रहण करके आया है।"

नारदजी को अपनी भूल का अहसास कराने के लिए भगवान ये सब प्रयास कर रहे थे।

नारद जी ने कहाः "प्रभु ! मैं भक्त हूँ लेकिन निगुरा (निगुरा अर्थात जिसका कोई गुरु नहीं) हूँ।

गुरू क्या देते हैं ? गुरू का माहात्म्य क्या होता है आप यह बताने की कृपा करो भगवान !"

"गुरू क्या देते हैं..... गुरु का माहात्म्य क्या होता है यह जानना हो तो गुरूओं के पास जाओ। यह वैकुण्ठ है।

"नारद ! जा, तू किसी गुरू की शरण ले। बाद में इधर आ।"

देवर्षि नारद गुरू की खोज करने मृत्युलोक में आये। सोचा कि मुझे प्रभातकाल में जो सर्वप्रथम मिलेगा उसको मैं गुरू मानूँगा। प्रातःकाल में सरिता के तीर पर गये। देखा तो एक आदमी शायद स्नान करके आ रहा है। हाथ में जलती अगरबत्ती है। नारद जी ने मन ही मन उसको गुरू मान लिया। पास पहुँचे तो पता चला कि वह माछीमार है, हिंसक है। (मल्लाह के रूप में आदिनारायण ही आये थे।) नारदजी ने अपना संकल्प बताते हुएं कहां: "हे मल्लाह ! मैंने आपको गुरू मान लिया है।"

मल्लाह ने कहाः "गुरू का मतलब क्या होता है ? हम नहीं जानते गुरू क्या होता है ?"
गुरु का मतलब समझाते हेतु देवर्षि नारद बोले: "गु माने अन्धकार। रू माने प्रकाश। अर्थात्:जो अज्ञानरूपी अन्धकार को हटाकर ज्ञानरूपी प्रकाश कर दें उन्हें गुरू कहा जाता है।
आप मेरे आन्तरिक जीवन के गुरू हैं।" नारदजी ने मल्लाह के पैर पकड़ लिये।
मल्लाह बोला: "छोड़ो मुझे !" नारद: "आप मुझे शिष्य के रूप में स्वीकार कर लो गुरूदेव!"
मल्लाह ने पीछा छुड़ाने के लिए कहाः "अच्छा, स्वीकार है, जा।"
नारदजी आये वैकुण्ठ में। भगवान ने कहाः "नारद ! अब तू निगुरा तो नहीं है ?"
"नहीं भगवान ! मैं गुरू करके आया हूँ।" "कैसे हैं तेरे गुरू ?" "जरा धोखा खा गया मैं। वह **कमबख्त मल्लाह** मिल गया। अब क्या करें ? आपकी आज्ञा मानी। उसी को गुरू बना लिया।"
नारद की बात से भगवान नाराज हो गये और बोलेः "तूने गुरू शब्द का अपमान किया है।"जा, तुझे चौरासी लाख जन्मों तक माता के गर्भों में नर्क भोगना पड़ेगा।" नारद रोये, छटपटाये। भगवान ने कहाः "इसका इलाज यहाँ नहीं है। यह तो पुण्यों का फल भोगने की जगह है। नर्क पाप का फल भोगने की जगह है। कर्मों से छूटने की जगह तो वहीं है। तू जा उन गुरूओं के पास मृत्युलोक में।" नारद आये मृत्युलोक में । उस गुरु बनाये हुए मल्लाह के पैर पकड़ेः "गुरूदेव ! उपाय बताओ। चौरासी के चक्कर से छूटने का उपाय बताओ।" गुरूजी ने पूरी बात जान ली और कुछ संकेत दिये। नारद फिर वैकुण्ठ में पहुँचे। भगवान को कहाः "मैं चौरासी लाख योनियाँ तो भोग लूँगा लेकिन कृपा करके उसका नक्शा तो बना दो ! जरा दिखा तो दो नाथ ! कैसी होती है चौरासी ?
भगवान ने नक्शा बना दिया। नारद उसी नक्शे में लोटने-पोटने लगे।
"अरे ! यह क्या करते हो नारद ?"
"भगवान ! वह चौरासी भी आपकी बनाई हुई है और यह चौरासी भी आपकी ही बनायी हुई है। मैं इसी में चक्कर लगाकर अपनी चौरासी पूरी कर रहा हूँ।"

भगवान ने कहाः "महापुरूषों(गुरु) के नुस्खे भी अनोखे होते हैं। यह युक्ति भी तुझे उन्हीं से मिली नारद !

श्रीमद् आद्य शंकराचार्य सदगुरू जी

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक संत नर्मदा किनारे ओंकारेश्वर तीर्थ में एकान्त गुफा में आत्मशान्ति व परब्रह्म परमात्मा की शान्ति में ध्यानमग्न थे। उनके ध्यान की चर्चा दूर-दूर तक चारों और फेली हुई थी। वहं संत भगवान गोविन्दपादाचार्य थे। जिन्होने अपने स्वरूप का बोध हो गया है। श्रीमद् आद्य शंकराचार्य सदगुरू

नर्मदा किनारे तप करने वाले अन्य तपस्वी श्री गोविन्दपादाचार्य के दर्शन करने हेतु उसी गुफा के निकट कुटिया नाकर रहने लगे। उनका कहना था की इसी स्थान पर वे रहते-रहते बूढ़े हो गये लेकिन अभी तक श्री विन्दपादाचार्यजी की समाधि नहीं खुली। इसी विषय पर अन्य योगी, संत-स्नयासि उपस्थित लोग चर्चा कर रहे थे। तने में उसी स्थान पर दक्षिण भारत के केरल प्रांत से पैदल चलते हुए दो महीने से भी अधिक समय की यात्रा करके शंकर नाम का बालक पहुँचा।

बालक बोला: "मैंने नाम सुना है भगवान गोविन्दपादाचार्य का। वे पूज्यपाद आचार्य कहाँ रहते हैं?"

संन्यासियों ने बताया किः "हम भी उनके दर्शन का इन्तजार कर रहे है। उनकी समाधि खुले, और उनकी अमृत बरसाने वाली निगाहें हम पर पड़ें, उनके ब्रहमानुभव के वचनो से हमारे कान पवित्र हों इसी इन्तजार में हम भी नर्मदा किनारे अपनी कुटियाएँ बनाकर बैठे हैं।"

संन्यासियों ने उस बालक को निहारा। वह बालक बड़ा तेजस्वी लग रहा था। इस बाल संन्यासी का सम्यक् परिचय पाकर उनका विस्मय बढ़ गया। कितनी दूर केरल प्रदेश ! और यह बच्चा वहाँ से अकेला ही आया है श्रीगुरू की आश में। जब उन्होंने देखा कि इस अल्प अवस्था में ही वह भाष्य समेत सभी शास्त्रों में पारंगत है और इसके फलस्वरूप उसके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया है तो उन सबका मन प्रसन्नता से भर गया।

वहां उपस्थित किसी ने पूछाः "क्या नाम है बेटे ?"

"मेरा नाम शंकर है।"

बच्चे की ओजस्वी वाणी और तीव्र जिज्ञासा देखकर उन्होंने समाधिस्थ बैठे महायोगी गुरूवर्य श्री गोविन्दपादाचार्य के बारे में कुछ बातें कही। तो वह निर्दोष बालक भगवान गोविन्दपादाचार्य के दर्शन के लिए तड़प उठा।

संन्यासियों ने कहाः "वह दूर जो गुफा दिखाई दे रही है उसमें वे समाधिस्थ हैं। अन्धेरी गुफा में दिखाई नहीं पड़ेगा इसलिए यह दीपक ले जा।"

दीया जलाकर उस बालक ने गुफा में प्रवेश किया। विस्मयता से विमुग्ध होकर देखा तो एक अति दीर्घकाय, विशाल-भाल-प्रदेशवाले, शान्त मुद्रा, लम्बी जटा और कृश देहवाले फिर भी दिव्य तेज से आलोकित एक महापुरूष पद्मासन में समाधिस्थ बैठे थे। उनके शरीर की त्वचा सूख चुकी थी फिर भी उनका शरीर ज्योतिर्मय था।

भगवान गोविन्दपादाचार्य का दर्शन करते ही शंकर का रोम-रोम पुलकित हो उठा। उसका मन एक प्रकार से अनिर्वचनीय दिव्य आनन्द से भर उठा। निरन्तर आखो से बहते अश्रुजल से उनका वक्षः स्थल प्लावित हो गया। उसकी यात्रा का परिश्रम सार्थक हो गया और उसकी सारी थकान पलभर में ही उतर गयी।

करबद्ध होकर बह बालक स्तुति करने लगाः

इस सुन्दर भगवान की स्तुति से गुफा गुन्ज उठी। तब अन्य संन्यासी भी गुफा में आ इकट्ठे हुए। शंकर तब तक स्तवगान में ही मग्न थे। विस्मय विमुग्ध चित्त से सबने देखा कि भगवान गोविन्दपाद की वह निश्चल निस्पन्द देह बार-बार कम्पित हो रही है। प्राणों का स्पन्दन दिखाई देने लगा। क्षणभर में ही उन्होंने एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर चक्षु खोले किये।

शंकर ने गोविन्दपादाचार्य भगवान को साष्टांग प्रणाम किया। दूसरे संन्यासी भी योगीश्वर के चरणों में प्रणत हुए। आनंदध्वनि से गुफा गुंजित हो उठी। तब प्रवीण संन्यासीगण योगीराज को समाधि से सम्पूर्ण रूप से व्यथित कराने के लिए यौगिक प्रकियाओं में नियुक्त हो गये। क्रम से योगीराज का मन जीवभूमि पर उतर आया। यथा समय आसन का परित्याग कर वे गुफा से बाहर निकले।

योगीराज की सहस्रों वर्षों की समाधि एक बालक संन्यासी के आने से छूट गई है, यह बात द्रुतगति से चारौ दिशा में फैल गयी। दूर स्थानों से यतिवर के दर्शन की आकांक्षा से लोगो ने आकर ओंकारनाथ को एक तीर्थक्षेत्र में परिणत कर दिया। शंकर का परिचय प्राप्त कर गोविन्दापादाचार्य ने जान लिया कि यही वह शिवावतार शंकर है, जिसे अद्वैत ब्रह्मविद्या का उपदेश करने के लिए उन्होने सहस्र वर्षों तक समाधि में अवस्थान किया और अब यही शंकर वेद-व्यास रचित ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखकर जगत में अद्वैत ब्रह्मविद्या का प्रचार करेगा।

एक शुभ दिन श्रीगोविन्दपादाचार्यजी ने शंकर को शिष्य रूप में ग्रहण कर लिया और उसे योगादि की शिक्षा देने लगे। शंकर के साथ-साथ अन्यान्य संन्यासियों ने भी उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। प्रथम वर्ष उन्होंने शंकर को हठयोग की शिक्षा दी। वर्ष पूरा होने के पूर्व ही शंकर ने हठयोग में पूर्ण सिद्ध प्राप्त कर ली। द्वितीय वर्ष में शंकर राजयोग में सिद्ध हो गये। हठयोग और राजयोग की सिद्धि प्राप्ति करने के फलस्वरूप शंकर बहुत बड़ी अलौकिक शक्ति के अधिकारी बन गये। दूरश्रवण, दूरदर्शन, सूक्ष्म देह से व्योममार्ग में गमन, अणिमा, लघिमा, देहान्तर में प्रवेश एवं सर्वोपरि इच्छामृत्यु शक्ति के वे अधिकारी हो गये। तृतीय वर्ष में गोविन्दपादाचार्य अपने शिष्य को विशेष यत्नपूर्वक ज्ञानयोग की शिक्षा देने लगे। श्रवण, मनन, निदिध्यासन, ध्यान, धारणा, समाधि का प्रकृत रहस्य सिखा देने के बाद उन्होंने अपने शिष्य को साधनकर्मानुसार अपरोक्षनुभूति के उच्च स्तर में दृढ़ प्रतिष्ठित कर दिया।

ध्यानबल से समाधिस्थ होकर हर क्षण दिव्यानुभूति से शंकर का मन अब सदैव एक अतीन्द्रिय राज्य में विचरण करने लगा। उनकी देह में ब्रह्मज्योति प्रस्फुटित हो उठी।

उनके मुखमण्डल पर अनुपम लावण्य और स्वर्गीय हास झलकने लगा। उनके मन की सहज गति अब समाधि की ओर थी। बलपूर्वक उनके मन को जीवभूमि पर रखना पड़ता था। क्रमशः उनका मन निर्विकल्प भूमि पर अधिरूढ़ हो गया।

गोविन्दपादाचार्य ने देखा कि शंकर की साधना और शिक्षा अब समाप्त हो चुकी है। शिष्य उस ब्राह्मी स्थिति में पहूंच गया है जहाँ प्रतिष्ठित होने से श्रुति कहती है:

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।।

अर्थातः यह परावर ब्रह्म दृष्ट होने पर दृष्टा का अविद्या आदि संस्काररूप हृदयग्रन्थि-समूह नष्ट हो जाता है एवं (प्रारब्धभिन्न) कर्मराशि का क्षय होने लगता है।

शंकर अब उसी दुर्लभ अवस्था में प्रतिष्ठित हो गये।

वर्षा ऋतु का आगमन हुआ। नर्मदा-वेष्टित ओंकारनाथ की शोभा अनुपम हो गयी। कुछ दिनों तक अविराम दृष्टि होती रही। नर्मदा का जल क्रमशः बढ़ने

लगा। सब कुछ जलमय ही दिखाई देने लगा। ग्रामवासियों ने पालतू पशुओं समेत ग्राम का त्यागकर निरापद उच्च स्थानों में आश्रय ले लिया।

गुरूदेव कुछ दिनों से गुफा में समाधिस्थ हुए बैठे थे। बाढ़ का जल बढ़ते-बढ़ते गुफा के द्वार तक आ पहुँचा। संन्यासीगण गुरूदेव का जीवन विपन्न देखकर बहुत शंकित होने लगे। गुफा में बाढ़ के जल का प्रवेश रोकना आवश्याक था क्योंकि वहाँ गुरूदेव समाधिस्थ थे। समाधि से दूर कर उन्हे किसी निरापद स्थान पर ले चलने के लिये सभी व्यग्र हो उठे।

यह व्यग्रता देखकर शंकर कहीं से मिट्टी का एक कुंभ ले आये और उसे गुफा के द्वार पर रख दिया और अन्य संन्यासियों को आश्वासन देते हुए बोलेः "आप चिन्तित न हों।

गुरूदेव की समाधि भंग करने की कोई आवश्यकता नहीं। बाढ़ का जल इस कुंभ में प्रविष्ट होते ही प्रतिहत हो जायेगा, गुफा में प्रविष्ट नहीं हो सकेगा।"

सबको शंकर का यह कार्य बाल सुलभ खेल जैसा लगा किन्तु सभी ने विस्मित होकर देखा कि जल कुंभ में प्रवेश करते ही प्रतिहत एवं रूद्ध हो गया है। गुफा अब निरापद हो गई है। शंकर की यह अलौकिक शक्ति देखकर सभी अवाक् रह गये।

क्रमशः बाढ़ शांत हो गई। गोविन्दपादाचार्य भी समाधि से निकल गये। उन्होंने शिष्यों के मुख से शंकर के उक्त कार्य की बात सुनी तो प्रसन्न होकर उसके मस्तक पर हाथ रखकर कहाः

"वत्स ! तुम्हीं शंकर के अंश से उदभूत लोक-शंकर हो। अपने गुरू गौड़पादचार्य के श्रीमुख से मैंने सुना था कि तुम आओगे और जिस प्रकार सहस्रधारा नर्मदा का स्रोत एक कुंभ में अवरूद्ध कर दिया है उसी प्रकार तुम व्यासकृत ब्रह्मसूत्र पर भाष्यरचना कर अद्वैत वेदान्त को आपात विरोधी सब धर्ममतों से उच्चतम आसन पर प्रतिष्ठित करने में सफल होंगे तथा अन्य धर्मों को सार्वभौम अद्वैत ब्रह्मज्ञान के अन्तर्भुक्त कर दोगे।

ऐसा ही गुरूदेव भगवान गौड़पादाचार्य ने अपने गुरूदेव शुकदेव जी महाराज के श्रीमुख से सुना था। इन विशिष्ट कार्यो के लिए ही तुम्हारा जन्म हुआ है। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि तुम समग्र वेदार्थ ब्रह्मसूत्र भाष्य में लिपिबद्ध करने में सफल होंगे।"

श्री गोविन्दपादाचार्य ने जान लिया कि शंकर की शिक्षा समाप्त हो गई है। उनका कार्य भी सम्पूर्ण हो गया है। एक दिन उन्होंने शंकर को अपने निकट बुलाकर पूछा कीः वत्स ! क्या तुम्हारे मन में किसी प्रकार का कोई सन्देह है ? क्या तुम भीतर किसी प्रकार अपूर्णता का अनुभव कर रहे हो ? अथवा तुम्हें अब क्या कोई जिज्ञासा है ?"

शंकर ने आनन्दित हो गुरूदेव को प्रणाम करके कहाः "भगवन ! आपकी कृपा से अब मेरे लिए ज्ञातव्य अथवा प्राप्तव्य कुछ भी नहीं रहा। आपने मुझे पूर्णमनोरथ कर दिया है। अब आप अनुमति दें कि मैं समाहित चित्त होकर चिरनिर्वाण लाभ करूँ।"

कुछ देर मौर रहकर श्री गोविन्दपादाचार्य ने शान्त स्वर में कहाः "वत्स ! वैदिक धर्म-संस्थापन के लिए देवाधिदेव शंकर के अंश से तुम्हारा जन्म हुआ है। तुम्हें अद्वैत ब्रह्मज्ञान का उपदेश करने के लिए मैं गुरूदेव की आज्ञा से सहस्रों वर्षों से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। अन्यथा ज्ञान प्राप्त करते ही देहत्याग कर मुक्तिलाभ कर लेता।

अब मेरा कार्य समाप्त हो गया है। अब मैं समाधियोग से स्वस्वरूप में लीन हो जाऊँगा। तुम अब अविमुक्त क्षेत्र में जाओ। वहाँ तुम्हें भवानिपति शंकर के दर्शन प्राप्त होंगे। वे तुम्हें जिस प्रकार का आदेश देंगे उसी प्रकार तुम करना।"

शंकर ने श्रीगुरूदेव का आदेश शिरोधार्य किया। तदनन्तर एक शुभ दिन श्रीगोविन्दपादाचार्य ने सभी शिष्यों को आशीर्वाद प्रदान कर समाधि योग से देहत्याग कर दिया। शिष्यों ने यथाचार गुरूदेव की देह का नर्मदाजल में योगीजनोचित संस्कार किया।

गुरूदेव की आज्ञा के अनुसार शंकर पैदल चलते-चलते काशी आये। वहाँ काशी विश्वनाथ के दर्शन किये। भगवान वेदव्यास का स्मरण किया तो उन्होंने भी दर्शन दिये। अपनी की हुई साधना, वेदान्त के अभ्यास और सदगुरू की कृपा से अपने शिवस्वरूप में जगे हुए शंकर **'भगवान श्रीमद् आद्य शंकराचार्य'** हो गये।

श्री गुरु स्तोत्रम्

पार्वती उवाच

गुरुर्मन्त्रस्य देवस्य धर्मस्य तस्य एव वा ।
विशेषस्तु महादेव ! तद् वदस्व दयानिधे ॥
महादेव उवाच

जीवात्मनं परमात्मनं दानं ध्यानं योगो ज्ञानम्।
उत्कल काशीगंगामरणं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥१॥
प्राणं देहं गेहं राज्यं स्वर्गं भोगं योगं मुक्तिम्।
भार्यामिष्टं पुत्रं मित्रं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥२॥
वानप्रस्थं यतिविधधर्मं पारमहंस्यं भिक्षुकचरितम्।
साधोः सेवां बहुसुखभुक्तिं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥३॥
विष्णो भक्तिं पूजनरक्तिं वैष्णवसेवां मातरि भक्तिम्।
विष्णोरिव पितृसेवनयोगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥४॥
प्रत्याहारं चेन्द्रिययजनं प्राणायां न्यासविधानम्।
इष्टे पूजा जप तपभक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥५॥
काली दुर्गा कमला भुवना त्रिपुरा भीमा बगला पूर्णा।
श्रीमातंगी धूमा तारा न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥६॥
मात्स्यं कौर्मं श्रीवाराहं नरहरिरूपं वामनचरितम्।
नरनारायण चरितं योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥७॥
श्रीभृगुदेवं श्रीरघुनाथं श्रीयदुनाथं बौद्धं कल्क्यम्।
अवतारा दश वेदविधानं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥८॥
गंगा काशी कान्ची द्वारा मायाऽयोध्याऽवन्ती मथुरा।
यमुना रेवा पुष्करतीर्थ न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥९॥
गोकुलगमनं गोपुररमणं श्रीवृन्दावन-मधुपुर-रटनम्।
एतत् सर्वं सुन्दरि ! मातर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥१०॥
तुलसीसेवा हरिहरभक्तिः गंगासागर-संगममुक्तिः।
किमपरमधिकं कृष्णेभक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥११॥
एतत् स्तोत्रम् पठति च नित्यं मोक्षज्ञानी सोऽपि च धन्यम् ।
ब्रह्माण्डान्तर्यद्-यद् ध्येयं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥१२॥
॥वृहदविज्ञान परमेश्वरतंत्रे त्रिपुराशिवसंवादे श्रीगुरोःस्तोत्रम् ॥

भावार्थ: माता पार्वती ने कहा हे दयानिधि शंभु ! गुरुमंत्र के देवता अर्थात् गुरुदेव एवं उनका आचारादि धर्म क्या है - इस बारे विस्तार से बताये। महादेव ने कहा जीवात्मा-परमात्मा का ज्ञान, दान, ध्यान, योग पुरी, काशी या गंगा तट पर मृत्यु - इन सबमें से कुछ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥१॥ प्राण, शरीर, गृह, राज्य, स्वर्ग, भोग, योग, मुक्ति, पत्नी, इष्ट, पुत्र, मित्र - इन सबमें से कुछ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥२॥ वानप्रस्थ धर्म, यति विषयक धर्म, परमहंस के धर्म, भिक्षुक अर्थात् याचक के धर्म - इन सबमें से कुछ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥३॥ भगवान विष्णु की भक्ति, उनके पूजन में अनुरक्ति, विष्णु भक्तों की सेवा, माता की भक्ति, श्रीविष्णु ही पिता रूप में हैं, इस प्रकार की पिता सेवा - इन सबमें से कुछ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥४॥ प्रत्याहार और इन्द्रियों का दमन, प्राणायाम, न्यास-विन्यास का विधान, इष्टदेव की पूजा, मंत्र जप, तपस्या व भक्ति - इन सबमें से कुछ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥५॥ काली, दुर्गा, लक्ष्मी, भुवनेश्वरि, त्रिपुरासुन्दरी, भीमा, बगलामुखी (पूर्णा), मातंगी, धूमावती व तारा ये सभी मातृशक्तियाँ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥६॥ भगवान के मत्स्य, कूर्म, वाराह, नरसिंह, वामन, नर-नारायण आदि अवतार, उनकी लीलाएँ, चरित्र एवं तप आदि भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥७॥ भगवान के श्री भृगु, राम, कृष्ण, बुद्ध तथा कल्कि आदि वेदों में वर्णित दस अवतार गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥८॥ गंगा, यमुना, रेवा आदि पवित्र नदियाँ, काशी, कांची, पुरी, हरिद्वार, द्वारिका, उज्जयिनी, मथुरा, अयोध्या आदि पवित्र पुरियाँ व पुष्करादि तीर्थ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥९॥ हे सुन्दरी ! हे मातेश्वरी ! गोकुल यात्रा, गौशालाओं में भ्रमण एवं श्री वृन्दावन व मधुपुर आदि शुभ नामों का रटन - ये सब भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है,गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥१०॥ तुलसी की सेवा, विष्णु व शिव की भक्ति, गंगा सागर के संगम पर देह त्याग और अधिक क्या कहूँ परात्पर भगवान श्री कृष्ण की भक्ति भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥११॥ इस स्तोत्र का जो नित्य पाठ करता है वह आत्मज्ञान एवं मोक्ष दोनों को पाकर धन्य हो जाता है | निश्चित ही समस्त ब्रह्माण्ड मे जिस-जिसका भी ध्यान किया जाता है, उनमें से कुछ भी गुरुदेव से बढ़कर नहीं है, गुरुदेव से बढ़कर नहीं हैं॥१२॥

उपरोक्त गुरुस्तोत्र वृहद विज्ञान परमेश्वरतंत्र मं त्रिपुरा-शिव संवाद में वर्णित हैं।

श्री गुरु अष्टोत्तरशत नामावलि

ॐ सद्गुरवे नमः॥
ॐ अज्ञाननाशकाय नमः॥
ॐ अदम्भिने नमः॥
ॐ अद्वैतप्रकाशकाय नमः॥
ॐ अनपेक्षाय नमः॥
ॐ अनसूयवे नमः॥
ॐ अनुपमाय नमः॥
ॐ अभयप्रदात्रे नमः॥
ॐ अमानिने नमः॥
ॐ अहिंसामूर्तये नमः॥
ॐ अहेतुक दयासिन्धवे नमः॥
ॐ अहंकार नाशकाय नमः॥
ॐ अहंकार वर्जिताय नमः॥
ॐ आचार्येन्द्राय नमः॥
ॐ आत्मसन्तुष्टाय नमः॥
ॐ आनन्दमूर्तये नमः॥
ॐ आर्जवयुक्ताय नमः॥
ॐ उचितवाचे नमः॥
ॐ उत्साहिने नमः॥
ॐ उदासीनाय नमः॥
ॐ उपरताय नमः॥
ॐ ऐश्वर्ययुक्ताय नमः॥
ॐ कृत कृत्याय नमः॥
ॐ क्षमावते नमः॥
ॐ गुणातीताय नमः॥
ॐ चारुवाग्विलासाय नमः॥
ॐ चारुहासाय नमः॥
ॐ छिन्नसंशयाय नमः॥
ॐ ज्ञानदात्रे नमः॥
ॐ ज्ञानयज्ञतत्पराय नमः॥
ॐ तत्त्वदर्शिने नमः॥
ॐ तपस्विने नमः॥
ॐ तापहराय नमः॥
ॐ तुल्यनिन्दास्तुतये नमः॥
ॐ तुल्यप्रियाप्रियाय नमः॥
ॐ तुल्यमानापमानाय नमः॥
ॐ तेजस्विने नमः॥
ॐ त्यक्तसर्वपरिग्रहाय नमः॥
ॐ त्यागिने नमः॥
ॐ दक्षाय नमः॥
ॐ दान्ताय नमः॥
ॐ दृढव्रताय नमः॥
ॐ दोषवर्जिताय नमः॥
ॐ द्वन्द्वातीताय नमः॥
ॐ धीमते नमः॥
ॐ धीराय नमः॥
ॐ नित्यसन्तुष्टाय नमः॥
ॐ निरहंकाराय नमः॥
ॐ निराश्रयाय नमः॥
ॐ निर्भयाय नमः॥
ॐ निर्मदाय नमः॥
ॐ निर्ममाय नमः॥
ॐ निर्मलाय नमः॥
ॐ निर्मोहाय नमः॥
ॐ निर्योगक्षेमाय नमः॥
ॐ निर्लोभाय नमः॥
ॐ निष्कामाय नमः॥
ॐ निष्क्रोधाय नमः॥
ॐ निःसंगाय नमः॥
ॐ परमसुखदाय नमः॥
ॐ पण्डिताय नमः॥
ॐ पूर्णाय नमः॥
ॐ प्रमाणप्रवर्तकाय नमः॥
ॐ प्रियभाषिणे नमः॥
ॐ ब्रह्मकर्मसमाधये नमः॥
ॐ ब्रह्मात्मनिष्ठाय नमः॥
ॐ ब्रह्मात्मविदे नमः॥
ॐ भक्ताय नमः॥
ॐ भवरोगहराय नमः॥
ॐ भुक्तिमुक्तिप्रदात्रे नमः॥
ॐ मंगलकर्त्रे नमः॥
ॐ मधुरभाषिणे नमः॥
ॐ महात्मने नमः॥
ॐ महावाक्योपदेशकर्त्रे नमः॥
ॐ मितभाषिणे नमः॥
ॐ मुक्ताय नमः॥
ॐ मौनिने नमः॥
ॐ यतचित्ताय नमः॥
ॐ यतये नमः॥
ॐ यद्दृच्छालाभसन्तुष्टाय नमः॥
ॐ युक्ताय नमः॥
ॐ रागद्वेषवर्जिताय नमः॥
ॐ विदिताखिलशास्त्राय नमः॥
ॐ विद्याविनयसम्पन्नाय नमः॥
ॐ विमत्सराय नमः॥
ॐ विवेकिने नमः॥
ॐ विशालहृदयाय नमः॥
ॐ व्यवसायिने नमः॥
ॐ शरणागतवत्सलाय नमः॥
ॐ शान्ताय नमः॥
ॐ शुद्धमानसाय नमः॥
ॐ शिष्यप्रियाय नमः॥
ॐ श्रद्धावते नमः॥
ॐ श्रोत्रियाय नमः॥
ॐ सत्यवाचे नमः॥
ॐ सदामुदितवदनाय नमः॥
ॐ समचित्ताय नमः॥
ॐ समाधिक-वर्जिताय नमः॥
ॐ समाहितचित्ताय नमः॥
ॐ सर्वभूतहिताय नमः॥
ॐ सिद्धाय नमः॥
ॐ सुलभाय नमः॥
ॐ सुशीलाय नमः॥
ॐ सुहृदे नमः॥
ॐ सूक्ष्मबुद्धये नमः॥
ॐ संकल्पवर्जिताय नमः॥
ॐ सम्प्रदायविदे नमः॥
ॐ स्वतन्त्राय नमः॥

श्री गुरु प्रार्थना

शुक्लाम्ब्रधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं। ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥१॥ रविवारे च संक्रान्तौ शुभयोगे यथाविधि। वैधृतौ च व्यतीपाते विप्राणां च गृहे तथा ॥२॥ दवतायतने चैव नद्यां वै सङ्गमोत्तसे। अथवा स्वगृहे चैव शुभे स्थाने विशेषतः ॥३॥ स्त्रानं समाचरेद्रोगी मृतपुत्रः सुपुत्रकः। कर्मणा पीडितो योऽसौ नारी वा पुरुषोऽथवा ॥४॥ धात्रीफलानि लोघ्रं च गोमयं तिलसर्षपान्। मृत्तिकाः सप्त कर्पूरमुशीरं मुस्तसंतुलम् ॥५॥ औषधैः समभागैस्तु स्त्रानं कुर्यात्प्रयत्नतः। देवान् पितृंश्च संतर्प्य दत्वा सूर्याघ्र्यमेव च ॥६॥ एवं सर्वाविधिं कृत्वा संकल्पं कारयेत्ततः॥ अद्येहेत्यादि प्राचीनसंचितकर्मविलोकनार्थं मनःकामनासिद्धयर्थं विष्णोः पूजनपूर्वकं कर्मविपाकपुस्तकपूजनमहं करिष्ये। अङ्गन्यासपूर्वकं षोडशोपचारपूजासंकल्पः वैश्वदेवं श्राद्धं च। अत्रान्तरे देहशुद्धयर्थं पुरश्चरणाङ्गत्वेन गोमिथुनदानव्रतं कुम्भदानं च, प्रजापतिसंतुष्टये षोडश ब्राह्मणान् भोजयेत्। भोजनान्तरे प्रार्थनाऽऽचार्यस्यब्राह्मण त्वं महाभाग भूमिदेव द्विजोत्तम। यथाविधं प्रतिज्ञाय प्राचीनं च शुभाशुभम् ॥७॥ कथं मे कथयस्वाशु कृपां कृत्वा ममोपरि। एवं तु ब्राह्मणाचार्यं नमस्कृत्य प्रसादयेत् ॥८॥ दश पश्च तथा विप्रानुपवेश्य प्रयत्नतः। तेषामनुज्ञया सर्वं प्रायश्चित्तमुपक्रमेत् ॥९॥ वस्त्रालङ्गरणैराचार्थं पूजयित्वा प्रजापतिस्वरूपं गुरुं प्रार्थयेत् प्रजापते महाबाहो वेदवेदाङ्गपारग। पुत्रकामसमृद्धयर्थं पूजां गृहहीष्व ते नमः ॥१०॥

विष्णो त्वं पुण्डरीकाक्ष भुवनानां च पालकः। लक्ष्म्या सह हृषीकेश पूजां गृहहीष्व ते नमः ॥११॥ रुद्र त्वं दैन्यनाशाय सदा भस्माङ्गधारकः। नागहारोपवीती च पूजां गृहहीष्व ते नमः ॥१२॥ स्वर्गे सुराश्च गन्धर्वाः पाताले पन्नगादयः। मृत्युलोके मनुष्याश्च सर्वे ध्यायन्ति भास्करम् ॥१३॥

महायज्ञादिकं चैव अग्निहोत्रादि कर्म च। तीर्थस्त्रानं तथा ध्यानं वर्तने भास्करोदयात् ॥१४॥ ब्रह्मा विष्णुः शिवः शक्तिर्देवदेवो मुनीश्वराः। ध्यायन्ति भास्करं देवं साक्षीमूतं जगत्रये ॥१५॥ त्वं ब्रह्मा त्वं वै विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं प्रजापतिः। त्वमग्निस्त्वं वषट्कारस्त्वामाहुः सर्वसाक्षिणम् ॥१६॥ योगिनां प्रथमो ध्येयो यतीनां ब्रह्मचारिणाम्। आधिव्याध्योश्च हर्त्ता त्वं सर्वपापक्षयं कुरु ॥१७॥ दीनानां कृपणानां च सर्वेषां व्याधिनाशनम्। एवं च भास्करं ध्यात्वा नमस्कृत्य प्रसादयेत् ॥१८॥ पापी चैव दुराचारी परनिन्दापरो जनः। ब्रह्महा हेमहारी च सुरापी गुरुतल्पगः ॥१९॥ स्त्रीहन्ता बालघाती च अगम्यागमनं तथा। एवमादिकपापानि मया वै पूर्वजन्मनि ॥२०॥

कृतानि विविधान्येव सर्वाणि मार्ष्टुमर्हसि। शरणं तव संप्राप्तस्त्वं मामुद्धर्तुमर्हसि ॥२१॥ ममोपरि कृपां कृत्वा कर्म मे कथय प्रभो। लग्नं तात्कालिकं कृत्वा जन्मपत्रं निरीक्ष्य च ॥२२॥ लग्नग्रहविचारेण ज्ञातव्यं कर्म मामकम्। ग्रहलग्नविचारेण जानन्ति कर्म पण्डिताः ॥२३॥ सूत उवाच॥ कैलासशिखरे रम्ये सुखासीनं महेश्वरम् । प्रणम्य पार्वती भक्त्या पप्रच्छ च सदाशिवम् ॥२४॥ पार्वत्युवाच॥ देवदेव जगन्नाथ भक्तानुग्रह कारक। लोकोपकारकं प्रश्नं वद मे परमेश्वर ॥२५॥ कलौ च मानवास्तुच्छाः पापमोहसमन्विताः। महारोगग्रहग्रस्ताः पुत्रकन्याविवर्जिता ॥२६॥ कुत्सिता रूपविभ्रष्टा मृतवत्सा नपुंसकाः। नारीणां पुरुषाणां च पूर्वकर्म च यत्प्रभो ॥२७॥ तत्सर्वं वद मे स्वामिन् सर्वज्ञोऽसि मतो मम। तच्च श्रुत्वा वचो देव्याः प्रीतिमान् स महेश्वरः ॥२८॥ प्रहस्य जगतमीशो वल्लभां प्रीतिसंयुताम्। उवाच प्रश्नं तद्गूढं त्रैलोक्ये चापि दुर्लभम् ॥२९॥ शिव उवाच॥ श्रृणु त्वं गिरिजे देवि नृणां कर्म विशेषतः। कथयामि न सन्देहो यत्ते मनसि वर्त्तते ॥३०॥

मर्त्याः सर्वे जगज्जाताः कर्म कुर्वन्ति सर्वदा। स्वकर्माणि ततो देवि भुज्यंते देवमानुषैः ॥३१॥ मानवैस्तु विशेषेण सुखदुःखादिकं च यत्। कर्मत्रयं च सर्वेषां तन्मध्ये संचितं च यत् ॥३२॥ वक्तव्यं नात्र सन्देहो यत्कृत्वा फलमाप्नुयात् प्रारब्धं विस्तरं कर्म वर्तमानं च दृश्यते ॥३३॥ अश्विन्यादिकनक्षत्रे सर्वेषां जन्म जायते। तदादिपादभेदेन ज्ञातव्यं च शुभाशुभम् ॥३४॥

इति कर्मविपाकसंहितायां प्रथमोऽध्यायः॥

श्री गुरु स्मरण तथा स्वस्तयन

श्री मंगल मूर्तये नमः। श्री हरि । श्री गणेशाय नम।

॥श्री माता पितृभ्यां नम:। श्रीगुरुभ्यो नम:॥

लम्बोदरम् परम सुन्दरमेकदन्तम् रक्ताम्बरम् त्रिनयनम् परम पवित्रम्। उद्यद्दिवाकर निभोज्जवल कान्तिकान्तम् विघ्नेश्वर सकलविघ्नहरम् नमामि॥

गुरु स्मरण

अज्ञानतिमिरान्द्यस्य ज्ञानाज्जन शलाकया।
चक्षुरून्मीलितम् येन तस्मै श्री गुरुवे नम:॥
अखण्डमण्डलाकारम् व्याप्तंयेन चराचरम्।
तत्पदम् दर्शितम् येन तस्मै श्री गुरुवे नम:॥

श्री गुरुवे नम :

पवित्र करण मन्त्र

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्माभ्यन्तरः शुचि:॥
ॐ पुण्डरीकाक्ष: पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्ष: पुनातु,
ॐ पुण्डरीकाक्ष: पुनातु।
आचाम्य प्राणानाम्यम् गुरुं गुरु मन्त्रं च स्मृत
ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नम:
ॐ माधवाय नम:
आचमन के बाद मुह को पोछ लें।
ॐ हृषीकेशाय नम:, ॐ गोविन्दाय नमः

पवित्री धारण मन्त्र -
" पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि:। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्काम: पुन: तत्छकेयम्।"

आसन पवित्रीकरण करने का मन्त्र

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वम् विष्णुना धृता।
त्वम् च धारय , मां देवि पवित्रम् कुरु च आसनम्॥

मंगल तिलक मंत्र

ॐ स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषा विश्वेवेदा, स्वस्तिन स्ताक्ष्यो अरिष्ट नेमि:, स्वस्ति नो बृहस्पति र्दधातु।

"स्वस्त्ययन" (शान्ति पाठ)

ॐ आ नो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वेतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सद्मिद् वृधे असंन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥

देवानां भद्रा सुमतिॠजूयतां देवाना रातिरभि नो निवर्ततााम्। देवाना सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीव से॥

तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदिति दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुण सोममश्विना सरस्वती न: सुभगा मयस्करत्॥ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता धौः।

तद् ग्रावाण: सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्णया युवम्॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्ध: स्वस्तये॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति न पूषा विश्ववेदा:। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमि: स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

पृषदश्वा मरुत: पृश्निमातर: शुभं यावानो विदथेषु जग्मय:। अग्नि जिह्वा मनव: सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह:॥ भद्रं कर्णेभि: श्रुणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:। स्थिरैरङ्गेस्तुष्टुवा सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु:॥

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तो:॥

अदितिधौरदिति रन्तरिक्षमदिति र्माता स पिता स पुत्र:। विश्वे देवा अदिति: पञ्चजना अदिति र्जातमदिति र्जनित्वम्॥

धौ: शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषदय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्ति र्विश्वे देवा: शान्ति र्ब्रह्म शान्ति: सर्व शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि॥

यतो यत: समीहसे ततो नो अंभयं कुरु। शं न: कुरु प्रजाभ्योऽभयं न पशुभ्य:॥ सुखशान्तिर्भवतु ॥

आध्यात्मिक उन्नति हेतु उत्तम चातुर्मास व्रत

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्मग्रंथों के अनुसार, आषाढ मास में शुक्लपक्ष की एकादशी की रात्रि से भगवान विष्णु इस दिन से लेकर अगले चार मास के लिए योगनिद्रा में लीन हो जाते हैं, एवं कार्तिक मास में शुक्लपक्ष की एकादशी के दिन योगनिद्रा से जगते हैं। इसलिये चार इन महीनों को चातुर्मास कहाजाता हैं। चातुर्मास का हिन्दू धर्म में विशेष आध्यात्मिक महत्व माना जाता हैं।

अषाढ मास में शुक्ल पक्ष कि द्वादशी अथवा पूर्णिमा अथवा जब सूर्य का मिथुन राशि से कर्क राशि में प्रवेश होता हैं तब से चातुर्मास के व्रत का आरंभ होता हैं। चातुर्मास के व्रत कि समाप्ति कार्तिक मास में शुक्ल पक्ष कि द्वादशी को होती हैं। साधु संन्यासी अषाढ मासकि पूर्णिमा से चातुर्मास मानते हैं।

सनातन धर्म के अनुयायी के मत से भगवान विष्णु सर्वव्यापी हैं. एवं सम्पूर्ण ब्रह्मांडा भगवान विष्णु कि शक्ति से हि संचालित होता हैं। इस लिये सनातन धर्म के लोग अपने सभी मांगलिक कार्यो का शुभारंभ भगवान विष्णु को साक्षी मानकर करते हैं।

शास्त्रो में लिखा गया है कि वर्षाऋतु के चारों मास में लक्ष्मी जी भगवान विष्णु की सेवा करती हैं। इस अवधि में यदि कुछ नियमों का पालन करते हुवे अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु व्रत करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

चातुर्मास में व्रत करने वाले साधक को प्रतिदिन सूर्योदय के समय स्नान इत्यादि से निवृत्त होकर भगवान विष्णु की आराधना करनी चाहिये।

चातुर्मास के व्रत का प्रारंभ करने से पूर्व निम्न संकल्प करना चाहिये।

"हे प्रभु, मैंने यह व्रत का संकल्प आपको साक्षि मानकर उपस्थिति में लिया हैं। आप मेरे उपर कृपा रख कर मेरे व्रत को निर्विघ्न समाप्त करने का सामर्थ्य मुजे प्रदान करें। यदि व्रत को ग्रहण करने के उपरांत बीच में मेरी मृत्यु हो जाये तो आपकी कृपा द्र यह पूर्ण रुप से समाप्त हो जाये।

व्रत के दौरान भगवान विष्णु की वंदना इस प्रकार करें।

शांताकारंभुजगशयनंपद्मनाभंसुरेशं।
विश्वाधारंगगनसदृशंमेघवर्णशुभाङ्गम्॥
लक्ष्मीकान्तंकमलनयनंयोगिभिर्ध्यानगम्यं।
वन्दे विष्णुंभवभयहरंसर्वलोकैकनाथम्॥

भावार्थ:- जिनकी आकृति अतिशय शांत हैं, जो शेषनाग की शय्यापर शयन कर रहे हैं, जिनकी नाभि में कमल है, जो सब देवताओं द्वारा पूज्य हैं, जो संपूर्ण विश्व के आधार हैं, जो आकाश के सद्रश्य सर्वत्र व्याप्त हैं, नीले मेघ के समान जिनका वर्ण हैं, जिनके सभी अंग अत्यंत सुंदर हैं, जो योगियों द्वारा ध्यान करके प्राप्त किये जाते हैं, जो सब लोकों के स्वामी हैं, जो जन्म-मरणरूप भय को दूर करने वाले हैं, ऐसे लक्ष्मीपति,कमलनयन,भगवान विष्णु को मैं प्रणाम करता हूं।

स्कंदपुराण के अनुशार चातुर्मास का विधि-विधान और माहात्म्य इस प्रकार विस्तार से वर्णित हैं।

चातुर्मास में शास्त्रीय विभिन्न नियमों का पालन कर व्रत करने से अत्याधिक पुण्य लाभ प्राप्त होते हैं।

- जो व्यक्ति चातुर्मास में केवल शाकाहारी भोजन ग्रहण करता हैं, वह धन धान्य से सम्पन्न होता हैं।
- जो व्यक्ति चातुर्मास में प्रतिदिन रात्री चंद्र उदय के बाद दिन में मात्र एकबार भोजन करता हैं, उसे सुख समृद्धि एवं एश्वर्य कि प्राप्ति होती हैं।
- जो व्यक्ति भगवान विष्णु के शयनकाल में बिना मांगे अन्न का सेवन करता हैं, उसे भाई-बंधुओं का पूर्ण सुख प्राप्त होता हैं।
- स्वास्थय लाभ एवं निरोगी रेहने के लिये चातुर्मास में विष्णुसूक्त के मंत्रों को स्वाहा करके नित्य हवन में चावल और तिल की आहुतियां देने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- चातुर्मास के चार महीनों में धर्मग्रंथों के नियमित स्वाध्याय से पुण्य फल मिलता हैं।
- चातुर्मास के चार महीनों में व्यक्ति जिस वस्तु को त्यागता हैं वह वस्तु उसे अक्षय रूप में पुनः प्राप्त हो जाती हैं।

चातुर्मास का सद उपयोग आत्म उन्नति के लिए किया जाता हैं। चातुर्मास के नियम मनुष्य के भितर त्याग और संयम की भावना उत्पन्न करने के लिए बने हैं।

चातुर्मास में किस पदार्थ का त्याग करें

व्रत करने वाले व्यक्ति को...

- श्रावण मास में हरी सब्जी का त्याग करना चाहिये।
- भाद्रपद मास में दही का त्याग करना चाहिये।
- आश्विन मास में दूध का त्याग करना चाहिये।
- कार्तिक मास में दालों का का त्याग करना चाहिये।
- व्रत कर्ता को शैय्या शयन, मांस, मधु आदि का सेवन त्याग करना चाहिये।

त्याग किये गय पदार्थो का फल निम्न प्रकार हैं।

- जो व्यक्ति गुड़ का त्याग करता हैं, उसकी वाणी में मधुरता आति हैं।
- जो व्यक्ति तेल का त्याग करता हैं, उसके समस्त शत्रुओं का नाश होता हैं।
- जो व्यक्ति घी का त्याग करता हैं, उसके सौन्दर्य में वृद्धि होती हैं।
- जो व्यक्ति हरी सब्जी का त्याग करता हैं, उसकी बुद्धि प्रबल होती हैं एवं पुत्र लाभ प्राप्त होता हैं।
- जो व्यक्ति दूध एवं दही का त्याग करता हैं, उसके वंश में वृद्धि होकर उसे मृत्यु उपरांत गौलोक में स्थान प्राप्त होता हैं।
- जो व्यक्ति नमक का त्याग करता हैं, उसकी समस्त मनोकामना पूर्ण होकर उसके सभी कार्य में निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं।

चातुर्मास में मांगलिक कार्य वर्जित क्यों ?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शयन का अर्थ होता है सोना अर्थात निद्रा। हिन्दू धार्मिक मान्यता हैं की हिन्दू पंचांग के अनुशार आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी (अर्थात हरिशयन एकादशी) से लेकर अगले चार माह तक भगवान विष्णु शेषनाग की शैय्या पर सोने के लिये क्षीरसागर में चले जाते हैं अर्थात वे निद्रा में रहते हैं।
निद्रा में लिन होने के पश्चयात श्री हरि कार्तिक शुक्ल एकादशी (अर्थात् देवोत्थान या देवउठनी एकादशी) को वे उठ जाते हैं।

भारतीय परंपरा के अनुशार देवशयन एकादशी से लेकर कार्तिक शुक्ल दशमी इन चार माह तक कोई भी मांगलिक कार्य नहीं किया जाता। क्योकि इन कार्यों में पंच देवता कि उपस्थिति आवश्यक होती हैं भगवान विष्णु पंचदेवता में व्योम अर्थात आकाश के अधिपति हैं अतः विशेष रुप से भगवान विष्णु की उपस्थिति आवश्यक्ता होती है। श्री विष्णु की निद्रा में खलल न पड़े इस लिए सभी शुभ कार्य हरिशयन एकादशी के बाद से बंद हो जाते हैं, जो देवोत्थान एकादशी से पुनः प्रारंभ होते हैं।

(मांगलिक कार्य अर्थात गृह प्रवेश, विवाह, देवताओं की प्राण-प्रतिष्ठा, यज्ञ-हवन, संस्कार आदि कार्य को भारतिय संस्कृति में मांगलिक कार्य कहां जाता हैं।)

योगिनी एकादशी व्रत कथा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

अर्जुन ने कहा- "हे प्रभु! अब आप कृपा करके आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी की कथा सुनाइये। इस एकादशी का नाम तथा माहात्म्य क्या है? आप मुझे विस्तारपूर्वक बतायें।"

श्रीकृष्ण ने कहा- "हे पाण्डु पुत्र ! आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम "योगिनी एकादशी" है। योगिनी एकादशी के व्रत से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

यह व्रत इसलोक में भोग तथा परलोक में मुक्ति देने वाला है। हे अर्जुन! यह एकादशी तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। योगिनी एकादशीके व्रत से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

मैं तुम्हें पुराण में कही हुई कथा सुनाता हूँ, हे अर्जुन ध्यानपूर्वक श्रवण करो- कुबेर नाम का एक राजा अलकापुरी नाम की नगरी में राज्य करता था। वह परम शिव-भक्त था। राजा का हेममाली नामक एक यक्ष सेवक था, जो पूजा के लिए फूल लाया करता था। हेममाली की विशालाक्षी नाम की अति सुन्दर स्त्री थी।

एक दिन वह मानसरोवर से पुष्प लेकर आया, किन्तु कामासक्त होने के कारण पुष्पों को रखकर अपनी स्त्री के साथ रमण करने लगा। इस भोग-विलास में दोपहर हो गई।

हेममाली की राह देखते-देखते जब राजा कुबेर को दोपहर हो गई तो राजा ने क्रोधपूर्वक अपने अन्य सेवकों को आज्ञा दी कि तुम जाकर पता लगाओ कि हेममाली अभी तक पुष्प लेकर क्यों नहीं आया। जब सेवकों ने उसका पता लगा के राजा के पास आकर बताया- 'हे राजन! वह हेममाली अपनी स्त्री के साथ रमण कर रहा है।'

इस बात को सुन राजा ने हेममाली को बुलाने की आज्ञा दी। डर से काँपता हुआ हेममाली राजा के सामने उपस्थित हुआ। उसे देखकर कुबेर को अत्यन्त क्रोध आया। राजा ने कहा- 'अरे अधम! तूने मेरे परम पूजनीय देवों के देव भगवान शिवजी का अपमान किया है। मैं तुझे श्राप देता हूँ कि तू स्त्री के वियोग में तड़पे और मृत्युलोक में जाकर कोढ़ी का जीवन व्यतीत करे।

कुबेर के श्राप से वह तत्क्षण स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा और कोढ़ी हो गया। उसकी स्त्री भी उससे बिछड़ गई।

मृत्युलोक में उसने अनेक भयंकर कष्ट भोगे, उसकी बुद्धि मलिन न हुई और उसे पूर्व जन्म की भी सुध रही। अनेक कष्टों को भोगता हुआ तथा अपने पूर्व जन्म के कुकर्मो को याद करता हुआ वह हिमालय पर्वत की तरफ चल पड़ा।

चलते-चलते वह मार्कण्डेय ऋषि के आश्रम में जा पहुँचा। मार्कण्डेय ऋषि अत्यन्त तपस्वी थे। मार्कण्डेय ऋषि दूसरे ब्रह्मा के समान प्रतीत हो रहे थे और उनका वह आश्रम ब्रह्माजी की सभा के समान शोभा दे रहा था। ऋषि को देखकर हेममाली वहाँ गया और उन्हें प्रणाम करके उनके चरणों में गिर पड़ा।

हेममाली को देखकर मार्कण्डेय ऋषि ने कहा तूने कौन-से कर्म किये हैं, जिससे तू कोढ़ी हुआ और भयानक कष्ट भोग रहा है।

महर्षि की बात सुनकर हेममाली बोला हे मुनिश्रेष्ठ! मैं राजा कुबेर का अनुचर था। मेरा नाम हेममाली है। मैं प्रतिदिन मानसरोवर से फूल लाकर शिव पूजा के समय राजा कुबेर को दिया करता था। एक दिन स्त्री मोहँ में फँस जाने के कारण मुझे समय का ज्ञान ही नहीं रहा और मैं दोपहर तक पुष्प राजा तक न पहूँचा सका।

तब राजा ने क्रोध मे मुझे श्राप दिया कि तू अपनी स्त्री का वियोग और मृत्युलोक में जाकर कोढ़ी बनकर दुख भोग। इस कारण मैं कोढ़ी हो गया हूँ तथा पृथ्वी पर आकर कष्ट भोग रहा हूँ, अतः कृपा करके आप कोई ऐसा उपाय बतलाये, जिससे मेरी मुक्ति हो।

मार्कण्डेय ऋषि ने कहा 'हे हेममाली! तूने सत्य वचन कहे हैं, इसलिए मैं तुम्हारें उद्धार के लिए एक व्रत

बताता हूँ। यदि तूम आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की योगिनी नामक एकादशी का विधानपूर्वक व्रत करोगेतो तेरे सभी पाप नष्ट हो जाएँगे।

महर्षि के वचन सुन हेममाली अति प्रसन्न हुआ और महर्षि के वचनों के अनुसार योगिनी एकादशी का पूर्ण विधि-विधान से व्रत करने लगा। इस व्रत के प्रभाव से अपने पुराने स्वरूप में आ गया और अपनी स्त्री के साथ सुखपूर्वक रहने लगा।

योगिनी एकादशी हे राजन! इस योगिनी एकादशी की कथा का फल अट्ठासी सहस्र ब्राह्मणों को भोजन कराने के समान है। इसके व्रत से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में मोक्ष प्राप्त करके जीव स्वर्ग का अधिकारी बनता है।"

कथा-सार: मनुष्य को पूजा-अर्चना इत्यादि धार्मिक कार्य में आलस्य या प्रमाद नहीं करना चाहिए, अपितु मन को संयम में रखकर सदैव इष्ट सेवा करनी चाहिए।
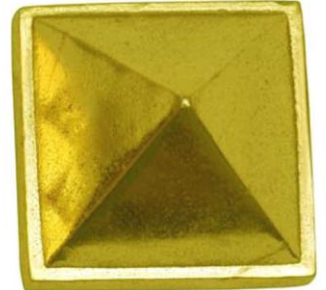
देवशयनी एकादशी व्रत कथा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

अर्जुन ने कहा- हे श्रीकृष्ण ! आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी की कथा सुनाइये। उस दिन किस देवता का पूजन होता है? उसका क्या विधान है? कृपा कर यह सब विस्तारपूर्वक बतायें।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा- "हे पाण्डु पुत्र ! एक बार नारदजी ने ब्रह्माजी से यही प्रश्न पूछा था। तब ब्रह्माजी ने कहा था कि नारद! तुमने कलियुग में प्राणिमात्र के उद्धार के लिए सर्व श्रेष्ठ प्रश्न पूछा है, क्योंकि एकादशी का व्रत सब व्रतों में उत्तम होता है। इसके व्रत से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इस एकादशी का नाम "देवशयनी एकादशी" है।

यह व्रत करने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। इस सम्बन्ध में, मैं तुम्हें एक पौराणिक कथा सुनाता हूँ, आप ध्यानपूर्वक श्रवण करो मान्धाता नाम का एक सूर्यवंशी राजा था। मान्धाता सत्यवादी, महान तपस्वी और चक्रवर्ती थामान्धाता अपनी प्रजा का ध्यान सन्तान की तरह करता था। उसके राज्य की प्रजा धन-धान्य से परिपूर्ण थी और सुखपूर्वक जीवन-यापन कर रही थी। उसके राज्य में कभी अकाल नहीं पड़ता था।

कभी किसी प्रकार की प्राकृतिक आपदा नहीं आती थी, परन्तु न जाने राजा से क्या भूल हो गई कि एक बार उसके राज्य में जबरदस्त अकाल पड़ गया और प्रजा भोजन की कमी के कारण अत्यन्त दुखी रहने लगी। राज्य में यज्ञ होने बन्द हो गए। अकाल से पीड़ित प्रजा एक दिन दुखी होकर राजा के पास जाकर प्रार्थना करने लगे हे राजन! समस्त संसार की सृष्टि का मुख्य आधार वर्षा है।

इसी वर्षा के अभाव से राज्य में अकाल पड़ गया है और अकाल से राज्य की प्रजा मर रही है। हे भूपति! आप कोई ऐसा उपाय कीजिये, जिससे हम लोगों का कष्ट धीघ्र दूर हो सके। यदि जल्द ही हमारे राज्य को अकाल से मुक्ति न मिली तो विवश होकर हमें को किसी दूसरे राज्य में शरण लेनी पड़ेगी।

प्रजाजनों की बात सुन राजा ने कहा आप लोग सत्य कह रहे हैं। वर्षा न होने से आप लोग बहुत दुखी हैं। राजा के पापों के कारण ही प्रजा को कष्ट भोगना पड़ता है। इस विषय में, मैं बहुत सोच-विचार कर रहा हूँ, फिर भी मुझे अपना कोई दोष दिखलाई नहीं दे रहा है। आप लोगों के कष्ट को दूर करने के लिए मैं बहुत उपाय कर रहा हूँ, परन्तु आप चिन्तित न हों, मैं इसका कोई-न-कोई उपाय अवश्य ही करूँगा।

राजा के वचनों को सुन प्रजाजन चले गये। राजा मान्धाता भगवान की पूजा कर कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को साथ लेकर वन की ओर चल दिया। वन मे वह ऋषि-मुनियों के आश्रमों में घूमते-घूमते अन्त में अंगिरा ऋषि के आश्रम पर पहुँच गया। रथ से उतरकर राजा आश्रम में गया। ऋषि के सम्मुख पहुँचकर राजा ने उन्हें प्रणाम किया। ऋषि ने राजा को आशीर्वाद दिया, फिर पूछा- हे राजन! आप यहाँ किस प्रयोजन से पधारे हैं, वो कहिये।

राजा ने कहा हे महर्षि! मेरे राज्य में अकाल पड़ गया है, तीन वर्ष से वर्षा नहीं हो रही है और प्रजा कष्ट भोग रही है। राजा के पापों के प्रभाव से ही प्रजा को कष्ट मिलता है, ऐसा शास्त्रों में लिखा है। मैं धर्मानुसार राज करता हूँ, फिर यह अकाल कैसे पड़ गया, इसका मुझे अभी तक पता नहीं लग सका। अब मैं आपके पास इसी समस्या की निवृत्ति के लिए आया हूँ। आप कृपा कर मेरी इस समस्या का निवारण कर मेरी प्रजा के कष्ट को दूर करने के लिए कोई उपाय बतलाइये।

सब बात सुनने के बाद ऋषि ने कहा 'हे राजन! इस सतयुग में धर्म के चारों चरण सम्मिलित हैं। यह सतयुग सभी युगों में उत्तम है। इस युग में केवल ब्राह्मणों को ही तप करने तथा वेद पढ़ने का अधिकार है, किन्तु आपके राज्य में एक शूद्र तप कर रहा है। इसी दोष के कारण आपके राज्य में वर्षा नहीं हो रही है। यदि आप प्रजा का कल्याण चाहते हैं तो शीघ्र ही

उस शूद्र का वध करवा दें। जब तक आप यह कार्य नहीं कर लेते, तब तक आपका राज्य अकाल की पीड़ा से कभी मुक्त नहीं हो सकता।' ऋषि के वचन सुन राजा ने कहा- 'हे मुनिश्रेष्ठ! मैं उस निरपराध तप करने वाले शूद्र को नहीं मार सकता। किसी निर्दोष मनुष्य की हत्या करना मेरे आचरण के विरुद्ध है और मेरी आत्मा इसे किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं करेगी। आप इस दोष से मुक्ति का कोई दूसरा उपाय बतलाइये।'

राजा को विचलित जान ऋषि ने कहा- 'हे राजन! यदि आप ऐसा ही चाहते हो तो आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की देवशयनी एकादशी का विधानपूर्वक व्रत करो। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे राज्य में वर्षा होगी और प्रजा भी पूर्व की भाँति सुखी हो जाएगी, क्योंकि इस एकादशी का व्रत सभी सिद्धियों को देने वाला है और सभी कष्टों से मुक्त करने वाला है।'

ऋषि के इन वचनों को सुनकर राजा अपने नगर वापस आ गया और विधि-विधान से देवशयनी एकादशी का व्रत किया। इस व्रत के प्रभाव से राज्य में अच्छी वर्षा हुई और प्रजा को अकाल से मुक्ति मिली।

इस एकादशी को पद्मा एकादशी भी कहते हैं। इस व्रत के करने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं, अतः मोक्ष की इच्छा रखने वाले मनुष्यों को इस एकादशी का व्रत करना चाहिए। चातुर्मास्य व्रत भी इसी एकादशी के व्रत से आरम्भ किया जाता है।"

कथा-सार: अपने कष्टों से मुक्ति पाने के लिए किसी दूसरे का अहित नहीं करना चाहिए। इष्टदेव पर श्रद्धा और आस्था रखकर सत्कर्म करने से बड़े से बड़े कष्टों से भी सरलता से मुक्ति मिल सकती है।

चातुर्मास्य व्रत कथा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

अर्जुन ने कहा- हे श्रीकृष्ण ! विष्णु का शयन व्रत की कथा सुनाइये। भगवान विष्णु का शयन व्रत किस प्रकार किया जाता है। कृपा कर विस्तारपूर्वक बताइये।"

श्रीकृष्ण ने कहा "हे पाण्डु पुत्र ! अब मैं तुम्हें भगवान श्रीहरि के शयन व्रत का विस्तार से वर्णन सुनाता हूँ। इसे ध्यानपूर्वक श्रवण करो सूर्य के कर्क राशि मे प्रवेश होने पर भगवान विष्णु शयन करते हैं और जब सूर्य तुला राशि मे आते हैं तब भगवान जागते हैं। अधिक मास के दौरान भी विधि इसी प्रकार रहती है।

आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी का विधानपूर्वक उपवास करना चाहिए। उस दिन भगवान विष्णु की मूर्ति बनानी चाहिए और चातुर्मास्य उपवास नियमपूर्वक करना चाहिए। सर्वप्रथम भगवान विष्णु की मूर्ति को स्नान कराना चाहिए। फिर श्वेत वस्त्रों को धारण कराकर भगवान विष्णु को तकियादार शैया पर शयन कराना चाहिए। भगवान विष्णु का धूप, दीप और नैवेद्यादि पूर्ण विधि-विधान से पूजन कराना चाहिए। भगवान का पूजन विद्वान ब्राह्मणों के द्वारा कराना चाहिए, विष्णु की इस प्रकार स्तुति करनी चाहिए- 'हे प्रभु! मैंने आपको शयन कराया है। आपके शयन से सम्पूर्ण विश्व सो जाता है।

इस तरह भगवान श्रीहरि के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना करनी चाहिए- 'हे प्रभु! आप जब चार माह तक शयन करें, तब तक मेरे इस चातुर्मास्य व्रत को निर्विघ्न रखें।'

भगवान विष्णु की स्तुति करने के उपरान्त शुद्ध भाव से मनुष्यों को दातुन आदि के नियम को ग्रहण करना चाहिए। भगवान विष्णु के व्रत को आरम्भ करने के पाँच काल वर्णित किए गए हैं। देवशयनी एकादशी से लेकर देवोत्यानी एकादशी तक चातुर्मास्य उपवास करना चाहिए। द्वादशी, पूर्णमाशी, अष्टमी या संक्रांति को उपवास शुरू करना चाहिए और कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को समाप्त कर देना चाहिए। इस उपवास के मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य इस उपवास को प्रति वर्ष करते हैं, वह सूर्य के समान क्रान्तियुक्त विमान पर बैठकर विष्णु लोक को जाते हैं। हे राजन! अब आप इसमें दान का अलग-अलग फल जानें-

- देव मंदिरों में रंगीन पत्ते-पत्तियां बनाने वाले मनुष्य को सात जन्मों तक ब्राह्मण जन्म मिलता है।
- चातुर्मास्य के दिनों में जो मनुष्य भगवान विष्णु को दही, दूध घी, शहद और मिश्री आदि पंचामृत से स्नान कराता है, वह वैभवशाली होकर अनन्त सुख भोगता है।
- श्रद्धा पूर्वक भूमि, स्वर्ण, दक्षिणा आदि ब्राह्मणों को दानस्वरूप देने वाला मनुष्य स्वर्ग में जाकर देवराज के समान सुख भोगता है।
- विष्णु की स्वर्ण प्रतिमा बनाकर जो मनुष्य उसका धूप, दीप, पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करता है, वह देवलोक मे जाकर अनन्त सुख भोगता है। चातुर्मास्य मे जो मनुष्य नित्य भगवान को तुलसी अर्पित करता है, वह बैठकर विष्णुलोक को जाता है।
- भगवान विष्णु का धूप-दीप से पूजन करने वाले मनुष्य को अक्षय धन की प्राप्ति होती है।
- देवशयनी एकादशी से कार्तिक के महीने तक जो मनुष्य भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, उन्हें विष्णुलोक की प्राप्ति होती है।
- जो मनुष्य हस चातुर्मास्य व्रत में संध्या के समय देवताओं तथा ब्राह्मणों को दीप दान करते हैं तथा ब्राह्मणों को स्वर्ण के पात्र में वस्त्र दान देते हैं, वह विष्णुलोक को जाते हैं। भक्तिपूर्वक भगवान का चरणामृत लेने वाले मनुष्य इस संसार के आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाते हैं।
- जो मनुष्य भगवान विष्णु के मंदिर में प्रतिदिन १०८ बार गायत्री मन्त्र का जाप करते हैं, वे कभी पापों में लिप्त नहीं होते।

- पुराण तथा धर्मशास्त्र को सुनने वाले और वेदपाठी ब्राह्मणों को वस्त्रों का दान करने वाले मनुष्य दानी, धनी, ज्ञानी और यशस्वी होते हैं।
- जो मनुष्य भगवान, विष्णु या शिवजी का स्मरण करते हैं और उनकी प्रतिमा दान करते हैं, वे समस्त पापों से मुक्त होकर गुणवान बनते हैं।
- जो मनुष्य सूर्य को अर्घ्य देते हैं और समाप्ति में गौ-दान करते हैं, वे निरोगता, दीर्घायु, यश, धन और बल पाते हैं।
- जो मनुष्य चातुर्मास्य में गायत्री मन्त्र द्वारा तिल से होम करते हैं और चातुर्मास्य समाप्त हो जाने पर तिल का दान करते हैं, उनके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और निरोग काया मिलती है तथा संस्कारी संतान की प्राप्ति होती है।
- जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत अन्न से होम करते हैं और समाप्त हो जाने पर घी, कलश और वस्त्रों का दान करते हैं, वे ऐश्वर्यशाली होते हैं। जो मनुष्य तुलसी को गले में धारण करते हैं तथा अन्त में भगवान विष्णु के निमित्त ब्राह्मणों को दान देते हैं, वह विष्णुलोक को पाते हैं।
- चातुर्मास्य उपवास में जो मनुष्य भगवान विष्णु के शयन के उपरान्त उनके मस्तक पर नित्य दूध चढ़ाते हैं और अन्त में स्वर्ण की दूर्वा दान करते हैं तथा दान देते समय जो इस प्रकार की स्तुति करते हैं कि- 'हे दूर्वे! जिस भाँति इस पृथ्वी पर शाखाओं सहित फैली हुई हो, उसी प्रकार मुझे भी अजर-अमर संतान दो', ऐसा करने वाले मनुष्य के सब पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में स्वर्ग की प्राप्ति होती है।
- जो मनुष्य भगवान शिव या विष्णु का स्मरण करते हैं, उन्हें रात्रि जागरण का फल प्राप्त होता है।
- चातुर्मास्य व्रत करने वाले मनुष्य को उत्तम ध्वनि वाला घण्ट दान करना चाहिए और इस प्रकार स्तुति करनी चाहिए- 'हे प्रभु! हे नारायण! आप समस्त पापों का नाश करने वाले हैं। मेरे न करने योग्य कार्यों को करने से जो पाप उत्पन्न हुए हैं, कृपा कर आप उनको नष्ट कीजिए।
- चातुर्मास्य में प्राजापत्य तथा चांद्रायण व्रत पद्धति का पालन भी किया जाता है। प्राजापत्य व्रत को १२ दिनों में पूर्ण करते हैं। व्रत के आरम्भ से पहले तीन दिन १२ ग्रास भोजन प्रतिदिन लेते हैं, फिर आगामी तीन दिनों तक प्रतिदिन छब्बीस ग्रास भोजन लेते हैं, इसके आगे के तीन दिनों तक २८ ग्रास भोजन लिया जाता है और इसके बाद बाकी बचे तीन दिन निराहार रहा जाता है। इस व्रत के करने से मनुष्य की इच्छित मनोकामना पूर्ण होती है। व्रत करने वाला साधक प्राजापत्य व्रत करते हुए चातुर्मास्य के हेतु उपयुक्त सभी धार्मिक कृत्य जैसे पूजन, जप, तप, दान, शास्त्रों का पठन-पाठन तथा कीर्तन आदि करता रहे।
- हे अर्जुन! इसी प्रकार चांद्रायण व्रत भी किया जाता है। अब इस व्रत का विधान सुनो- यह व्रत पूरा महीना किया जाता है। पापों से मुक्ति के लिए किया जाने वाला यह व्रत बढ़ता-घटता रहता है। इसमें अमावस्या को एक ग्रास, प्रतिपदा को दो ग्रास, द्वितीया को तीन ग्रास भोजन लेते हुए पूर्णिमा के पूर्व चौदह ग्रास और पूर्णिमा को पन्द्रह ग्रास भोजन लेना चाहिए। फिर पूर्णिमा के बाद चौदह, तेरह, बारह, ग्यारह ग्रास इस क्रम में भोजन लेते हुए भोजन की मात्रा प्रतिदिन घटानी चाहिए।
- है अर्जुन! जो प्राजापत्य और चांद्रायण व्रत करते हैं, उन्हें इसलोक में धन सम्पत्ति, शारीरिक निरोगता तथा भगवान की कृपा प्राप्त होती है। इसमें कांसे का पात्र और वस्त्र दान की शास्त्रीय व्यवस्था है। चातुर्मास्य के समापन पर दक्षिणा से सुपात्र ब्राह्मणों को सन्तुष्ट करने का विधान है।
- चातुर्मास्य व्रत के पूर्ण हो जाने के बाद ही गौ-दान करना चाहिए। यदि गौ-दान न कर सकें तो वस्त्र दान अवश्य करना चाहिए।
- नित्य जो मनुष्य ब्राह्मणों को प्रणाम करते हैं, उनका जीवन सफल हो जाता है और वे सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं। चातुर्मास्य व्रत पूर्ण होने पर जो ब्राह्मणों को भोजन कराता है, उसकी आयु तथा धन में वृद्धि होती है।

- जो मनुष्य अलंकार सहित बछड़े वाली कपिला गाय वेदपाठी ब्राह्मणों को दान करते हैं, वे चक्रवर्ती आयुवान, संतानवान राजा होते हैं और स्वर्गलोक में प्रलय के अन्त तक देवराज के समान राज्य करते हैं।
- सूर्यदेव तथा गणेशजी को जो मनुष्य नित्य प्रणाम करते हैं, उनकी आयु तथा लक्ष्मी बढ़ती है और यदि गणेशजी प्रसन्न हो जाएँ तो वे मनोवांछित फल पाते हैं। सूर्यदेव और गणेशजी की प्रतिमा ब्राह्मण को देने से समस्त कार्यों की सिद्धि होती हैं।
- दोनो ऋतुओं में जो मनुष्य शिवजी की प्रसन्नता के लिए तिल और वस्त्रों के साथ तांबे का पात्र दान करते हैं, उनके यहाँ स्वस्थ व सुन्दर शिवभक्त संतान उत्पन्न होती है। चातुर्मास्य व्रत के पूर्ण होने पर चाँदी या तांबा-पात्र गुड़ और तिल के साथ दान करना चाहिए।
- भगवान विष्णु के शयन करने के उपरान्त जो मनुष्य यथा शक्ति वस्त्र और तिल के साथ स्वर्ण का दान करते हैं, उनके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और वे इसलोक में भोग तथा परलोक में मोक्ष प्राप्त करते हैं।
- चातुर्मास्य व्रत के पूर्ण होने पर जो मनुष्य शैया दान करते हैं, उनको अक्षय सुख की प्राप्ति होती है और वे कुबेर के समान धनवान होते हैं।
- जो मनुष्य वर्षा ऋतु में गोपीचंदन देते हैं, उन पर भगवान प्रसन्न होते हैं। चातुर्मास्य में एक बार भोजन करने वाला, भूखे को अन्न देने वाला, भूमि पर शयन करने वाला अभीष्ट को प्राप्त करता है। इन्द्रिय निग्रह कर, चातुर्मास्य व्रत का अनन्त फल प्राप्त किया जाता है।
- श्रावण में शाक, भादों में दही, आश्विन में दुग्ध और कार्तिक में दाल का त्याग करने वाले मनुष्य निरोगी होते हैं।
- चातुर्मास्य व्रत का नियमपूर्वक पालन करने पर ही उद्यापन करना चाहिए। जब प्रभु से शैया त्यागने का अनुरोध करें, तब विशेष पूजन करना चाहिए। इस अवसर पर निरभिमानी विद्वान ब्राह्मण को अपनी क्षमता के अनुसार दान-दक्षिणा देकर प्रसन्न करना चाहिए। हे अर्जुन! देवशयनी एकादशी और चातुर्मास्य का माहात्म्य अनन्त पुण्य फलदायी है, इस व्रत के करने से मानसिक शान्ति और भगवान विष्णु के प्रति श्रद्धा बढ़ती है।

कथा-सार

चातुर्मास्य भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त करने के लिए चार मास तक किया जाने वाला व्रत है। इस व्रत को देवशयनी से देवोत्थान एकादशियों से जोड़ने से भगवान के प्रति आस्था सुदृढ़ होती है। चातुर्मास्य में जब भगवान विष्णु शयन करते हैं, उस समय कोई भी मांगलिक कार्य नहीं किए जाते, मांगलिक कार्यों का शुभारम्भ देवोत्थानी एकादशी से पुनः प्रारम्भ होता है।

***

श्रावन मास में रुद्राक्ष धारण करना परम कल्याणकारी हैं?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

रुद्र के अक्ष से प्रकट होने के कारण रुद्राक्ष को साक्षात शिव का लिंगात्मक स्वरुप माना गया हैं। विद्वानो का कथ हैं की रुद्राक्ष में एक विशिष्ट प्रकार की दिव्य उर्जा शक्ति समाहित होती हैं। प्रायः सभी ग्रंथकारों व विद्वानो ने रुद्राक्ष को असह्य पापों को नाश करने वाला माना हैं।

इस लिए शिव माहा पुराण में उल्लेख किया गया हैं।

शिवप्रियतमो ज्ञेयो रुद्राक्षः परपावनः।
दर्शनात्स्पर्शनाज्जाप्यात्सर्वपापहरः स्मृतः॥

अर्थात: रुद्राक्ष अत्यंत पवित्र, शंकर भगवान का अति प्रिय हैं। उसके दर्शन, स्पर्श व जप द्वारा सर्व पापों का नाश होता हैं।

रुद्राक्ष धारणाने सर्व दुःखनाशः

अर्थात: रुद्राक्ष असंखय दुःखों का नाश करने वाला हैं।

रुद्राक्ष शब्द के उच्चारण से गोदा का फल प्राप्त होता हैं।

रुद्राक्ष के विषय में रुद्राक्ष जावालोपनिषद में स्वयं भगवान कालग्नी का कथन हैं:

तद्रुद्राक्षे वाग्विषये कृते दशगोप्रदानेन
यत्फलमवाप्नोति तत्फलमश्नुते ।
करेण स्पृष्टवा धारणमात्रेण द्विसहस्त्र
गोप्रदान फल भवति ।
कर्णयोर्धार्यमाणे एकादश सहस्त्र गोप्रदानफलं भवति ।
एकादश रुद्रत्वं च गच्छति ।
शिरसि धार्यमाणे कोटि ग्रोप्रदान फलं भवति ।

अर्थात: रुद्राक्ष शब्द के उच्चारण से दश गोदान (गाय का दान) का फल प्राप्त होता हैं। रुद्राक्ष का स्पर्श करने व धारण करने से दो हजार गोदान (गाय का दान) का फल मिलता हैं। दोनो कानो पर रुद्राक्ष धारण करने से ग्यारा हजार गोदान (गाय का दान) का फल मिलता हैं। गले में रुद्राक्ष धारण करने से करोडो़ गोदान (गाय का दान) का फल मिलता हैं।

अलग-अलग रंगों के रुद्राक्ष में अलग-अलग प्रकार की शक्तियां निहित होती हैं। इस लिये रंगो के अनुसार रुद्राक्ष का प्रभाव मनुष्य पर पड़ता हैं।

ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्राश्चेति शिवाज्ञया ।
वृक्षा जाताः पृथिव्यां तु तज्जातीयोः शुभाक्षमः ।
श्वेतास्तु ब्राह्मण ज्ञेयाः क्षत्रिया रक्तवर्णकाः ॥
पीताः वैश्यास्तु विज्ञेयाः कृष्णाः शूद्रा उदाहृताः ॥

अन्य श्लोक में उल्लेख हैं:

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा जाता ममाज्ञया ॥
रुद्राक्षास्ते पृथिव्यां तु तज्जातीयाः शुभाक्षकाः ॥
श्वेतरक्ताः पीतकृष्णा वर्णाज्ञेयाः क्रमाद्बुधैः ॥
स्वजातीयं नृभिर्धार्यं रुद्राक्षं वर्णतः क्रमात् ॥

श्वेत रंग: सफेद रंग वाले रुद्राक्ष में सात्त्विक उर्जायुक्त ब्रहम स्वरुप शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए ब्राहमण को श्वेत वर्ण का रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रक्तवर्णीय (ताम्र के समान आभायुक्त) : रक्त रंग की आभायुक्त रुद्राक्ष में राजसी उर्जायुक्त शत्रुसंहारक शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए क्षत्रिय को रक्तवर्णीय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

पीतवर्णीय (कांचन या पीली आभायुक्त) : पीले रंग की आभायुक्त रुद्राक्ष में राजसी व तामसी दोनों प्रकार की संयुक्त उर्जा शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए वैश्य को पीतवर्णीय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

कृष्णवर्णीय: काले रंग की आभायुक्त रुद्राक्ष में तामसी उर्जायुक्त सेवा व समर्पणात्मक शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए शूद्र को कृष्णवर्णीय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

यह शास्त्रों मे उल्लेखित विद्वान ऋषियों का निर्देश है कि मनुष्य को अपने वर्ण के अनुरूप श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्ण के रुद्राक्ष धारण करने चाहिए। विशेषकर

भगवान शिव के भक्तो के लिये तो रुद्राक्ष को धारण करना परम आश्यक हैं।

वर्णैस्तु तत्फलं धार्यं भुक्तिमुक्तिफलेप्सुभिः ॥
शिवभक्तैर्विशेषेण शिवयोः प्रीतये सदा ॥
सर्वाश्रमाणांवर्णानां स्त्रीशूद्राणां।
शिवाज्ञया धार्याः सदैव रुद्राक्षाः॥

सभी आश्रमों (ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ, गृहस्थ और संन्यासी) एवं वर्णों तथा स्त्री और शूद्र को सदैव रुद्राक्ष धारण करना चाहिये, यह शिवजी की आज्ञा है!

रुद्राक्ष को तीनों लोकों में पूजनीय हैं। रुद्राक्ष के स्पर्श से लक्ष गुणा तथा रुद्राक्ष की माला धारण करने से करोड़ गुना फल प्राप्त होता हैं। रुद्राक्ष की माला से मंत्र जप करने से अनंत कोटि फल की प्राप्ति होती हैं।

जिस प्रकार समस्त लोक में शिवजी वंदनीय एवं पूजनीय हैं उसी प्रकार रुद्राक्ष को धारण करने वाला व्यक्ति संसार में वंदन योग्य हैं।

रुद्राक्ष धारण फलम्

रुद्राक्षा यस्य गोत्रेषु ललाटे च त्रिपुण्ड्रकम्।
स चाण्डालोऽपि सम्म्पूज्यः सर्ववर्णोत्तमो भवेत्॥

अर्थातः जिसके शरीर पर रुद्राक्ष हो और ललाट पर त्रिपुण्ड हो, वह चाण्डाल भी हो तो सब वर्णों में उत्तम पूजनीय हैं।

अभक्त हो या भक्त हो, नींच से नीच व्यक्ति भी यदी रुद्राक्ष को धारण करता हैं, तो वह समस्त पातको के मुक्त हो जाता हैं।

जो मनुष्य नियमानुशार सहस्त्ररुद्राक्ष धारण करता हैं उसे देवगण भी वंदन करते हैं।

उच्छिष्टो वा विकर्मो वा मुक्तो वा सर्वपातकैः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्राक्षस्पर्शनेन वै॥

अर्थातः जो मनुष्य उच्छिष्ट अथवा अपवित्र रहते हैं या बुरे कर्म करने वाल व अनेक प्रकार के पापों से युक्त वह मनुष्य रुद्राक्ष का स्पर्श करते ही समस्त पापों से छूट जाते हैं।

कण्ठे रुद्राक्षमादाय म्रियते यदि वा खरः।
सोऽपिरुद्रत्वमाप्नोति किं पुनर्भुवि मानवः।

अर्थातः कण्ठ में रुद्राक्ष को धारण कर यदि खर(गधा) भी मृत्यु को प्राप्त हो जाए तो वह भी रुद्र तत्व को प्राप्त होता हैं, तो पृथ्वीलोक के जो मनुष्य हैं उनके बारे में तो कहना ही क्या! आर्थात् सर्व सांसारिक मनुष्यों को स्वर्ग-प्राप्ति व लोक परलोक सुधारने के लिए रुद्राक्ष अवश्य धारण करने योग्य हैं।

रुद्राक्षं मस्तके धृत्वा शिरः स्नानं करोति यः।
गंगास्नानंफलं तस्य जायते नात्र संशयः॥

अर्थातः रुद्राक्ष को मस्तक पर धारण करके जो मनुष्य सिर से स्नान करता हैं उसे गंगा स्नान के समान परम पवित्र स्नान का फल प्राप्त होता हैं तथा वह मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता हैं इसमें संशय नहीं हैं।

रुद्राभिषेक से कामनापूर्ति

संकलन गुरुत्व कार्यालय

धर्म शास्त्रों में विविध कामनाओं की पूर्ति हेतु रुद्राभिषेक के साथ निर्धारित सामग्री या द्रव्यों के प्रयोग से कार्य की सिद्धि होती हैं।

- शिवलिंग पर जल से रुद्राभिषेक करने पर वर्षा होती हैं।
- शिवलिंग पर कुशोदक से रुद्राभिषेक करने से असाध्य रोगों को शांत होते हैं।
- शिवलिंग पर दही से रुद्राभिषेक करने से भूमि-भवन-वाहन प्राप्त होते हैं।
- शिवलिंग पर गन्ने के रस से रुद्राभिषेक करने से लक्ष्मी प्राप्ति होती हैं।
- शिवलिंग पर शहद एवं घी के मिश्रण से रुद्राभिषेक करने से लक्ष्मी प्राप्ति व धन वृद्धि होती हैं।
- शिवलिंग पर तीर्थ के जल से रुद्राभिषेक करने से मोक्ष मार्ग प्रशस्त होता हैं।
- शिवलिंग पर दूध से रुद्राभिषेक करने से संतान की प्राप्ति होती हैं। जिस दंपत्ति को संतान प्राप्ति के योग नहीं बन रहे हो, काकवन्ध्या दोष अर्थात एक संतान के पश्चयात दूसरी संतान न होना अथवा मृतवत्सा दोष अर्थात संतानें पैदा होते मर जाती हो उनहें गाय के दूध से रुद्राभिषेक करना चाहिए।
- शिवलिंग पर शीतल जल से रुद्राभिषेक करने से ज्वर की शांति होती हैं।
- शिवलिंग पर दूध से रुद्राभिषेक करने से प्रमेह रोग (मधुमेह) रोग की शांति होती हैं।
- शिवलिंग पर गाय के दूध एवं शक्कर के मिश्रण से रुद्राभिषेक करने से जडबुद्धि व्यक्ति विद्वान बन जाता हैं।
- शिवलिंग पर सरसों के तेल से रुद्राभिषेक करने से शत्रु पर विजय प्राप्त होती हैं।
- शिवलिंग पर शहद से रुद्राभिषेक करने से यक्ष्मा अर्थात तपेदिक रोग की निवृत्ति होती हैं।
- शिवलिंग पर शहद से रुद्राभिषेक करने से बडे से बडे पातकों अर्थात पाप का नाश होता हैं।
- शिवलिंग पर गाय के घी से रुद्राभिषेक करने से आरोग्य लाभ होता हैं।

शास्त्रोक्त एवं विद्वानो के मत से शिवलिंगका विधिवत अभिषेक करने पर अभीष्ट निश्चय ही पूर्ण होता हैं।

यजुर्वेद में उल्लेखित विधि-विधान से रुद्राभिषेक करना अत्याधिक लाभप्रद मानागया हैं। लेकिन जो भक्त इस विधि-विधान को करने में असमर्थ हैं अथवा इस विधान से परिचित नहीं हैं वह भक्त शिवजी के षडाक्षती मंत्र ॐ नम:शिवाय का जप करते हुए रुद्राभिषेक कर सकते हैं।

विशेष कामना पूर्ति हेतु किये गये रुद्राभिषेक के शास्त्रोक्त नियम:

विद्वानो के मत से किसी विशेष कामना की पूर्ति हेतु किये जाने वाले रुद्राभिषेक हेतु शिव वास का विचार करने पर कामना पूर्ति हेतु किये गये अनुष्ठान में निश्चित मनोवांछित सफलता प्राप्त होती हैं।

शिववास विचार :

तिथिं च द्विगुणी कृत्यपंचाभिश्च समन्वितम्।।
सप्तभिस्तुहरीभ्दिगंशेषं शिववास उच्चयते।।
सके कैलाश वासंचद्वितीयं गौरिन्नि हो।।
तृतीये वृषभारूढ़ चतुर्थे च समास्थित पंचमे भोजनेचैव क्रीडायान्तुरसात्मके।।
शून्येश्मशानकेचैव शिववासंच योजयेत्।।

- प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की प्रतिपदा (१), अष्टमी (८), अमावस्या तथा शुक्लपक्ष की द्वितीया (२)व नवमी (९) के दिन भगवान शिव माता पार्वती के साथ होते हैं, इस तिथि में रुद्राभिषेक करने से सुख-समृद्धि अवश्य प्राप्त होती हैं।
- कृष्णपक्ष की चतुर्थी (४), एकादशी (११) तथा शुक्लपक्ष की पंचमी (५) व द्वादशी (१२) तिथियों में भगवान शिव कैलास पर्वत पर निवास करते हैं, इस तिथि में रुद्राभिषेक करने से परिवारी सुख में वृद्धि होती हैं।
- कृष्णपक्ष की पंचमी (५), द्वादशी (१२) तथा शुक्लपक्ष की षष्ठी (६)व त्रयोदशी (१३) तिथियों में भगवान शिव नंदी पर सवार होकर संपूर्ण विश्व में भ्रमण करते हैं, इस तिथि में रुद्राभिषेक करने से अभीष्ट कार्य सिद्ध होता है।
- कृष्णपक्ष की सप्तमी (७), चतुर्दशी (१४) तथा शुक्लपक्ष की प्रतिपदा (१), अष्टमी (८), पूर्णिमा (१५) में भगवान शिव श्मशान में ध्यान रत रहते हैं, इस तिथि में रुद्राभिषेक करने से कार्य में सिद्ध नहीं होता व यजमान पर महाविपत्ति आने की संभावना अधिक हो जाती हैं।
- कृष्णपक्ष की द्वितीया (२), नवमी (९) तथा शुक्लपक्ष की तृतीया (३) व दशमी (१०) में भगवान शिव देवलोक में देवताओं की सभा में उनकी समस्याएं सुनते हैं, इस तिथि में रुद्राभिषेक करने से संताप अर्थात दुःख में वृद्धि होती हैं।
- कृष्णपक्ष की तृतीया (३), दशमी (१०) तथा शुक्लपक्ष की चतुर्थी (४) व एकादशी (११)में भगवान शिव क्रीडारत रहते हैं। इन तिथियों में सकाम रुद्रार्चनसंतान को कष्ट दे सकता है।
- कृष्णपक्ष की षष्ठी (6), त्रयोदशी (13) तथा शुक्लपक्ष की सप्तमी (7) व चतुर्दशी (14) में रुद्रदेवभोजन करते हैं, इस तिथि में रुद्राभिषेक करने से पीडाएं उत्पन्न हो सकती हैं।

नोट: शिववास का विचार निर्धारित कार्य की पूर्ति हेतु अथवा अभिष्ट कामनाओं की पूर्ति हेतु विचार किया जाता हैं। निष्काम भाव से की जाने वाला शिव पूजा-अर्चना अथवा रुद्राभिषेक हेतु शिववास विचार करने की आवश्यका नहीं होती।

(द्वादशज्योतिलिंग क्षेत्र एवं तीर्थ स्थान में तथा शिवरात्रि, प्रदोष, सावन के सोमवार-इत्यादि विशेष शुभ-अवसरो अथवा पर्वो में शिववास विचार करने की आवश्यका नहीं होती।)

रुद्राभिषेकस्तोत्र

ॐ सर्वदेवताभ्यो नम :

ॐ नमो भवाय शर्वाय रुद्राय वरदाय च ।
पशूनाम् पतये नित्यमुग्राय च कपर्दिने ॥१॥
महादेवाय भीमाय त्र्यम्बकाय च शान्तये ।
ईशानाय मखघ्नाय नमोऽस्त्वन्धकघातिने ॥२॥
कुमारगुरवे तुभ्यम् नीलग्रीवाय वेधसे ।
पिनाकिने हिवष्याय सत्याय विभवे सदा ॥३॥
विलोहिताय धूम्राय व्याधायानपराजिते ।
नित्यनीलिशखण्डाय शूलिने दिव्यचक्षुषे ॥४॥
हन्त्रे गोप्त्रे त्रिनेत्राय व्याधाय वसुरेतसे ।
अचिन्त्यायाम्बिकाभर्त्रे सर्वदेवस्तुताय च ॥५॥
वृषध्वजाय मुण्डाय जिटने ब्रह्मचारिणे ।
तप्यमानाय सिलले ब्रह्मण्यायाजिताय च ॥६॥
विश्वात्मने विश्वसृजे विश्वमावृत्य तिष्ठते ।
नमो नमस्ते सेव्याय भूतानां प्रभवे सदा ॥७॥
ब्रह्मवक्त्राय सर्वाय शंकराय शिवाय च ।
नमोऽस्तु वाचस्पतये प्रजानां पतये नम: ॥८॥
नमो विश्वस्य पतये महतां पतये नम: ।
नम :सहस्रिशरसे सहस्रभुजमृत्यवे ।
सहस्रनेत्रपादाय नमोऽसंख्येयकर्मणे॥९॥
नमो हिरण्यवर्णाय हिरण्यकवचाय च ।
भक्तानुकिम्पने नित्यं सिध्यतां नो वर :प्रभो ॥१०॥
एवं स्तुत्वा महादेवं वासुदेव :सहार्जुन: ।
प्रसादयामास भवं तदा हयस्त्रोपलब्धये ॥११॥

॥ इति रुद्राभिषेकस्तोत्रम् संपूर्ण ॥

प्रयोग : तांबेके लोटे में शुध्ध पानी या गंगाजल, गाय का कच्चा दूध, सफेद या काले तिल इन सबको लोटे में मिलाकर शिवलिंग उपर दूध की धारा चालु रखकर उपरोक्त लघुरुद्राभिषेक स्तोत्र का पाठ ग्यारा बार श्रध्धा पूर्वक करने से जीवन में आयी हुई और आनेवाली समस्त प्रकार के कष्टो से छुटकारा मिलता हैं और सुख शांति एवं समृद्धि की प्राप्ति होती है । इसमें लेस मात्र सदेह नहीं हैं।

शिवपूजन का महत्व क्या हैं?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म में सप्ताह के हर दिवस का संबंध किसी न किसी देवता व ग्रह से माना गया हैं।

रविवार के दिन सूर्य की उपासना की जाती है जिसका कारक ग्रह सूर्य हैं। सोमवार को भगवान शिव कि उपासना कि जाती हैं, जिसका कारक ग्रह चंद्रमा हैं। मंगलवार को भगवान गणपति और हनुमानजी कि उपासना कि जाती हैं, जिसका कारक ग्रह मंगल हैं। बुधवार को गणेश पूजन व बुध कि पूजा कि जाती हैं, जिसका कारक ग्रह बुध हैं। बृहस्पतिवार को श्री हरि का पूजन करने का विधान हैं जिसके कारक ग्रह देव गुरु बृहस्पति हैं। शुक्रवार के दिन मां लक्ष्मी एवं माता संतोषी कि उपासना कि जाती हैं, जिसका कारक ग्रह शुक्र हैं। शनिवार को मां महाकाली, हनुमान, भैरव व कर्म के देवता शनिदेव की उपासना की जाती हैं जिसके कारक ग्रह शनिदेव हैं।

इस प्रकार भरतीय परंपरा में विभिन्न वार में संबंधित देवि-देवता का पूजन-अर्चन विशेष फलदायि सिद्ध होने की मान्यता पौराणिक काल से चली आरही हैं।

धर्म ग्रंथो में भगवान शिव की उपासना पूरे सप्ताह के दिन करने से विभिन्न फलो कि प्राप्ति होने का सविस्तार उल्लेख किया गया हैं।

परंतु यदि किसी शिव भक्त व श्रद्धालु के मन में एसे प्रश्न अवश्य उठते हैं, कि शिवजी की आराधना व हेतु सोमवार का विशेष आग्रह क्यो किया जाता हैं!

आपके मार्गदर्शन हेतु शास्त्रोक्त विधान के कुछ अंश यहा प्रस्तुत हैं।

सप्ताह के दिनों की उत्पत्ति भगवान शिव से ही प्रकट होने का उल्लेख हमारे ग्रंथो में किया गया हैं।

शिव-महापुराण में उल्लेख हैं:

आदिसृष्टौ महादेवः सर्वज्ञः करुणाकरः॥
सर्वलोकोपकारार्थं वारान्कल्पितवान्प्रभुः॥

(श्रीशिवमहापुराणम्)

प्राणियों की आयु निर्धारण करने के लिए भगवान शिव ने काल की कल्पना कि थी। काल से ही देव-मानव से लेकर समस्त छोटे-बडे जीवों की आयुष्य का अनुमान लगाया जाता है। काल को ही व्यवस्थित करने के लिए भगवान शिव ने सप्तवारों की कल्पना कि थी।

संसारवैद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषजभेषजम् ।
आय्वारोग्यदं वारं स्ववारं कृतवान्प्रभुः ॥
संपत्कारं स्वमायाया वरं च कृतवांस्ततः ॥
जनने दुर्गतिक्रांते कुमारस्य ततः परम् ॥
आलस्यदुरितक्रांत्यै वारं कल्पितवान्प्रभुः ॥
रक्षकस्य तथा विष्णोर्लोकानां हितकाम्यया ॥
पुष्ट्यर्थं चैव रक्षार्थं वारं कल्पितवान्प्रभुः ॥
आयुष्करं ततो वारमायुषां कर्तुरेव हि ॥
त्रैलोक्यसृष्टिकर्तुर्हि ब्रह्मणः परमेष्ठिनः ॥
जगदायुष्यसिद्ध्यर्थं वारं कल्पितवान्प्रभुः ॥
आदौ त्रैलोक्यवृद्ध्यर्थं पुण्यपापे प्रकल्पिते ॥
तयोः कर्त्रोस्ततो वारमिंद्रस्य च यमस्य च ॥

(श्रीशिवमहापुराणम्)

सर्वप्रथम भगवान शिव सूर्य के रूप में प्रकट होकर आरोग्य के लिए प्रथमवार की कल्पना की। अपनी सर्वसौभाग्यदात्री शक्ति के लिए द्वितीयवार की कल्पना की। उसके बाद अपने ज्येष्ठ पुत्र कुमार के लिए अत्यन्त सुन्दर तृतीयवार की कल्पना की। उसके बाद सर्वलोकों की रक्षा का भार वहन करने वाले परम मित्र मुरारी के लिए चतुर्थवार की कल्पना की। देवगुरु बृहस्पति के नाम से पच्चमवार की कल्पना कर उसका स्वामी यम को बनाया। असुरगुरु शुक्र के नाम से छठे

वार की कल्पना करके उसका स्वामी ब्रह्मा को बना दिया एवं सप्तमवार की कल्पना कर उसका स्वामी इंद्र को बना दिया। नक्षत्र चक्र में भी सात मूल ग्रह ही दृष्टिगोचर होते हैं, इसलिए भगवान् ने सूर्य से लेकर शनि तक के लिए सातवारों की कल्पना की गई। क्योकि राहु और केतु छाया ग्रह होने के कारण दृष्टिगत न होने से उनके वार की कल्पना नहीं की गई।

शिवमहापुराण ग्रंथ के अनुशार भगवान शिव की उपासना सप्ताह के हर वार को अलग फल प्रदान करती है।

आरोग्यंसंपद चैव व्याधीनांशांतिरेव च।
पुष्टिरायुस्तथाभोगोमृतेर्हानिर्यथाक्रमम्॥

(शिवमहापुराण)

अर्थात: स्वास्थ्य, संपत्ति, रोग-नाश, पुष्टि, आयु, भोग तथा मृत्यु हानि से रक्षा के लिए रविवार से लेकर शनिवार तक भगवान शिव की आराधना करनी चाहिए।

विद्वानो के अनुशार सभी वारों में शिव फलप्रद हैं फिर भी लोग सोमवार का आग्रह इस लिये करते हैं, क्योकि की मनुष्य मात्र को भौतिक सुख-सम्पत्ति से अत्यधिक प्रेम होता है, इसलिए उसने शिव के लिए सोमवार का चयन किया।

विद्वानो के मतानुशार यदि कोई श्रधालु सप्ताह के सात दिन शिव पूजन नही कर सके तो उन्हे सोमवार को शिव पूजन अवश्य करनी चाहिये। आखिर ऐसा क्यों? शिव के लिए सोमवार का आग्रह ही क्यों? आपके ज्ञान की वृद्धि के लिये शास्त्रोक्त विधान प्रस्तुत हैं।

पुराणों के अनुसार सोम का अर्थ चंद्रमा होता है और चंद्रमा भगवान् शङ्कर के शीश पर मुकुटायमान होकर अत्यन्त सुशोभित होता है। लगता है कि भगवान् शङ्कर ने जैसे कुटिल, कलंकी, कामी, वक्री एवं क्षीण चंद्रमा को उसके अपराधी होते हुए भी क्षमा कर अपने शीश पर स्थान दिया वैसे ही भगवान् हमें भी सिर पर नहीं तो चरणों में जगह अवश्य देंगे। यह याद दिलाने के लिए सोमवार को ही लोगों ने शिव का वार बना दिया।

विद्वानो के मत से सोम (SOM) में ॐ (OM) समाहित है। धार्मिक ग्रंथो के अनुशार भगवान शिव ॐ कार स्वरूप हैं।

सोम का अर्थ चंद्रमा होता है और चंद्रमा मन का प्रतीक है। जड़ मन में चेतनता जाग्रत करने वाले परमेश्वर ही है। इसलिए देवाधिदेव महादेव की उपासना सोमवार को की जाती है। भगवान शिव का सतो गुण, रजो गुण, तमो गुण तीनों पर एक समान अधिकार हैं। शिवने अपने मस्तक पर चंद्रमा को धारण कर शशि शेखर कहलाये हैं। चंद्रमा से शिव को विशेष स्नेह होने के कारण चंद्र सोमवार का अधिपति हैं इस लिये शिव का प्रिय वार सोमवार हैं।

शिव कृपा हेतु उत्तम श्रावण मास

संकलन गुरुत्व कार्यालय

भारत वर्ष में अनादिकाल से विभिन्न पर्व मनाये जाते हैं, एवं भगवान शिव से संबंधी अनेक व्रत-त्यौहात मनाए जाते रहे हैं। इन उतसवो में श्रावण मास का अपना विशेष महत्व हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुशार श्रावण मास में चार सोमवार (कभी-कभी पांच सोमवार होते हैं) , एक प्रदोष व्रत तथा एक शिवरात्रि शामिल होत हैं इन सबका संयोग एकसाथ श्रावण महीने में होता हैं, इसलिए श्रावण का महीना शिव कृपा हेतु शीघ्र शुभ फल देने वाला मानागया हैं।

शिवपुराण के अनुशार श्रावण माह में द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने से समस्त तीर्थों के दर्शन का पूण्य एक साथ हि प्राप्त हो जाता हैं।

पद्म पुराण के अनुशार श्रावण माह में द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने से मनुष्य कि समस्त शुभ कामनाएं पूर्ण होती हैं एवं उसे संसार के समस्त सुखों कि प्ताप्ति होकर उसे शिव कृपा से मोक्ष कि प्राप्ति हो जाती हैं।

- प्रथम सोमवार को- कच्चे चावल एक मुट्ठी शिव लिंग पर चढाया जाता हैं।
- दूसरे सोमवार को- सफेद तिल्ली एक मुट्ठी शिव लिंग पर चढाया जाता हैं।
- तीसरे सोमवार को- ख़ड़े मूँग एक मुट्ठी शिव लिंग पर चढाया जाता हैं।
- चौथे सोमवार को- जौ एक मुट्ठी शिव लिंग पर चढाया जाता हैं।
- यदि पाँचवाँ सोमवार आए तो एक मुट्ठी कच्चा सत्तू चढाया जाता हैं।

शिव की पूजा में बिल्वपत्र अधिक महत्व रखता है। शिव द्वारा विषपान करने के कारण शिव के मस्तक पर जल की धारा से जलाभिषेक शिव भक्तों द्वारा किया जाता है। शिव भोलेनाथ ने गंगा को शिरोधार्य किया है।

श्रावण मास में शिवपुराण, शिवलीलामृत, शिव कवच, शिव चालीसा, शिव पंचाक्षर मंत्र, शिव पंचाक्षर स्तोत्र, महामृत्युंजय मंत्र का पाठ एवं जाप करना विशेष लाभ प्रद होता हैं।

श्रावण मास के सोमवार व्रत से भौतिक कष्टो से मुक्ति मिलती हैं

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्रावण मास इस साल 17 जुलाई से 15 अगस्त के बीच रहेगा। इस दौरान 22 जुलाई , 29 जुलाई, 5 अगस्त, 12 अगस्त को चार सोमवार श्रावण मास में पड़ रहे हैं। कई प्रदेशो में 15 अगस्त से 30 अगस्त के बीच रहेगा, इस कारण इन प्रदेशों में 5 अगस्त, 12 अगस्त, 19 अगस्त, 26 अगस्त को चार सोमवार श्रावण मास में पड़ रहे हैं। श्रावण मास के समस्त सोमवारों के दिन व्रत करने से पूरे साल भर के सोमवार के व्रत समान पुण्य फल मिलता हैं। सोमवार के व्रत के दिन प्रातःकाल ही स्नान इत्यादि से निवृत्त होकर, शिव मंदिर, देवालय घरमें जाकर शिव लिंग पर जल, दूध, दही, शहद, घी, चीनी, श्वेत चंदन, रोली(कुमकुम), बिल्व पत्र(बेल पत्र), भांग, धतूरा आदि सें अभिषेक किया जाता हैं।

- पति कि लंबी आयु कि कामना हेतु सुहागन स्त्रिय को सोमवार के दिन व्रत रखने से शिव कृपा से अखंड सौभाग्य कि प्राप्ति होती हैं।
- बच्चो को सोमवार का व्रत कर शिव मंदिर में जलाभिषेक करने से विद्या और बुद्धि की प्राप्ति होती हैं।
- रोजगार प्राप्ति हेतु दूध एवं जल चढाने से रोजगार प्राप्ति कि संभावना बढ जाती हैं।
- व्यापारी एवं नौकरी करने वाले व्यक्ति यदि श्रावण मास के सोमवार का व्रत करने से धन-धान्य और लक्ष्मी की वृद्धि होती हैं।

व्रत के दिन गंगाजल से स्नान कर अथवा जल में थोडा गंगा जल मिला कर स्नान करने के पश्चयात शिव लिंग पर जल चढ़ाया जाता हैं। आज भी उत्तर एवं पूर्व भारत में कांवड़ परम्परा का विशेष महत्व हैं। श्रद्धालु गंगाजल अथवा पवित्र नदि सें कावड़ में जल भरकर तीर्थ स्थल तक कांवड़ लेकर जाते हैं। इसका उद्देश्य शिवजीकी कृपा प्राप्त करना हैं।

आज के भौतिकतावादि युग में व्यक्ति अधिक से अधिक भौतिक सुख साधनो को जुटाते हुए कभी-कभी व्यक्ति नैतिकता का दामन छोड कर अनैतिकता का दामन थाम लेता हैं जिस के फल स्वरुप अपने प्रतिकूल कर्मो के कारण व्यक्ति को भविष्य में अनेक समस्याओं से ग्रसित होते देखा गया हैं।

व्यक्ति द्वारा किये गये प्रतिकूल कर्मो के बंधन से मुक्त कराने कि समर्थता भगवान भोले भंडारी शिव कि कृपा प्राप्ति से व्यक्ति के द्वारा संचित पाप नष्ट हो जाते हैं।
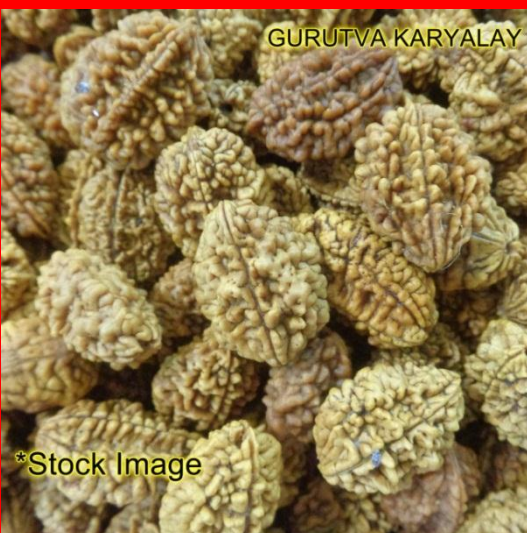
क्यों शिव को प्रिय हैं बेल पत्र?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

क्या हैं बेल पत्र अथवा बिल्व-पत्र?

बिल्व-पत्र एक पेड़ की पत्तियां हैं, जिस के हर पत्ते लगभग तीन-तीन के समूह में मिलते हैं। कुछ पत्तियां चार या पांच के समूह की भी होती हैं। किन्तु चार या पांच के समूह वाली पत्तियां बड़ी दुर्लभ होती हैं। बेल के पेड को बिल्व भी कहते हैं। बिल्व के पेड़ का विशेष धार्मिक महत्व हैं। शास्त्रोक्त मान्यता हैं कि बेल के पेड़ को पानी या गंगाजल से सींचने से समस्त तीर्थो का फल प्राप्त होता हैं एवं भक्त को शिवलोक की प्राप्ति होती हैं। बेल कि पत्तियों में औषधि गुण भी होते हैं। जिसके उचित औषधीय प्रयोग से कई रोग दूर हो जाते हैं। भारतिय संस्कृति में बेल के वृक्ष का धार्मिक महत्व हैं, क्योकि बिल्व का वृक्ष भगवान शिव का ही रूप है। धार्मिक ऐसी मान्यता हैं कि बिल्व-वृक्ष के मूल अर्थात उसकी जड़ में शिव लिंग स्वरूपी भगवान शिव का वास होता हैं। इसी कारण से बिल्व के मूल में भगवान शिव का पूजन किया जाता हैं। पूजन में इसकी मूल यानी जड़ को सींचा जाता हैं।

धर्मग्रंथों में भी इसका उल्लेख मिलता हैं-

बिल्वमूले महादेवं लिंगरूपिणमव्ययम्। य: पूजयति पुण्यात्मा स शिवं प्राप्नुयाद्॥
बिल्वमूले जलैर्यस्तु मूर्धानमभिषिञ्चति। स सर्वतीर्थस्नात :स्यात्स एव भुवि पावन:॥ (शिवपुराण((

भावार्थ :बिल्व के मूल में लिंगरूपी अविनाशी महादेव का पूजन जो पुण्यात्मा व्यक्ति करता है, उसका कल्याण होता है। जो व्यक्ति शिवजी के ऊपर बिल्वमूल में जल चढ़ाता है उसे सब तीर्थो में स्नान का फल मिल जाता है।

बिल्व पत्र तोड़ने का मंत्र

बिल्व-पत्र को सोच-समझ कर ही तोड़ना चाहिए। बेल के पत्ते तोड़ने से पहले निम्न मंत्र का उच्चरण करना चाहिए-

अमृतोद्भव श्रीवृक्ष महादेवप्रिय:सदा।
गृह्यामि तव पत्राणि शिवपूजार्थमादरात्॥ -(आचारेन्दु)

भावार्थ :अमृत से उत्पन्न सौंदर्य व ऐश्वर्यपूर्ण वृक्ष महादेव को हमेशा प्रिय है। भगवान शिव की पूजा के लिए हे वृक्ष में तुम्हारे पत्र तोड़ता हूं।

कब न तोड़ें बिल्व कि पत्तियां?

- विशेष दिन या विशेष पर्वो के अवसर पर बिल्व के पेड़ से पत्तियां तोड़ना निषेध हैं।
- शास्त्रों के अनुसार बेल कि पत्तियां इन दिनों में नहीं तोड़ना चाहिए-
- बेल कि पत्तियां सोमवार के दिन नहीं तोड़ना चाहिए।
- बेल कि पत्तियां चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावस्या की तिथियों को नहीं तोड़ना चाहिए।
- बेल कि पत्तियां संक्रांति के दिन नहीं तोड़ना चाहिए।

अमारिक्तासु संक्रान्त्यामष्टम्यामिन्दुवासरे ।
बिल्वपत्रं न च छिन्द्याच्छिन्द्याच्चेन्नरकं व्रजेत ॥) लिंगपुराण

भावार्थ: अमावस्या, संक्रान्ति के समय, चतुर्थी, अष्टमी, नवमी और चतुर्दशी तिथियों तथा सोमवार के दिन बिल्व-पत्र तोड़ना वर्जित है।

चढ़ाया गया पत्र भी पूनः चढ़ा सकते हैं?

शास्त्रों में विशेष दिनों पर बिल्व-पत्र तोडकर चढ़ाने से मना किया गया हैं तो यह भी कहा गया है कि इन दिनों में चढ़ाया गया बिल्व-पत्र धोकर पुन :चढ़ा सकते हैं।

अर्पितान्यपि बिल्वानि प्रक्षाल्यापि पुन :पुन:।
शंकरायार्पणीयानि न नवानि यदि चित्॥) स्कन्दपुराण(और (आचारेन्दु)

भावार्थ: अगर भगवान शिव को अर्पित करने के लिए नूतन बिल्व-पत्र न हो तो चढ़ाए गए पत्तों को बार-बार धोकर चढ़ा सकते हैं।

बेल पत्र चढाने का मंत्र

भगवान शंकर को विल्वपत्र अर्पित करने से मनुष्य कि सर्वकार्य व मनोकामना सिद्ध होती हैं। श्रावण में विल्व पत्र अर्पित करने का विशेष महत्व शास्त्रो में बताया गया हैं।

विल्व पत्र अर्पित करते समय इस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए:

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्।
त्रिजन्मपापसंहार, विल्वपत्र शिवार्पणम्

भावार्थ: तीन गुण, तीन नेत्र, त्रिशूल धारण करने वाले और तीन जन्मों के पाप को संहार करने वाले हे शिवजी आपको त्रिदल बिल्व पत्र अर्पित करता हूं।

* शिव को बिल्व-पत्र चढ़ाने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

श्रावण सोमवार व्रत कैसे करें?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

श्रावण सोमवार के व्रत में भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा-अर्चना करने का विधान हैं।
विद्वानो के अनुसार श्रावण सोमवार का व्रत-पूजन-विधि इस प्रकार हैं।
श्रावण सोमवार के दिव व्रत करने वाले व्यक्ति को सूर्योदय के समय से व्रत प्रारंभ कर लेना चाहिये एवं दिन में एक बार सात्विक भोजन करना चाहिए। व्रत के दिन शिव पार्वति कि पूजा अर्चना के उपरांत व्रत कि समाप्ति से पूर्व सोमवार व्रत की कथा सुनने का विधान हैं।

श्रावण सोमवार को ब्रहम मुहूर्त में उठ कर।
पूरे घर की साफ-सफाई कर स्नान इत्यादि से निवृत्त हो कर।
पूरे घर में गंगा जल छिड़कें।
घर में पूजा स्थान पर भगवान शिव की मूर्ति या चित्र स्थापित करें।
पूजन कि सारी तैयारी होने के बाद निम्न मंत्र से संकल्प लें-

'मम क्षेमस्थैर्यविजयारोग्यैश्वर्याभिवृद्धयर्थं सोमव्रतं करिष्ये'

इसके पश्चात निम्न मंत्र से ध्यान करें-

'ध्यायेन्नित्यंमहेशं रजतगिरिनिभं चारुचंद्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलांग परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववंद्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

ध्यान के पश्चात 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र से शिवजी का तथा 'ॐ नमः शिवायै' मंत्र से पार्वतीजी का षोडशो उपचार से पूजन करना चाहिये।
पूजन के पश्चात श्रावण सोमवार व्रत कथा सुनें।
तत्पश्चात आरती कर प्रसाद बाटदे।
इसकें पश्चयात हि भोजन या फलाहार ग्रहण करना चाहिये ।

श्रावण सोमवार व्रत का फल

सोमवार व्रत उपरोक्त विधि से करने पर भगवान शिव तथा माता पार्वती कि कृपा बनी रहती हैं।
व्यक्ति का जीवन सुख समृद्धि एवं एश्वर्य युक्त होकर व्यक्ति के समस्त संकटो नाश हो जाते हैं।

रुद्राक्ष धारण से कामनापूर्ति

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

रुद्राक्ष को भगवान शंकर का प्रिय आभूषण माना जाता हैं। यहीं कारण हैं की शिव भक्त अपने गले व भुजा में रुद्राक्ष धारण करते हैं। क्योकी विद्वानो के मत से शास्त्रोक्त मान्यता है की दीर्घायु प्रदान करने वाला तथा मनुष्य को अकाल मृत्यु से रक्षा करने वाला हैं।

गृहस्थ व्यक्तियों के लिए रुद्राक्ष अर्थ और काम को प्रदान करता हैं तो साधुसंत व संन्यासियों के लिए रुद्राक्ष धर्म और मोक्ष को प्रदान करने वाला माना जाता हैं। रुद्राक्ष को मनुष्य की अनेक शारीरिक और मानसिक व्याधियों को दूर कर मानसिक शांति प्रदान करने वाला माना जाता हैं। योगाभ्यास से जुडे साधनो के लिये रुद्राक्ष कुंडलिनी जागृत करने में सहायक सिद्ध होता हैं।

रुद्राक्ष के धारण करता को तंत्रिक व भूत-प्रेत इत्यादि का असर नहीं होता हैं। शास्त्रोक्त मत से रुद्राक्ष के दर्शन मात्र से ही पापों का क्षय हो जाता हैं। जिसके घर में रुद्राक्ष की पूजा की जाती है वहाँ लक्ष्मीजी सदा वास करती हैं। साधारण रुप से रुद्राक्ष का प्रभाव 1-2 दिन में प्रभाव दिखने लगता है। परंतु विशेष परिस्थित व कार्य उद्देश्य की पूर्ति हेतु धारण किया गया रुद्राक्ष 45 दिन में अपना प्रभाव दिखता हैं।

रुद्राक्ष धारण के शास्त्रोक्त नियम और मत

- सभी वर्ण के लोग रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।
- धारण करते समय ॐ नमः शिवाय का जाप करना लाभप्रद रहेगा।
- रुद्राक्ष को अपवित्रता के साथ धारण न करें।
- रुद्राक्ष को पूर्ण भक्ति और शुद्धता से ही धारण करें।
- क्योकि रुद्राक्ष अटूट श्रद्धा और विश्वास से धारण करने पर ही फल प्राप्त होता हैं।
- रुद्राक्ष को लाल, पीला या सफेद धागे में धारण करना लाभप्रद रहेगा।
- चाँदी, सोना या तांबे में भी धारण किया जा सकता हैं।
- रुद्राक्ष हमेशा विषम संख्या में धारण करना लाभप्रद होता हैं।

रोजगार के अनुशार रुद्राक्ष चुनाव

शिव भक्तो के जीवन में सर्व श्रेष्ठ सफलता के लिए रुद्राक्ष धारण करना सर्वोत्तम माना गया हैं।

- राजनेता को पूर्ण सफलता हेतु तेरह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- सरकारी व कानूनी कार्य से जुड़े जुडे लोगो को एक व तेरह मुखी रुद्राक्ष के साथ में चांदी के मोती जडवा कर धारण करना चाहिए।
- वकालत के कार्यो से जुडे लोगो को चार व तेरह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- बैंक, विमा इत्यादि से जुडे लोगो को ग्यारह व तेरह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- पुलिस विभाग से जुडे लोगो को नौ व तेरह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- चिकित्सक या चिकित्सा विभाद से जुडे लोगो को तीन व चार मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

- शैल्य चिकित्सा से जुडे लोगो को दस, बारह व चौदह मुखी रुद्रा धारण करना चाहिए। मैकेनिकल कार्यो से जुडे लोगो को दस व ग्यारह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- सिविल इंजीनियर कार्यो से जुडे लोगो को आठ व चौदह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- इलेक्ट्रिकल इंजीनियर से जुडे लोगो को सात व ग्यारह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- कंप्यूटर सॉफ्टवेयर इंजीनियर से जुडे लोगो को चौदह मुखी व गौरी शंकर रुद्राक्ष कंप्यूटर हार्डवेयर इंजीनियर से जुडे लोगो को नौ व बारह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- शिक्षण कार्यो से जुडे लोगो को छह व चौदह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- ठेकेदारी के कार्यो से जुडे लोगो को ग्यारह, तेरह व चौदह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- भूमि-भवन इत्यादी कार्यो से जुडे लोगो को एक, दस व चौदह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- दुकानदार को दस, तेरह व चौदह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- उद्योगपति को बारह व चौदह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- होटेल, रेस्टोरेंट के कार्यो से जुडे लोग एक, तेरह व चौदह मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

1 से 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक मुखी:

एक मुखी रुद्राक्ष साक्षात ब्रह्म स्वरुप हैं।

- एक मुखी रुद्राक्ष काजू के समान अर्थात अर्धचंद्राकार स्वरुप में प्राप्त होते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष गोल आकार में सरलता से प्राप्त नहीं होता हैं। क्योकि गोलाकार में मिलना दुर्लभ मानागया हैं। बडे सौभाग्य किसी मनुष्य को गोल एक मुखी रुद्राक्ष के दर्शन एवं प्राप्त से होता हैं।
- इस लिए एकमुखी रुद्राक्ष भोग व मोक्ष प्रदान करने वाला हैं।
- जो मनुष्य ने एकमुखी रुद्राक्ष धारण किया हो उस पर मां लक्ष्मी हमेशा कृपा वर्षाती हैं। या जिस घर में एकमुखी रुद्राक्ष का पूजन होता हों वहां लक्ष्मी का स्थाई वास होता हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने वाले मनुष्य के घर में धन-धान्य, सुख-समृद्धि-वैभव, मान-सम्मान प्रतिष्ठा में वृद्धि करने वाला हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने वाले मनुष्य की सभी प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
- जिस स्थान पर एकमुखी रुद्राक्ष होता हैं वहां से समस्त प्रकार के उपद्रवो का नाश होता हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से अंतःकरण में दिव्य-ज्ञान का संचार होता हैं।
- भगवान शिव का वचन हैं की एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से ब्रह्महत्या व पापों का नाश करने वाला हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष सर्व प्रकार कि अभीष्ट सिद्धियों को प्रदान करने वाला हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से धारण कर्ता में सात्त्विक उर्जा में वृद्धि करने में सहायक, मोक्ष प्रदान करने समर्थ हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करने वाला होता हैं।

एक मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ एं हं औं ऐ ॐ॥

दोमुखी रुद्राक्ष:

- दो मुखी रुद्राक्ष बादाम के समान आकार में व गोलाकार स्वरुप दोनो स्वरुपों में प्राप्त होता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष साक्षात अर्द्धनारीश्वर का स्वरुप हैं। कुछ ग्रंथो में दो मुख वाले रुद्राक्ष को देव देवेश्वर कहा गया हैं।
- शिव-शक्ति की निरंतर कृपा प्राप्ति हेतु दोमुखी रुद्राक्ष विशेष लाभकारी होता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मानसिक शांति प्राप्त होकर तामसिक प्रवृत्तियों का नाश होता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण कर्ता को आध्यात्मिक उन्नति के लिए सहायता प्रदान करता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से उदर संबंधित समस्याओं से मुक्ति मिलती हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष आकस्मिक दुर्घटनाओं से रक्षा करने में सहायक सिद्ध होता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से गौ हत्या के पापों का नाश करता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष से अनेक प्रकार की व्याधियां स्वतः ही शांत हो जाती हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष मनुष्य की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला एवं शुभ फल प्रदान करने वाला हैं।
- यदि दो मुखी रुद्राक्ष को गर्भवती स्त्री अपनी कमर पर या भुजा पर धारण करती हैं तो गर्भावस्था के नौ महिने तक उसकी अनजाने भय, तोने-तोटके, बेहोशी, हिस्टीरिया, बूरे स्वप्न आदि से रक्षा होती हैं। साथा ही एक रुद्राक्ष को गर्भवती स्त्री के बिस्तर पर तकिए के नीचे एक डिब्बि में रखने से अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

दो मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ क्षीं ह्रीं क्षौं व्रीं ॐ॥

तीन मुखी रुद्राक्ष:

- तीन मुखी रुद्राक्ष थोडा लंबे आकार में व गोलाकार स्वरुप दोनो स्वरुपों में प्राप्त होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष साक्षात अग्नि का स्वरुप हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से गंभिर बीमारियों से रक्षा होती हैं।
- यदि कोई लम्बे समय से रोगग्रस्त हैं तो उसके तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से रोग से शीघ्र मुक्ति मिलती हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना पीलिया के रोगी के लिए अत्याधिक लाभकारी होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से स्फूर्ति, कार्यक्षमता में वृद्धि होती हैं।
- जानकारों के मतानुशार तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से स्त्री हत्या इत्यादि पापों का नाश होता हैं। कुछ विद्वानो का मत हैं की तीन मुखी रुद्राक्ष ब्रह्म हत्या के पाप को नाश करने में भी समर्थ हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शीत ज्वर दूर होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अद्भुत विद्या की प्राप्ति होती हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना मंदबुद्धि बच्चों के बौधिक विकास के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध होता हैं।
- निम्न रक्तचाप को दूर करने में भी तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अग्निदेव की कृपा प्राप्त होती हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष से अग्नि भय से रक्षण होता हैं।

तीनमुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ रं हूं ह्रीं हूं ओं॥

चार मुखी रुद्राक्ष:

- चार मुखी रुद्राक्ष साक्षात ब्रह्मा का स्वरुप हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से बौधिक शक्ति का विकास होता हैं।
- विद्याध्ययन करने वाले बच्चो के बौधिक विकास एवं स्मरण शक्ति के विकास के लिए चार मुखी रुद्राक्ष उत्तम फलदायि सिद्ध होता हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से वाणी में मिठास आती हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मानसिक विकार दूर होते हैं।
- विद्वानो का कथन है की चार मुखी रुद्राक्ष के दर्शन एवं स्पर्श से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थो की शीघ्र प्राप्ति होती हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से जीव हत्या के पापों का नाश होता हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष को अभीष्ट सिद्धियों को प्राप्त करने में सहायक व कल्याणकारी हैं।

चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ व्रां क्रां तां हां ईं॥

पंच मुखी रुद्राक्ष:

- पंच मुखी रुद्राक्ष साक्षात कालाग्नि का स्वरुप हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार के अनिष्ट एवं कश्टो से मुक्ति मिलती हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष मनोवांचित फल प्राप्त करने हेतु उत्तम हैं।
- पंचमुखी रुद्राक्ष धारण करने से सुख-शांति प्राप्त होती हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष शत्रु भय से रक्षा करने के लिए भी लाभदायक मानाजाता हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष धारण करने से जहरीले जीव-जंतुओं से रक्षा होती हैं।
- विष के प्रभाव को कम करने में पंचमुखी रुद्राक्ष अति लाभदायक हैं।
- महापुरुषो का कथन हैं की पंचमुखी रुद्राक्ष धारण करने से परस्त्री गमन, अभक्ष्य भोजन का भक्षण

करने के पापों से मुक्ति मिलती हैं। चित्त का शुद्धि करण हो जाता हैं।

- पंचमुखी रुद्राक्ष को पंचतत्वों का प्रतीक मानाजाता हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष को शास्त्रकारों ने आयुवर्द्धक एवं सर्वकल्याणकारी व मंगलप्रदायक माना हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष अभीष्ट कार्यो की सिद्धि हेतु लाभदाय होता हैं।

जन सामान्य में एसी भ्रमक धारणाएं हैं की पंच मुखी रुद्राक्ष सस्ता एवं आसानी से मिलने के कारण यह अधिक लाभकारी नहीं होता। लेकिन वास्तविकता इससे परे हैं जानकारों का मत हैं की पंचमुखी सर्वाधिक लाभकारक होता हैं। मनुष्य को अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु आवश्यक्ता के अनुशार रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

पंच मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रां आं क्ष्म्यैं स्वाहा॥

छः मुखी रुद्राक्ष:

- छः मुखी रुद्राक्ष साक्षात कार्तिकेय का स्वरुप हैं। कुछ विद्वानो के मत से छः मुखी रुद्राक्ष गणेशजी का प्रतिक हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से माता पार्वती शीघ्र प्रसन्न होती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से विद्या प्राप्ति में सफलता प्राप्त होती हैं। अतः छः मुखी रुद्राक्ष विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहता हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से वाक शक्ति में निपुणता आती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से व्यवसायीक कार्यों में लाभ प्राप्त होता हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष से मनुष्यको भौतिक सुख-संपन्नता प्राप्त होती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने दारिद्र्यता दूर होती हैं।
- जानकारों नें छः मुखी रुद्राक्ष को धारण करना मूर्च्छा जैसी बीमारी में लाभदायक बताया हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करने में सफलता प्राप्त होती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अपार शक्ति प्राप्त होती हैं व मनुष्यकी सकल इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।
- माहापुरुषो का कथन हैं की छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से भ्रूणहत्या आदि पापों का निवारण होता हैं।
- इस लिए इसे शत्रुंजय रुद्राक्ष कहां जाता हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार की अभीष्ट सिद्धियां प्राप्ति में सहायता मिलती हैं।

छः मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं॥

सात मुखी रुद्राक्ष:

- सात मुखी रुद्राक्ष सप्त मातृकाओं का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। इसे शास्त्रों में अनंग स्वरुप भी कहा गया हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से सभी प्रकार के रोग शांत हो जाते हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से दीर्धायु की प्राप्ति होती हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अभीष्ट सिद्धियां प्राप्त होती हैं।
- महापुरुषो का का कथन हैं की सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सोने की चोरी, गौवध जैसे अनेक पापों को नाश होता हैं।
- मान्यता हैं की सात मुखी रुद्राक्ष धारण कर्ता की अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार से रक्षा करता हैं।
- विद्वानो के मतानुशार सात मुखी रुद्राक्ष अकाल मृत्यु के भय को टालता हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शीघ्र उत्तम भूमि की प्राप्ति होती हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से विष प्रभाव से रक्षा होती हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष को सन्निपात, मिर्गी रोग, शीत-ज्वर इत्यादि रोगों को शांत करने में लाभदायक होता हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से दरिद्रता दूर होती हैं।

- सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से व्यक्ति को यश-मानसम्मान की वृद्धि होती हैं।

सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ हुं क्रीं ह्रीं सौं॥

आठ मुखी रुद्राक्ष:

- आठ मुखी रुद्राक्ष गणेशजी का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। आठ मुखी रुद्राक्ष को भैरव का स्वरुप भी माना जाता हैं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष अष्ट सिद्धियों को प्रदान करने वाला हैं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से विभिन्न प्रकार के विघ्नों को दूर करने वाला हैं।
- जिन लोगों का चित्त अधिकतर चंचल रहता हैं उनके आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से एकाग्रता बढाने में लाभप्राप्त होता हैं।
- महापुरुषो का का कथन हैं की आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से असत्य भाषण, मानकूटादिक व परस्त्रीजन्य पापों का नाश होता हैं।
- विद्वानो का मत हैं की आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करके गणेशजी की पूजा-अर्चना एवं साधना करने से वह शीघ्र फलप्रद होती हैं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सर्व देवगण प्रसन्न होते हैं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से पूर्णाअयुष्य की प्राप्ति होती हैं।

आठ मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रां ग्रीं लं आं श्रीं॥

नव मुखी रुद्राक्ष:

- नव मुखी रुद्राक्ष नवदुर्गा का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। नव मुखी रुद्राक्ष को भैरव का प्रतिक भी माना जाता हैं। नव मुखी रुद्राक्ष को नवग्रह, नव-नाथों एवं नवधा भक्ति का प्रतीक भी समझा जाता हैं।
- नवमुखी रुद्राक्ष नव निधियों के प्रदान करने वाला हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष को हजारों-लाखो-करोड़ो पापों को नष्ट करने वाला कहा गया हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष मृत्यु भय दूर होता हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से सभी प्रकार की साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त होती हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य के मान-सम्मान, प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष को कार्य सिद्ध के लिए उत्तम माना जाता हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से शत्रुपक्ष पराजित होता हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष कोर्ट-कचेरी के कार्यो में सफलता प्राप्त करने के लिए उत्तम माना जाता हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष धारण करने से हृदय रोग नियंत्रण करने में विशेष लाभप्रद होता हैं।

नव मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रीं वं यं रं लं॥

दश मुखी रुद्राक्ष:

- दश मुखी रुद्राक्ष भगवान विष्णु का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। दश मुखी रुद्राक्ष को यम एवं दस दिक्पाल का स्वरुप भी माना गया हैं।
- एसा मानाजाता हैं कि दस मुखी रुद्राक्ष में भगवान विष्णु के दशों अवतारों की शक्ति समाहित होती हैं।
- तांत्रिक साधनाओं में दस मुखी रुद्राक्ष का विशेष महत्व माना जाता हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से भूत-प्रेत, मारण-मोहन इत्यादि तांत्रिक बाधाओं के दुष्प्रभाव प्रभाव नहीं होता।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से आकस्मिक दुर्घटनाओं से रक्षा होती हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शीघ्र ही मनुष्य का यश दशों दिशाओं में फेल जाता हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य की सकल मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
- रोगों को शांत करने में दस मुखी रुद्राक्ष से विशेष लाभदायक होता हैं।

- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से ग्रहों के अशुभ प्रभाव शांत होते हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष सभी प्रकार की बाधाओं का नाश कर, मनुष्य को सुख-शांति व समृद्धि प्रदान करता हैं

दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं व्रीं ॐ॥

एकादश मुखी रुद्राक्ष:

- एकादश मुखी रुद्राक्ष को एकादश रुद्र का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। इन्द्र को भी एकादश मुखी रुद्राक्ष के देवता माना गया हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सुख-समृद्धि व सौभाग्य की वृद्दि होती हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष को संतान सुख के लिए लाभकारी माना गया हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष सौभाग्यवती स्त्रीयों को अपने पति कल्याण के लिए धारण करना विशेष शुभ फलदायी माना गया हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सर्वत्र विजय की प्राप्ति होती हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष में समाज को मोहित करने की विशेष शक्ति होती हैं।
- उत्तम संतान की प्राप्ति के लिए भी एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से संक्रामक रोगों से सुरक्षा होती हैं। व यदि कोई व्यक्ति संक्रामक रोग से पीडित हैं तो शीघ्र स्वस्थ्य लाभ हेतु एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- शास्त्रों में उल्लेख हैं की एकादश मुखी रुद्राक्ष को मस्तक में या शिखा पर धारण करने पर अश्वमेघ यज्ञ करने के समान फल, वाजपेय यज्ञ करने के समान फल एवं चंद्र ग्रहण में किए गए दान पुण्य के समान फल प्राप्त होते हैं।

एकादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ रुं मूं यूं औं॥

द्वादश मुखी रुद्राक्ष:

- द्वादश मुखी रुद्राक्ष को भगवान विष्णु का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष में सूर्य आदि देवता वास करते हैं। इस लिए इसे आदित्यरुद्राक्ष भी कहते हैं।
- विष्णु भक्तों यदि द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करते हैं तो भगवान शीघ्र प्रसन्न होते हैं।
- ब्रह्मचार्य व्रत के पालन के लिए द्वादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करना विशेष उपयोगी सिद्ध होता हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य के ओज-तेज की वृद्धि होती हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से विभिन्न प्रकारकी व्याधियों से स्वतःमुक्ति मिलने लगती हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से जहरीले जीव-जंतु, चोर-लुटेरों, अग्नि भय, आदि शुद्र शक्तियों से सुरक्षा होती हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य के समस्त पापों का नाश हो जाता हैं।
- विद्वानो का मत हैं की द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से दरिद्र से दरिद्र मनुष्य का भी समृद्धि को प्राप्त कर लेता हैं।
- ३२ मणकों की माला कंठ में धारण करने से मनुष्य के गो-वध, मनुष्य वध एवं चोरी इत्यादि पापों का नाश होता हैं।
- विद्वानो का कथन हैं की द्वादश मुखी रुद्राक्ष को शिखा पर धारण करने से मनुष्य के मस्तक प्र आदित्य विराजमान हो जाते हैं।

द्वादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रीं श्रौं धृणि: श्रौं॥

त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष:

- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को कामदेव का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं।

- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को इन्द्र का स्वरुप भी माना गया हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से मनुष्य की संपूर्ण मनोकामनाएं सिद्ध होती हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अतुल्य धन-संपत्तिअ प्राप्त होती हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से व्यक्ति संपूर्ण धातुओं की रसायनादिक सिद्धियों का ज्ञाता बन जाता हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से व्यक्ति को मान-सम्मान, यश, पद-प्रतिष्ठा, आकर्षक व्यक्तित्व की प्राप्ति होती हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष का विशेषज्ञ की सलाह से दूध के साथ प्रयोग लाभकरी सिद्ध होता हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से समस्त प्रकार की शक्ति व सिद्धियों की प्राप्ति में विशेष सहायता प्राप्त होती हैं।

त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ईं यां आप ओम्॥

चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष:

- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को शिव का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। विद्वानो ने चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को हनुमान का स्वरुप भी माना हैं। इस लिए चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को हनुमान रुद्राक्ष के नाम से भी जाना जाता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से सकल अभीष्ट सिद्धियों की प्राप्ति होती हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष की उत्पत्ति के बारे में उल्लेख हैं की भगवान शिव के डमरु से चौदह प्रत्याहार निकले थे तथा कुछ प्रमुख शास्त्रों में भी एक से चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष का उल्लेख मिलता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार के कष्टों का निवारण हो जाता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से मनुष्य विभिन्न रोगों से मुक्ति मिलती हैं और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से व्यक्ति को सभी क्षेत्रों में उन्नति प्राप्त होती हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से परम पद की प्राप्ति होती हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से शनि ग्रह से संबंधित अशुभ प्रभाव की शांति होती हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शत्रु व दुष्टों का नाश होता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण को मस्तक पर धारण करने से समस्त पापों का नाश होता हैं।

चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ औं स्फे खव्फैं हस्त्रौं हसव्फ्रैः॥

जो मनुष्य पृथ्वी पर रुद्राक्ष को मंत्र सहित धारण करते हैं वे रुद्रलोक में जाकर वास करते हैं तथा जो मंत्र रहित रुद्राक्ष धारण करते हैं वे घोर नरक के भागी होते हैं। उपरोंक्त रुद्राक्षों को धारण करने वाले मनुष्य को भूत, प्रत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि का भय नहीं रहता। रुद्राक्ष धारण करता मनुष्य पर देवी-देवता शीघ्र प्रसन्न होते हैं। व मनुष्य की समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं।

शिव महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

धर्म शास्त्रो में भगवान शिव को जगत पिता बताया गया हैं। क्योकि भगवान शिव सर्वव्यापी एवं पूर्ण ब्रह्म हैं। हिंदू संस्कृति में शिव को मनुष्य के कल्याण का प्रतीक माना जाता हैं। शिव शब्द के उच्चारण या ध्यान मात्र से ही मनुष्य को परम आनंद प्रदान करता हैं। भगवान शिव भारतीय संस्कृति को दर्शन ज्ञान के द्वारा संजीवनी प्रदान करने वाले देव हैं। इसी कारण अनादि काल से भारतीय धर्म साधना में निराकार रूप में होते हुवे भी शिवलिंग के रूप में साकार मूर्ति की पूजा होती हैं। देश-विदेश में भगवान शिव के मंदिर हर छोटे-बडे शहर एवं कस्बो में मोजुद हैं, जो भगवान महादेव की व्यापकता को एवं उनके भक्तो कि आस्था को प्रकट करते हैं।

भगवान शिव एक मात्र एसे देव हैं जिसे भोले भंडारी कहा जाता हैं, भगवान शिव थोडी सी पूजा-अर्चना से ही वह प्रसन्न हो जाते हैं। मानव जाति की उत्पत्ति भी भगवान शिव से मानी जाती हैं। अतः भगवान शिव के स्वरूप को जानना प्रत्येक शिव भक्त के लिए परम आवश्यक हैं। भगवान भोले नाथ ने समुद्र मंथन से निकले हुए समग्र विष को अपने कंठ में धारण कर वह नीलकंठ कहलाये।

शिव उपासना का महत्व

भगवान शिव का सतो गुण, रजो गुण, तमो गुण तीनों पर एक समान अधिकार हैं। शिवने अपने मस्तक पर चंद्रमा को धारण कर शशि शेखर कहलाये हैं। चंद्रमा से शिव को विशेष स्नेह होने के कारण चंद्र सोमवार का अधिपति हैं इस लिये शिव का प्रिय वार सोमवार हैं। शिव कि पूजा-अर्चना के लिये सोमवार के दिन करने का विशेष महत्व हैं, इस दिन व्रत रखने से या शिव लिंग पर अभिषेक करने से शिवकी विशेष कृपा प्राप्त होती हैं।

सभी सोमवार शिव को प्रिय हैं, परंतु पूरे श्रावण मास के सभी सोमवार को किये गये व्रत-पूजा अर्चना अभिषेक पूरे वर्ष किये गये व्रत के समान फल प्रदान करने वाली होती हैं।

शिव को श्रावण मास इस लिये अधिक प्रिय हैं क्योकि श्रावण मास में वातावरण में जल तत्व कि अधिकता होती हैं एवं चंद्र जलतत्व का अधिपती ग्रह हैं। जो शिव के मस्तक पर सुशोभित हैं।

शिव उपासना के विभिन्न रूप वेदों में वर्णित हैं। शिव मंत्र उपासना में पंचाक्षरी "नम :शिवाय "या "ॐ नम :शिवाय "और महामृत्युंजय इत्यादि मंत्रों के जप का भी श्रावण मास में विशेष महत्व हैं, श्रावण मास में किय गये मंत्र जाप कई गुना अधिक प्रभाव शाली सिद्ध होते देखे गये हैं। जहा शिव पंचाक्षरी मंत्र मनुष्य को समस्त भौतिक सुख साधनो कि प्राप्ति हेतु विशेष लाभकारी हैं, वहीं महामृत्युंजय मंत्र के जप से मनुष्य के सभी प्रकार के मृत्यु भय-रोग-कष्ट-दरिद्रता दूर होकर उसे दीर्घायु की प्राप्ति होती हैं। महामृत्युंजय मंत्र, रूद्राभिषेक आदि का सामुहिक अनुष्ठान करने से अतिवृष्टि, अनावृष्टि एवं महामारी आदि से रक्षा होती हैं एवं अन्य सभी प्रकार के उपद्रवों की शांति होती हैं।

शिवलिंग पूजा का महत्व क्या हैं?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शिवमहा पुराण के सृष्टिखंड अध्याय १२ श्लोक ८२ से ८६ में ब्रह्मा जी के पुत्र संतकुमार जी वेदव्यास जी को उपदेश देते हुए कहते हैं, हर गृहस्थ मनुष्य को अपने सद्गुरू से विधिवत दीक्षा लेकर पंचदेवों (गणेश, सूर्य, विष्णु, दुर्गा, शिव) की प्रतिमाओं का नित्य पूजन करना चाहिए। क्योंकि शिव ही सबके मूल हैं, इस लिये मूल (शिव) को सींचने से सभी देवता तृप्त हो जाते हैं परन्तु सभी देवताओं को प्रसन्न करने पर भी शिव प्रसन्न नहीं होते। यह रहस्य केवल और केवल सद्गुरू कि शरण में रहने वाले व्यक्ति ही जान सकते हैं।

- सृष्टि के पालनकर्ता भगवान विष्णु ने एक बार सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा के साथ निर्गुण, निराकार शिव से प्रार्थना की, प्रभु आप कैसे प्रसन्न होते हैं। भगवान शिव बोले मुझे प्रसन्न करने के लिए शिवलिंग का पूजन करो। जब किसी प्रकार का संकट या दु:ख हो तो शिवलिंग का पूजन करने से समस्त दु:खों का नाश हो जाता है।(शिवमहापुराण सृष्टिखंड)
- जब देवर्षि नारद ने भगवान श्री विष्णु को शाप दिया और बाद में पश्चाताप किया तब विष्णु ने नारदजी को पश्चाताप के लिए शिवलिंग का पूजन, शिवभक्तों का सत्कार, नित्य शिवशत नाम का जाप आदि उपाय सुझाये। (शिवमहापुराण सृष्टिखंड)
- एक बार सृष्टि रचयिता ब्रह्माजी सभी देवताओं को लेकर क्षीर सागर में श्री विष्णु के पास परम तत्व जानने के लिए पहोच गये। श्री विष्णु ने सभी को शिवलिंग की पूजा करने का सुझाव दिया और विश्वकर्मा को बुलाकर देवताओं के अनुसार अलग-अलग द्रव्य पदार्थ के शिवलिंग बनाकर देने का आदेश देकर सभी को विधिवत पूजा से अवगत करवाया। (शिवमहापुराण सृष्टिखंड)
- ब्रह्मा जी ने देवर्षि नारद को शिवलिंग की पूजा की महिमा का उपदेश देते हुवे कहा। इसी उपदेश से जो ग्रंथ कि रचना हुई वो शिव महापुराण हैं। माता पार्वती के अत्यन्त आग्रह से, जनकल्याण के लिए निर्गुण, निराकार शिव ने सौ करोड़ श्लोकों में शिवमहापुराण की रचना कि। जो चारों वेद और अन्य सभी पुराण शिवमहापुराण की तुलना में नहीं आ सकते। भगवान शिव की आज्ञा पाकर विष्णु के अवतार वेदव्यास जी ने शिवमहापुराण को २४६७२ श्लोकों में संक्षिप्त किया हैं।
- जब पाण्ड़व वनवास में थे , तब कपट से दुर्योधन पाण्ड़वों को दुर्वासा ऋषि को भेजकर तथा मूक नामक राक्षस को भेजकर कष्ट देता था। तब पाण्ड़वों ने श्री कृष्ण से दुर्योधन के दुर्व्यवहार से अवगत कराया और उससे छुटकारा पाने का मार्ग पूछा। तब श्री कृष्ण ने पाण्ड़वों को भगवान शिव की पूजा करने के लिए सलाह दी और कहा मैंने स्वयंने अपने सभी मनोरथों को प्राप्त करने के लिए भगवान शिव की पूजा की हैं और आज भी कर रहा हुं। आप लोग भी करो। वेदव्यासजी ने भी पाण्ड़वों को भगवान शिव की पूजा का उपदेश दिया। हिमालय से लेकर पाण्ड़व विश्व के हर कोने में जहां भी गये उन सभी स्थानो पर शिवलिंग कि स्थापना कर पूजा अर्चना करने का वर्णन शास्त्रों में मिलता हैं।

शिव महापुराण

सृष्टिखंड अध्याय ११ श्लोक १२ से १५ में शिव पूजा से प्राप्त होने वाले सुखों का वर्णन इस प्रकार हैं:

दरिद्रता, रोग कष्ट, शत्रु पीड़ा एवं चारों प्रकार के पाप तभी तक कष्ट देता है, जब तक भगवान शिव की पूजा नहीं की जाती। महादेव का पूजन कर लेने पर सभी प्रकार के दु:खोका शमन हो जाता हैं। सभी प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं एवं इससे सभी मनोकामनाएं सिद्ध हो जाती हैं।(शिवमहापुराण सृष्टिखंड अध्याय- ११ श्लोक१२ से १५

साक्षात ब्रह्म हैं शिवलिंग

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शिवलिंगकी पूजा-अर्चना अनादिकालसे विश्वव्यापक रही हैं। संसार के सबसे प्राचीन ग्रन्थ **ऋग्वेद में लिंग उपासना का उल्लेख मिलता हैं।**

सर्वदेवात्मको रुद्र: सर्वे देवा: शिवात्मका:।

भावार्थ: भगवान शिव और रुद्र सर्व देवों में विराजमान होने से ब्रह्म के ही पर्यायवाची शब्द हैं। प्राय: सभी सभी शास्त्र एवं पुराणों में शिवलिंग के पूजन का उल्लेख मिलता हैं। हिन्दू शास्त्रों में जहां भी शिव उपासनाका वर्णन किया गया हैं, वहां शिवलिंग की महिमा का गुण-गान अवश्य मिलता हैं।

स्कन्दपुराणमें शिवलिंग महिमा इस प्रकार की गई है-

आकाशं लिङ्गमित्याहु:पृथ्वी तस्यपीठिका।
आलय: सर्वदेवानांलयनाल्लिङ्गमुच्यते॥

भावार्थ: आकाश लिंग है और पृथ्वी उसकी पीठिका हैं। इस लिंग में समस्त देवताओं का वास हैं। सम्पूर्ण सृष्टि का इसमें लय हैं, इसीलिए इसे लिंग कहते हैं।

शिवपुराणमें शिवलिंग महिमा इस प्रकार की गई है-

लिङ्गमर्थ हि पुरुषंशिवंगमयतीत्यद:।
शिव-शक्त्योश्च चिह्नस्यमेलनंलिङ्गमुच्यते॥

भावार्थ: शिव-शक्ति के चिह्नोंका सम्मिलित स्वरूप ही शिवलिंग हैं। इस प्रकार लिंग में सृष्टि के जनक की अर्चना होती है।

- लिंग परमपुरुष सदा शिवका बोधक हैं। इस प्रकार यह विदित होता है कि लिंग का प्रथम अर्थ प्रकट करने वाला हुआ, क्योंकि इसी से सृष्टि की उत्पत्ति हुई हैं।
- दूसरा **भावार्थ:** यह प्राणियों का परम कारण और निवास-स्थान हैं।
- तीसरा **भावार्थ:** शिव- शक्ति का लिंग योनि भाव और अर्द्धनारीश्वर भाव मूलत:एक ही स्वरुप हैं। सृष्टि के बीज को देने वाले परम लिंग रूप भगवान शिव जब अपनी प्रकृति रूपा शक्ति से आधार-आधेय की भाँति संयुक्त होते हैं, तभी सृष्टि की उत्पत्ति होती है, अन्यथा नहीं।

लिंगपुराण शिवलिंग महिमा इस प्रकार की गई है-

मूले ब्रह्मा तथा मध्येविष्णुस्त्रिभुवनेश्वर:।

रुद्रोपरिमहादेव: प्रणवाख्य:सदाशिव:॥
लिङ्गवेदीमहादेवी लिङ्गसाक्षान्महेश्वर:।
तयो:सम्पूजनान्नित्यंदेवी देवश्चपूजितो॥

भावार्थ: शिव लिंगके मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा शीर्ष में शंकर हैं। प्रणव (ॐ) स्वरूप होने से सदाशिवमहादेव कहलाते हैं। शिवलिंगप्रणव का रूप होने से साक्षात् ब्रह्म ही है। लिंग महेश्वर और उसकी वेदी महादेवी होने से लिगांचर्नके द्वारा शिव-शिक्त दोनों की पूजा स्वत:सम्पन्न हो जाती है। लिंगपुराण में शिव को त्रिदेवमयऔर शिव-शक्ति का संयुक्त स्वरूप होने का उल्लेख किया गया हैं।

भगवान शिव द्वारा शिवलिंग महिमा इस प्रकार की गई है-

लोकं लिङ्गात्मकंज्ञात्वालिङ्गेयोऽर्चयतेहि माम्।
न मेतस्मात्प्रियतर:प्रियोवाविद्यतेक्वचित्॥

भावार्थ: जो भक्त संसार के मूल कारण महाचैतन्यलिंग की अर्चना करता हैं और लोक को लिंगात्मकजानकर लिंग-पूजा में तत्पर रहता हैं, मुझे उससे अधिक प्रिय अन्य कोई मनुष्य नहीं हैं।

शिवलिंग के विभिन्न प्रकार व लाभ

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

- "गन्धलिंग" दो भाग कस्तुरी, चार भाग चन्दन और तीन भाग कुंकम से बनाया जाता हैं।
- मिश्री(चिनी) से बने शिव लिंग कि पूजा से रोगो का नाश होकर सभी प्रकार से सुखप्रद होती हैं।
- सोंढ, मिर्च, पीपल के चूर्ण में नमक मिलाकर बने शिवलिंग कि पूजा से वशीकरण और अभिचार कर्म के लिये किया जाता हैं।
- फूलों से बने शिव लिंग कि पूजा से भूमि-भवन कि प्राप्ति होती हैं।
- जौं, गेहुं, चावल तीनो का एक समान भाग में मिश्रण कर आटे के बने शिवलिंग कि पूजा से परिवार में सुख समृद्धि एवं संतान का लाभ होकर रोग से रक्षा होती हैं।
- किसी भी फल को शिवलिंग के समान रखकर उसकी पूजा करने से फलवाटिका में अधिक उत्तम फल होता हैं।
- यज्ञ कि भस्म से बने शिव लिंग कि पूजा से अभीष्ट सिद्धियां प्राप्त होती हैं।
- यदि बाँस के अंकुर को शिवलिंग के समान काटकर पूजा करने से वंश वृद्धि होती है।
- दही को कपडे में बांधकर निचोड़ देने के पश्चात उससे जो शिवलिंग बनता हैं उसका पूजन करने से समस्त सुख एवं धन कि प्राप्ति होती हैं।
- गुड़ से बने शिवलिंग में अन्न चिपकाकर शिवलिंग बनाकर पूजा करने से कृषि उत्पादन में वृद्धि होती हैं।
- आंवले से बने शिवलिंग का रुद्राभिषेक करने से मुक्ति प्राप्त होती हैं।
- कपूर से बने शिवलिंग का पूजन करने से आध्यात्मिक उन्नती प्रदत एवं मुक्ति प्रदत होता हैं।
- यदि दुर्वा को शिवलिंग के आकार में गूंथकर उसकी पूजा करने से अकाल-मृत्यु का भय दूर हो जाता हैं।
- स्फटिक के शिवलिंग का पूजन करने से व्यक्ति कि सभी अभीष्ट कामनाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं।
- मोती के बने शिवलिंग का पूजन स्त्री के सौभाग्य में वृद्धि करता हैं।
- स्वर्ण निर्मित शिवलिंग का पूजन करने से समस्त सुख-समृद्धि कि वृद्धि होती हैं।
- चांदी के बने शिवलिंग का पूजन करने से धन-धान्य बढ़ाता हैं।
- पीपल कि लकडी से बना शिवलिंग दरिद्रता का निवारण करता हैं।
- लहसुनिया से बना शिवलिंग शत्रुओं का नाश कर विजय प्रदत होता हैं।

कैसे करें शिव का पूजन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

भगवान शिव का प्रिय- सोमवार, माह की दोनो चतुर्दशी, प्रदोष व्रत, माह श्रावण मास हैं, इस विशेष शुभ अवशरो पर अल्प समय में शिव पूजन का पूर्ण लाभ प्राप्त हो इस लिये शिवपूजन की वर्णित विधि से पूर्ण की जा सकती हैं।

❖ उक्त शुभ अवसरो पर प्रातः काल उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर त्रिदल वाले सुन्दर-साफ, बिना कटे-फटे पाँच-सात- नौ-ग्यारा यथा शक्ति विषम संख्या में बिल्व पत्र लेने चाहिये। यदि बिल्व पत्र प्राप्त नहो तो अक्षत अर्थात बिना टूटे-फूटे चावल को पूजन में ले सकते हैं।

❖ साफ लोटे या किसी अन्य सुंदर पात्र में गंगा जल यदि गंगाजल न हो तो स्वच्छ जल ले सकते हैं।

❖ पूजन हेतु अपनी सामर्थ्य के अनुसार अष्टगंध, चन्दन, हल्दी, धूप, दीप, अगरबत्ती इत्यादी सभी आवश्यक सामग्री लेकर किसी भी शिव मंदिर (शिवालय) में करना अधिक लाभ प्रद होता हैं। अन्यथा घर में शिवलिंग स्थापित कर सकते हैं।

❖ समस्त सामग्री को किसी स्वच्छ पात्र में रखदें। यदि कोई पात्र उपलब्ध न हो, तो भूमि को लीप-पोतकर स्वच्छ करके निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए समस्त सामग्री भूमी पर रख दें।

मंत्र-

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशा।
सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्मसमारम्भे॥
अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विनकर्तारस्ते नष्टन्तु शिवाज्ञया।

उक्त विधान के पश्चयात यदि शिवलिंग को स्वच्छ जल से धोएँ और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र-

गंगा सिन्धुश्य कावेरी यमुना च सरस्वती।

रेवा महानदी गोदा अस्मिन् जले सन्निधौ कुरु।

उक्त विधान के पश्चयात शिवलिंग के ऊपर अष्टगंध, चन्दन इत्यादि द्रव्य चढ़ाएँ और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र-

ॐ भूः भुर्वः स्वः क्क द्रव्य त्रयम्बकं यजामहे सुगंधिम् पुष्टि वर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामुतः।

उक्त विधान के पश्चयात शिवलिंग के ऊपर अक्षत चढ़ाएँ और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र-

ॐ अक्षन्नमीमदन्त हयव प्रिया अधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठाया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ।।

उक्त विधान के पश्चयात शिवलिंग के ऊपर पुष्प चढ़ाएँ और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र-

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।

उक्त विधान के पश्चयात भगवान को धूप अर्पण करें तथा भगवान को बिल्वपत्र अर्पण करें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र-

काशीवास निवासिनाम् कालभैरव पूजनम्।

कोटिकन्या महादानम् एक बिल्वं समर्पणम्।

दर्षनं बिल्वपत्रस्य स्पर्षनं पापनाशनम्।

अघोर पाप संहार एकबिल्वं शिवार्पणम।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।

त्रिजन्मपाप संहारं एकबिल्वं शिवार्पणम।

उक्त विधान के पश्चयात शिवलिंग के ऊपर गंगा जल या शुद्ध जल चढ़ाएँ और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र-

गंगोत्तरी वेग बलात् समुद्धृतम् सुवर्ण पात्रेण हिमान्षु शीतलम् सुनिर्मलाम्भो ह्यमृतोपमम् जलम् गृहाण काशीपति भक्त वत्सल

उक्त विधान के पश्चयात भगवान शिव से पूजन में हुई तृटि हेतु निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए क्षमा याचना करें।

अपराधो सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निषम् मया, दासोऽयमिति माम् मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।

आवाहनम् न जानामि न जानामि विसर्जनम् पूजाम् चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।

मन्त्रहीनम् क्रियाहीनम् भक्तिहीनम् सुरेश्वर, यत्पूजितम् मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे।

बिना मंत्र पढ़े भी उक्त समस्त सामग्री भगवान शिव को पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति भाव से अर्पित की जा सकती है।

व्यक्ति के अंतर मन में केवल विश्वास एवं श्रद्धा होनी चाहिए।

क्योकि भगवान भोलेनाथ के वचन हैं:

न मे प्रियश्चतुर्वेदी मद्भक्तः श्वपचोऽपि यः।

तस्मै देयम् ततो ग्राह्यम् स च पूज्यो यथा ह्यहम्॥

पत्रम् पुष्पम् फलम् तोयम् यो मे भक्त्या प्रयच्छति।

तस्याहम् न प्रणस्यामि स च मे न प्रणस्यति॥

अर्थात: जो भक्तिभाव से बिना किसी वेद मंत्र के उच्चारण किए मात्र पत्र, पुष्प, फल अथवा जल समर्पित करता हैं उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता हूँ और वह भी मेरी दृष्टि से कभी ओझल नहीं होता हैं।

शिव पूजन से कामना सिद्धि

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शिवलिंग पर गंगा जल से अभिषेक करने से भौतिक सुख प्राप्त होता हैं एवं मनुष्य को मोक्ष कि प्राप्ति होती हैं। शिव पुराण के अनुशार शिवलिंग पर अन्न, फूल एवं विभिन्न वस्तुओं से जलाभिषेक कर मनुष्य के समस्त प्रकार के कष्टोका निवारण किया जासकता हैं।

- ❖ निम्न साधना शिव प्रतिमा(मूर्ति) के समक्ष करने से शीघ्र लाभ प्राप्त होते हैं।
- ❖ लक्ष्मी प्राप्ति हेतु भगवान शिव को बिल्वपत्र, कमल, शतपत्र एवं शंखपुष्प अर्पण करने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- ❖ पुत्र प्राप्ति हेतु भगवान शिव को धतुरे के फूल अर्पण करने से शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं।
- ❖ भौतिक सुख एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु स्वेत आक, अपमार्ग एवं सफेद कमल के फूल भगवान शिव को चढाने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- ❖ वाहन सुख कि प्राप्ति हेतु चमेली के फूल भगवान शिव को चढाने से शीघ्र उत्तम वाहन प्राप्ति के योग बनते हैं।
- ❖ विवाह सुख में आने वाली बाधाओं को दूर करने हेतु बेला के फूल भगवान शिव को चढाने से उत्तम पत्नी की प्राप्ति होती होती हैं एवं कन्या के फूल चढाने से उत्तम पति कि प्राप्ति होती हैं।
- ❖ जूही के फूल भगवान शिव को चढाने से व्यक्ति को अन्न का अभाव नहीं होता हैं।
- ❖ सुख सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु भगवान शिव को हार सिंगार के फूल चढाने से लाभ प्राप्त होता हैं।

शिवलिंग पर अभिषेक हेतु प्रयोग

- ❖ वंश वृद्धि हेतु शिवलिंग पर घी का अभिषेक शुभ फलदायी होता हैं।
- ❖ भौतिक सुख साधनो में वृद्धि हेतु शिवलिंग पर सुगंधित द्रव्य से अभिषेक करने से शीघ्र उनमें बढोतरी होती हैं।
- ❖ रोग निवृत्ति हेतु महामृत्युंजय मंत्र जप करते हुवे शहद (मधु) से अभिषेक करने से रोगों का नाश होता हैं।
- ❖ रोजगार वृद्धि हेतु गंगाजल एवं शहद (मधु) से अभिषेक करने से लाभ प्राप्त होता हैं।
- ❖ मानसिक अशांति व मानसिक कमजोरी के निवारण हेतु शिवलिंग पर जल अथवा दूध या दोनो के मिश्रण से अभिषेक करना चाहिए।
- ❖ पारिवारीक अशांति के निवारण हेतु शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करना चाहिए।
- ❖ आनावश्यक कष्टो एवं दु:खो के निवारण हेतु शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करना चाहिए।

विद्वानो के मत से अन्य सभी सामग्री से किये गये अभिषेक से गंगाजल से किया गया अभिषेक श्रेष्ठ फल प्रदान करने वाला होता हैं। एसी मान्यता हैं की गंगाजल से शिवलिंग का अभिषेक करने से से चारों पुरुषार्थ अर्थात धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।

महाशिवरात्री एवं श्रवण मास में किये गये पूजन एवं अभिषेक से भगवान शिव की कृपा प्राप्ति के साथ-साथ माता पर्वती, गणेश और मां लक्ष्मी की भी कृपा प्राप्त होती हैं।

शिव पूजन में कोन से फूल चढाएं?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

विभिन्न कामनाओं की पूर्ति हेतु भगवान शिव का संबंधित फूलों से पूजन करने से अभिष्ट कामनाओं की पूर्ति शीघ्र होती हैं।

शिवपुराण की रुद्रसंहिता के अनुशार विभिन्न फूलों का प्रयोग कर यदि साधारण से साधारण मनुष्य भी थोडे से विधि-विधान से भगवान शिव का पूजन करले तो उसे मनोवांछित फलों की प्राप्ति हो जाती हैं।

- जो व्यक्ति लाल व सफेद आंकड़े (आर्क) के फूल से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे भोग व मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।
- जो व्यक्ति चमेली के फूल से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे उत्तम वाहन सुख की प्राप्ति होती हैं।
- जो व्यक्ति अलसी के फूल से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे भगवान श्री हरी विष्णु का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं।
- जो व्यक्ति शमी पत्रों से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।
- जो व्यक्ति बेला के फूल से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे उत्तम पत्नी की प्राप्ति होती होती हैं यदि कोई कन्या बेला के फूल चढाती हैं तो उसे उत्तम पति कि प्राप्ति होती हैं, अर्थातः विवाह से संबंधित बाधाएं दूर होती हैं।
- जो व्यक्ति जूही के फूल से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसके घरमें अन्नपूर्णा का वास होता हैं उसे अन्न का अभाव नहीं होता हैं।
- जो व्यक्ति कनेर के फूल से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे उत्तम वस्त्र इत्यादी की प्राप्ति होती हैं।
- जो व्यक्ति हरसिंगार के फूल से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति एवं वृद्धि होती हैं।
- जो व्यक्ति धतुरे के फूल से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे उत्तम संतान की प्राप्ति होती हैं।
- जो व्यक्ति डंठलवाले धतूरे से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे शुभ फलो की प्राप्ति होती हैं।
- जो व्यक्ति हरी दुर्वा से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे दीर्धायु प्राप्त होती हैं।
- जो व्यक्ति तुलसीदल से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे भोग एवं मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।
- जो व्यक्ति कमल के फूल से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे लक्ष्मी प्राप्ति होती हैं।
- जो व्यक्ति बिल्वपत्र से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे धन, ऎश्वर्य की प्राप्ति होती हैं।
- जो व्यक्ति शतपत्र से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे आर्थिक लाभ होता हैं।
- जो व्यक्ति शंखपुष्प से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे धन की प्राप्ति होती हैं।
- जो व्यक्ति सफेद कमल के फूल से भगवान शिव का पूजन करता हैं, उसे भौतिक सुख एवं मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।

विशेष: शास्त्रोक्त मत से मनोकामना पूर्ति हेतु यदि संबंधित फूलों को एक लाख या सवा लाख की संखाया में शिवजी चढ़ाया जाए तो शीघ्र एवं उत्तम मनोनुकूल फल प्राप्त होते हैं। भगवान शिव के पूजन हेतु चम्पा एवं केवडे, केतकी के फूल निषेध मानेगएं हैं अन्य शेष सभी फूल शिव पूजन हेतु प्रयोग किये जा सकते हैं।

शिवपूजन से नवग्रह शांति

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

ज्योतिष शास्त्र और शिवरात्रि

शास्त्रोक्त मत से हिंदू पंचांग (केलेन्डर) के अनुशार चतुर्दशी तिथि के स्वामी शिवजी को माना जाता हैं। विद्वानो के मतानुशार वैदिक ज्योतिष शास्त्रों में चतुर्दशी तिथि को परम शुभ फलदायी व कल्याणकारी मना गया हैं। साधारणत् हर महीने की चतुर्दशी तिथि को शिवरात्रि कहा जाता हैं। परंतु फाल्गुन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को महाशिवरात्रि कहा जाता हैं।

ज्योतिष शास्त्र के प्रमुख प्राचीन ग्रंथ बृहत्पाराशर, होराशास्त्र में विभिन्न ग्रहों की दशा-अंतर्दशा में बनने वाले अनिष्टकारक योग की निवृत्ति व ग्रह शांति हेतु भगवान शिव की पूजा-अर्चन और रुद्राभिषेक पर अधिक परामर्श दिये गये हैं।

भृगुसंहितामें भी महर्षि भृगु अधिकांश जन्मकुंडलियों में अशुभ व पाप प्रभावी ग्रहों की पीडा का जड से नाश करने हेतु और नये प्रारब्ध कर्मो के निर्माण के लिये शिव आराधना एवं रुद्राभिषेक को श्रेष्ठ उपाय होने का उल्लेख किया हैं।

ज्योतिषी शास्त्र के अनुसार विश्व को उर्जा प्रदान करने वाले सूर्य इस समय तक उत्तरायण में आ होते हैं, और ऋतु परिवर्तन का यह समय अत्यंत शुभ कहा माना जाता हैं। शिव का अर्थ ही है कल्याण करना, एवं शिवजी सबका कल्याण करने वाले देवो के भी देव महादेव हैं। अत: महा शिवरात्रि के दिन शिव कृपा प्राप्त कर व्यक्ति को सरलता से इच्छित सुख की प्राप्ति होती हैं।

ज्योतिषीय सिद्धंत के अनुसार चतुर्दशी तिथि तक चंद्रमा अपनी क्षीणस्थ अवस्था में पहुंच जात्ता हैं।

अपनी क्षीण अवस्था के कारण बलहीन होकर चंद्रमा सृष्टि को ऊर्जा(प्रकाश) देने में असमर्थ हो जाते हैं। चंद्र का सीधा संबंध मनुष्य के मन से बताया गया हैं। ज्योतिष सिद्धन्त से जब चंद्र कमजोर होतो मन थोडा कमजोर हो जाता हैं, जिस्से भौतिक संताप प्राणी को घेर लेते हैं, और विषाद, मान्सिक चंचल्ता-अस्थिरता एवं असंतुलन से मनुष्य को विभिन्न प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता हैं।

धर्म ग्रंथोमे चंद्रमा को शिव के मस्तक पर सुशोभित बताय गया हैं। जिस्से भगवान शिव की कृपा करने से चंद्रदेव की कृपा स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। महाशिवरात्रि को शिव की अत्यंत प्रिय तिथि बताई गई हैं। ज्यादातर ज्योतिषी शिवरात्रि के दिन शिव आराधना कर समस्त कष्टों से मुक्ति पाने की सलाह देते हैं।

ज्योतिष शास्त्र के प्रमुख प्राचीन ग्रंथ बृहत्पाराशर, होराशास्त्र में विभिन्न ग्रहों की दशा-अंतर्दशा में बनने वाले अनिष्टकारक योग की निवृत्ति व ग्रह शांति हेतु भगवान शिव की पूजा-अर्चन और रुद्राभिषेक पर अधिक परामर्श दिये गये हैं। भृगुसंहितामें भी महर्षि भृगु अधिकांश जन्मकुंडलियों में अशुभ व पाप प्रभावी ग्रहों की पीडा का जड से नाश करने हेतु और नये प्रारब्ध कर्मो के निर्माण के लिये शिव आराधना एवं रुद्राभिषेक को श्रेष्ठ उपाय होने का उल्लेख किया हैं।

भगवान शिव की आराधना से व्यक्ति को दैविक, दैहिक, भौतिक जेसे अनेको कष्टों से मुक्ति मिलती है। क्योंकि शिव का अर्थ कल्याणकारी और मंगलमय होता हैं।

यदि व्यक्ति ग्रहों की प्रतिकूल दशा के कारण परेशान हों, ग्रह की अशुभता के कारण कष्ट हो रहे हो, तो ग्रहों की अशुभता के निवारण के लिए व्यक्ति को शिवरात्रि पर चार प्रहर की पूजा अत्याधिक लाभप्रद मानीगई हैं। शिवरात्री के दिन आंक के पुष्प एवं बिल्व पत्रों को "ॐ नम: शिवाय" का 108 बार जप करते हुए शिवलिंग पर चढ़ाने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

ग्रह शांति के उपाय:

सूर्य: शिवलिंग पर रूद्रपाठ करते हुए जल या दूध के साथ में शुद्ध घी, गुड़, शहद (मधु, महु, मध) लाल चंदन सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को जल या दूध

के साथ मिला कर अभिषेक करने से सूर्य ग्रह की अशुभता दूर होकर शुभ फलो की प्राप्ती होती हैं।

चंद्र : शिवलिंग पर रूद्रपाठ करते हुए दूध या जल के साथ में शुद्ध घी, सफेद तिल, सफेद चंदन, सफेद आक सब सामग्री मिला कर या किसी भी एक वस्तु को दूध या जल के साथ मिला कर अभिषेक करने से चंद्र ग्रह की अशुभता दूर होकर शुभ फलो की प्राप्ती होती हैं।

मंगल : शिवलिंग पर रूद्रपाठ करते हुए जल या दूध के साथ में गुड़, शहद (मधु, महु, मध) लाल चंदन, लाल कनेर के फूल सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को जल/ दूध के साथ मिला कर अभिषेक करने से मंगल ग्रह की अशुभता दूर होकर शुभ फलो की प्राप्ती होती हैं।

बुध: शिवलिंग पर रूद्रपाठ करते हुए गंगा जल या दूध के साथ में दूब, जौ, बेल पत्र सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को गंगा जल या दूध के साथ मिला कर अभिषेक करने से बुध ग्रह की अशुभता दूर होकर शुभ फलो की प्राप्ती होती हैं।

गुरु(बृहस्पति): शिवलिंग पर रूद्रपाठ करते हुए जल या दूध के साथ में हल्दी , केसर, चावल, घी, शहद, पीले फुल, पीली सरसों, नागकेसर सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को जल/ दूध के साथ मिला कर अभिषेक करने से **गुरु** ग्रह की अशुभता दूर होकर शुभ फलो की प्राप्ती होती हैं।

शुक्र: शिवलिंग पर रूद्रपाठ करते हुए गंगा जल या दही के साथ में शक्कर(मिश्री), अक्षत(चांवल), सफेद तिल, सफेद चंदन, श्वेत आक फूल, सुगंधित इत्र सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को जल या दही के साथ मिला कर अभिषेक करने से शुक्र ग्रह की अशुभता दूर होकर शुभ फलो की प्राप्ती होती हैं।

शनि : शिवलिंग पर रूद्रपाठ करते हुए गंगा जल या दही के साथ में काले तिल, सफेद चंदन, शक्कर(मिश्री), अक्षत(चांवल), सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को अभिषेक गंगा जल या दही के साथ मिला कर अभिषेक करने से शनि ग्रह की अशुभता दूर होकर शुभ फलो की प्राप्ती होती हैं।

राहू-केतु: शिवलिंग पर रूद्रपाठ करते हुए जल या दूध के साथ में भांग या धतूरे को जल/दूध के साथ मिला कर अभिषेक करने से राहू-केतु ग्रह से संबंधित अशुभता दूर होकर शुभ फलो की प्राप्ती होती हैं।

आपकी राशि और शिव पूजा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शिव पुराण में उल्लेख हैं की महाशिवरात्रि के दिन शिवलिंग की उत्पत्ति हुई थी, शिववरात्रि के दिन शिव पूजन, व्रत और उपवास से व्यक्ति को अनंत फल की प्राप्ति होती हैं।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार व्यक्ति अपनी राशि के अनुसा भगवान शिव की आराधना और पूजन कर विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। जिसे अपनी जन्म राशि या नाम राशि पता हो वह व्यक्ति निम्न सामग्री से शिवलिंग पर अभिषेक करें तो विशेष लाभ प्राप्त होते देखा गया हैं।

मेष : जल या दूध के साथ में गुड़, शहद (मधु, महु, मध) लाल चंदन, लाल कनेर के फूल सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को जल/ दूध के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ मिलता हैं।

वृषभ : जल या दही के साथ में शक्कर(मिश्री), अक्षत(चांवल), सफेद तिल, सफेद चंदन, श्वेत आक फूल सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को जल या दही के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ मिलता हैं।

मिथुन: गंगा जल या दूध के साथ में दूब, जौ, बेल पत्र सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को गंगा जल या दूध के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ मिलता हैं।

कर्क : दूध या जल के साथ में शुद्ध घी, सफेद तिल, सफेद चंदन, सफेद आक सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को दूध या जल के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

सिंह: जल या दूध के साथ में शुद्ध घी, गुड़, शहद (मधु, महु, मध) लाल चंदन सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को जल या दूध के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

कन्या : गंगा जल या दूध के साथ में दूब, जौ, बेल पत्र सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को गंगा जल या दूध के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ मिलता हैं।

तुला : गंगा जल या दही के साथ में शक्कर(मिश्री), अक्षत(चांवल), सफेद तिल, सफेद चंदन, श्वेत आक फूल, सुगंधित इत्र सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को जल या दही के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ मिलता हैं।

वृश्चिक : जल या दूध के साथ में घी, गुड़, शहद (मधु, महु, मध) लाल चंदन, लाल रंग के फूल सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को जल/ दूध के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ मिलता हैं।

धनु : जल या दूध के साथ में हल्दी , केसर, चावल, घी, शहद, पीले फुल, पीली सरसों, नागकेसर सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को जल/ दूध के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

मकर : गंगा जल या दही के साथ में काले तिल, सफेद चंदन, शक्कर(मिश्री), अक्षत(चांवल),सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को अभिषेक गंगा जल या दही के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

कुंभ : गंगा जल या दही के साथ में काले तिल, सफेद चंदन, शक्कर(मिश्री), अक्षत(चांवल),सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को अभिषेक गंगा जल या दही के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

मीन : जल या दूध के साथ में हल्दी , केसर, चावल, घी, शहद, पीले फुल, पीली सरसों, नागकेसर सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को जल/ दूध के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

महाशिव रात्रि एवं श्रावण मास मे सोमवार के दिन कोइ भी व्यक्ति जिसे अपनी राशि पता नहीं हैं वह व्यक्ति चाहे तो पंचामृत से शिवलिंग का अभिषेक कर सकते हैं

महामृत्युन्जय मंत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

महामृत्युंजय मंत्र के विधि विधान के साथ में जाप करने से अकाल मृत्यु तो टलती ही हैं, रोग, शोक, भय इत्यादि का नाश होकर व्यक्ति को स्वस्थ आरोग्यता की प्राप्ति होती हैं।

यदि स्नान करते समय शरीर पर पानी डालते समय **महामृत्युन्जय मंत्र** का जप करने से त्वचा सम्बन्धित समस्याए दूर होकर स्वास्थ्य लाभ होता हैं।

यदि किसी भी प्रकार के अरिष्ट की आशंका हो, तो उसके निवारण एवं शान्ति के लिये शास्त्रों में सम्पूर्ण विधि-विधान से महामृत्युंजय मंत्र के जप करने का उल्लेख किया गया हैं। जिस्से व्यक्ति मृत्यु पर विजय प्राप्ति का वरदान देने वाले देवो के देव महादेव प्रसन्न होकर अपने भक्त के समस्त रोगो का हरण कर व्यक्ति को रोगमुक्त कर उसे दीर्घायु प्रदान करते हैं।

मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के कारण ही इस मंत्र को मृत्युंजय कहा जाता है। महामृत्यंजय मंत्र की महिमा का वर्णन शिव पुराण, काशीखंड और महापुराण में किया गया हैं। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी मृत्युंजय मंत्र का उल्लेख है। मृत्यु को जीत लेने के कारण ही इस मंत्र को मृत्युंजय कहा जाता है।

महत्व: **मृत्युर्विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्मृत्युंजय: स्मृत: या मृत्युंजयति इति मृत्युंजय,**

अर्थात : जो मृत्यु को जीत ले, उसे ही मृत्युंजय कहा जाता हैं।

मानव शरीर में जो भी रोग उत्पन्न होते हैं उसके बारे में शास्त्रो में जो उल्लेख हैं वह इस प्रकार हैं। **"शरीरं व्याधिमंदिरम्"** ब्रह्मांड के पंच तत्वों से उत्पन्न शरीर में समय के अंतराल पर नाना प्रकार की आधि-व्यघि उपाधियां उत्पन्न होती रहती हैं। इस लिए हमें अपने शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए आहार-विहार, खान-पान और नियमित दिनचर्या निश्चित समय पर करना पडता हैं। यदि इन सब को निश्चित समय अवधि पर करते रहने के बाद भी यदि कोई रोग या व्याधि हो जाए एवं वह रोग इलाज कराने के बाद भी यदि ठीक नहीं हो एवं सभी जगा से निराशा हाथ लगरही हो तो एसे अरिष्ट की निवृत्ति या शांति के लिए महामृत्युज्य मंत्र जप का प्रयोग अवश्य करें।

शास्त्रों में मृत्यु भयको विपत्ति या संकट माना गया हैं, एवं शास्रो के अनुशार विपत्ति या मृत्य के निवारण के देवता शिव हैं। एवं ज्योतिषशास्त्र के अनुशार दुख, विपत्ति या मृत्य के प्रदाता एवं निवारण के देवता शनिदेव हैं, क्योकि शनि व्यक्ति के कर्मो के अनुरुप व्यक्ति को फल प्रदान करते हैं। शास्त्रो के अनुशार मार्कण्डेय ॠषि का जीवन अत्यल्प था, परंतु महामृत्युंजय मंत्र जप से शिव कृपा प्राप्त कर उन्हें चिरंजीवी होने का वरदान प्राप्त हुवा।

महामृत्युंजय का वेदोक्त मंत्र निम्नलिखित है-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

मंत्र उच्चारण विचार :इस मंत्र में आए प्रत्येक शब्द का उच्चारण स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि स्पष्ट शब्द उच्चारण मे ही मंत्र कि समग्र शक्ति समाहित होती हैं। इस मंत्र में उल्लेखित प्रत्येक शब्द अपने आप में एक संपूर्ण बीज मंत्र का अर्थ लिए हुए है।

महामृत्युंजय मंत्र

महामृत्युंजय मंत्र का जप आवश्यकता के अनुरूप होते हैं। अलग-अलग उद्देश्य के लिये अलग-अलग मंत्रों का प्रयोग होता है। मंत्र में दिए अक्षरों एवं उसकी संख्या के अनुरुप से उसके प्रभाग मे बदलाव आते है। यह मंत्र निम्न प्रकार से है-

एकाक्षरी मंत्र- हौं । (एक अक्षर का मंत्र)

त्र्यक्षरी मंत्र- ॐ जूं सः । (तीन अक्षर का मंत्र)

चतुरक्षरी मंत्र- ॐ वं जूं सः। (चार अक्षर का मंत्र)

नवाक्षरी मंत्र- ॐ जूं सः पालय पालय। (नव अक्षर का मंत्र)

दशाक्षरी मंत्र- ॐ जूं सः मां पालय पालय। (दश अक्षर का मंत्र)

(स्वयं के लिए इस मंत्र का जप इसी तरह होगा। यदि किसी अन्य व्यक्ति के लिए यह जप किया जा रहा हो तो 'मां' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लेना होगा)

महामृत्युंजय का वेदोक्त मंत्र निम्नलिखित है-

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

इस मंत्र में द्रात्रिंशाक्षरी)32 अक्षर का मंत्र (का प्रयोग हुआ है और इसी मंत्र में ॐ' लगा देने से 33 शब्द हो जाते हैं। इसे 'त्र्यत्रिंशाक्षरी या तैंतीस अक्षरी मंत्र कहते हैं। श्री वशिष्ठजी ने इन 33 शब्दों के 33 देवता समाहित है अर्थात् शक्तियाँ निश्चित की हैं जो कि निम्नलिखित हैं।

इस मंत्र में
8 वसु,
11 रुद्र,
12 आदित्य
1 प्रजापति तथा
1 वषट को माना है।

मंत्र उच्चारण विचार :

इस मंत्र में आए प्रत्येक शब्द का उच्चारण स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि स्पष्ट शब्द उच्चारण मे ही मंत्र है। इस मंत्र में उल्लेखित प्रत्येक शब्द अपने आप में एक संपूर्ण बीज मंत्र का अर्थ लिए हुए है।

महामृत्युंजय मंत्र जाप किस समय करें?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

कब महामृत्युंजय मंत्र का जाप स्नान इत्यादि से निवृत होकर प्रतिदिन भी कर सकते हैं इस्से वर्त्मान समय के कष्ट तो दूर होते ही हैं साथ में आने वाले कष्टों काभी स्वतः ही निवारण हो जाता हैं। महामृत्युंजय मंत्र के नियमित यथासंभव जाप करने से बहुत बाधाएँ दूर होती एसा हमने हमारे अनुभवो से जाना हैं। परंतु यदि विशेष स्थितियों में महामृत्युंजय मंत्र के जाप की आवश्यक्ता हो तो भी करयाजा सकता हैं।

- यदि घरका कोइ सदस्य रोग से पीड़ित हों। या उसकी सेहत बार बार खराब हो रही हों।
- भयंकर महामारी से लोग मर रहे हों, तो जाप कर अपनि और अपने परिवार की सुरक्षा हेतु।
- यदि सामुहिक यज्ञ द्वारा जाप किया जाये तो अत्याधिक लोगो को लाभ होता हैं।
- राजभय अर्थान्त सरकार से संबंधित कोइ पीडा या कष्ट हों।
- साधक का मन धार्मिक कार्यों नहीं लग रहा हों।
- शत्रु से संबंधित परेशानि एवं क्लेश हों।

यदि सामुहिक यज्ञ द्वारा जाप किया जाये तो समग्र विश्व, देश, राज्य, शहर आदि के हितार्थ उद्देश्य से भी जप किये जासकते हैं। इस्से अत्याधिक लोगो को लाभ होता हैं।

ज्योतिष मारक ग्रहो द्वारा प्रतिकूल (अशुभ) फल प्राप्त हो रहें हों।

- यदि जन्म, मास, गोचर और दशा, अंतर्दशा, स्थूलदशा आदि में ग्रहपीड़ा होने की आशंका हों।
- कुंडाली मेलापक में यदि नाड़ीदोष, षडाष्टक आदि दोष हों।
- एक से अधिक अशुभ ग्रह रोग एवं शत्रु स्थान(षष्टम भाव) में हों।

तो महामृत्युंजय मंत्र का जप करना परम फलदायी है। महामृत्युंजय मंत्र के जप व उपासना के तरीके आवश्यकता के अनुरूप होते हैं। काम्य उपासना के रूप में भी इस मंत्र का जप किया जाता है। जप के लिए अलग-अलग मंत्रों का प्रयोग होता है। यहाँ हमने आपकी सुविधा के लिए संस्कृत में जप विधि, विभिन्न यंत्र-मंत्र, जप में सावधानियाँ, स्तोत्र आदि उपलब्ध कराए हैं। इस प्रकार आप यहाँ इस अद्भुत जप के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

महामृत्युंजय जपविधि - (मूल संस्कृत में)

कृतनित्यक्रियो जपकर्ता स्वासने पांगमुख उदहमुखो वा उपविश्य धृतरुद्राक्षभस्मत्रिपुण्ड्रः । आचम्य । प्राणानायाम्य। देशकालौ संकीर्त्य मम वा यज्ञमानस्य अमुक कामनासिद्धयर्थ श्रीमहामृत्युंजय मंत्रस्य अमुक संख्यापरिमितं जपमहंकरिष्ये वा कारयिष्ये।

॥ इति प्रात्यहिकसंकल्पः॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ गुरवे नमः। ॐ गणपतये नमः। ॐ इष्टदेवतायै नमः।

इति नत्वा यथोक्तविधिना भूतशुद्धिं प्राण प्रतिष्ठां च कुर्यात्।

शिव पुराण कि महिमा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

पुराण क्या हैं?

पुराण शब्द का शाब्दिक अर्थ होता हैं पुराना।

आज से हजारो वर्ष पूर्व रचित पुराण में उल्लेखीत श्लोक एवं उसकी शिक्षा पुरानी नहीं हुई हैं, आज के निरंतर द्वन्द्वता भरे युग में आज भी पुराणों की शिक्षा मनुष्य को द्वन्द्व से मुक्ति दिलाने में निश्चित दिशा दे ने में समर्थ हैं। क्योकी व्यक्ति चाहे जीवन में कितनी भी भौतिक और वैज्ञानिक उन्नति कर लें परंतु उसे मानव जीवन को आदर्श बनाने का मार्ग एवं मानव जीवन के उत्कर्ष का सुगम मार्ग भौतिकता में डूब कर या वैज्ञानिकता के मार्ग में प्राप्त नहीं हो सकता। वह मार्ग हमारे प्राचिन ग्रंथो में मौजुद हैं। अफसोस हम हमारे मूल्यवान ग्रंथो को किनारा कर आज हम जीवन की विडंबनापूर्ण स्थिति के बीच से गुजर रहे हैं। जिस्से हमारे बहुत सारे मूल्य एवं परंपरा खंडित हो गई हैं और दिन-प्रतिदिन खंडित होती जारही हैं, क्योकि आधुनिक ज्ञान के नाम पर विदेशी चिंतन का प्रभाव हमारे ऊपर अत्याधिक हावी होता जा रहा हैं। जिस कारण हम हमारी संसकृति सभ्यता एवं प्राचिन-पौराणिक ज्ञान से वंचित होते जारहे हैं।

क्या हैं शिव पुराण?

विद्वानो के मत से ब्रह्मा जी ने सर्वप्रथम स्वयं जिस प्राचीनतम धर्मग्रंथ की रचना की थी, उसे पुराण कहा जाता हैं। ब्रह्माजी द्वारा रचित धर्मग्रंथ में लगभग एक अरब से अधिक श्लोकों का उल्लेख हैं एवं यह बृहत धर्मग्रंथ देवलोक में आज भी मौजूद हैं, ऐसा विद्वानो का मत हैं !

महाभारत के रचयिता वेदव्यास जी ने मनुष्य के कल्याण हेतु धर्मग्रंथ अथवा बृहत पुराण के एक अरब से अधिक श्लोकों को केवल चार लाख श्लोकों में संपादित किया। चार लाख चार लाख श्लोकों में संपादित धर्मग्रंथ को वेदव्यास जी ने पुनः अठारह खण्डों में विभाजन किया। जो आज हमारी संस्कृति में अठारह पुराणों के रूप में विख्यात हैं।

अठारह पुराणों का वर्णन इस प्रकार हैं।

1. ब्रह्म पुराण
2. पद्म पुराण
3. विष्णु पुराण
4. शिव पुराण
5. भागवत पुराण
6. भविष्य पुराण
7. नारद पुराण
8. मार्कण्डेय पुराण
9. अग्नि पुराण
10. ब्रह्मवैवर्त पुराण
11. लिंग पुराण
12. वराह पुराण
13. स्कंद पुराण
14. वामन पुराण
15. कूर्म पुराण
16. मत्स्य पुराण
17. गरुड़ पुराण
18. ब्रह्माण्ड पुराण

उक्त 18 पुराणों में अलग-अलग देवी देवताओं के विभिन्न स्वरूपों को लेकर मूल्य के स्तर पर विस्तृत वर्ण किया गया हैं। पुराणो में अपकर्म, दुष्कर्म एग्वं कुप्रवृत्तियों एवं उन प्रवृत्तिओं में प्रविष्ट होने से प्राप्त होने वाले फलो का भी विस्तृत रूप में उल्लेख किया हैं जिस्से मनुष्य पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, कर्म-अकर्म जे महत्वपूर्ण भेद को सरलता से समझ कर आत्म उन्नती प्राप्त कर सके।

हमारे धर्मग्रंथ ज्ञान, बुद्धि विवेक और आध्यात्मिकता की प्राप्ति हेतु दिव्य प्रकाश का खज़ाना हैं। जिससे हमे धर्म, चिंतन, समाज शास्त्र, राजनीति जेसे अनेक विषयों का विस्तृत वर्णन मिलता हैं।

विद्वानो ने अठारह पुराणों के सार को एक ही श्लोक में व्यक्त करते हुए कहा हैं।

परोपकाराय पुण्याय पापाय पर पीड़नम्।
अष्टादश पुराणानि व्यासस्य वचन॥

अर्थात्: व्यास मुनि द्वारा रचित अठारह पुराणों में दो ही बातें मुख्यत :कही हैं, परोपकार करना संसार का सबसे बड़ा पुण्य और किसी को पीड़ा देना संसार सबसे बड़ा पाप हैं।

शिव पुराण में भगवान शिव के भव्यतम व्यक्तित्व का गुणगान किया गया हैं। शिव पुराण में भगवान शिव के विविध रूपों, अवतारों, ज्योतिर्लिंगों, भक्तों और भक्ति का विस्तृत वर्णन मिलता हैं। सभी पुराणों में शिव पुराण को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होने का उल्लेख मिलते हैं। क्योकि, शिव स्वयंभू हैं, शाश्वत हैं, सर्वोच्च सत्ता के स्वामी है, ब्रह्मा की चेतना हैं और ब्रह्माण्डीय अस्तित्व के आधार भी शिव हैं।

शिवपुराण का संक्षिप्त परिचय

एक बार सूतजी ने शिवपुराण के महत्त्व को समझाते हुए कहा, साधु-महात्माओं! ब्राह्मणों ! शिवपुराण का पठन अथवा श्रवण करने से चारों पुरुषार्थ अर्थात धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति हो जाती हैं। वह भगवान शिव का प्रिय होकर परम गति को प्राप्त कर लेता है।

मूल शिव पुराण के बारह भेद या खण्ड हैं जो इस प्रकार हैं।

- विद्येश्वरसंहिता,
- रुद्रसंहिता,
- विनायकसंहिता,
- उमासंहिता,
- मातृसंहिता,
- एकादशरुद्रसंहिता,
- कैलाससंहिता,
- शतरुद्रसंहिता,
- कोटिरुद्रसंहिता,
- सहस्रकोटिरुद्रसंहिता,
- वायवीयसंहिता तथा
- धर्मसंहिता

उक्त बारह संहिताएं अत्यन्त पुण्यमयी मानी गयी हैं।

- ब्राह्मणो ! विद्येश्वरसंहिता में दस सहस्र श्लोक हैं।
- रुद्रसंहिता, विनायकसंहिता, उमासंहिता और मातृसंहिता में आठ-आठ सहस्र श्लोक हैं।
- एकादशरुद्रसंहिता में तेरह सहस्र,
- कैलाससंहिता में छ :सहस्र,
- शतरुद्रसंहिता में तीन सहस्र,

- कोटिरुद्रसंहिता में नौ सहस्र,
- सहस्रकोटिरुद्रसंहिता में ग्यारह सहस्र,
- वायवीय संहिता में चार सहस्र तथा
- धर्मसंहिता में बारह सहस्र श्लोक हैं।

इस प्रकार मूल शिवपुराण में श्लोकों की कुल संख्या एक लाख है।

परन्तु व्यासजी ने शिवपुराण को चौबीस सहस्त्र श्लोकों में संक्षिप्त कर दिया हैं।

चौबीस सहस्त्र श्लोकों को सात संहिता या खण्ड में विभक्त किया गया हैं।

- विद्येश्वरसंहिता,
- रुद्रसंहिता,
- शतरुग्रसंहिता,
- कोटिरुद्रसंहिता,
- उमासंहिता,
- कैलाशसंहिता तथा
- वायवीयसंहिता हैं।

श्रीशिवपुराण-माहात्म्य

शौनकजी ने सूतजी से प्रश्न किया?

शौनकजी ने पूछा -प्रभो ! आप सम्पूर्ण सिद्धान्तों के ज्ञाता हैं।

प्रभो ! कृपया आप मुझसे पुराणों की कथाओं के सारतत्व का विशेष रूप से वर्णन कीजिये।

ज्ञान, वैराग्य और भक्ति से प्राप्त होने वाले विवेक की वृद्धि कैसे होती हैं?

तथा साधु-संत पुरुष किस प्रकार अपने काम-क्रोध आदि मानसिक विकारों का निवारण करते हैं ?

इस घोर कलिकाल में जीव प्राय :आसुर स्वभाव के हो गये हैं, उस जीव समुदाय को दैवी सम्पत्ति से युक्त बनाने के लिये सर्वश्रेष्ठ उपाय क्या है ? आप इस समय मुझे ऐसा कोई शाश्वत साधन और उपाय बताइये, जो कल्याणकारी वस्तुओं में भी सबसे उत्कृष्ट एवं परम मंगलकारी हो तथा पवित्र करनेवाले उपायों में भी सर्वोत्तम पवित्रकारक उपाय हो।

तात ! वह साधन ऐसा हो, जिसके अनुष्ठान से शीघ्र ही अन्त:करण की विशेष शुद्धि हो जाय तथा उससे निर्मल चित्त वाले पुरुषों को सदा के लिये शिव की प्राप्ति हो जाय।

श्रीसूतजी ने कहा -मुनिश्रेष्ठ शौनक ! तुम धन्य हो; क्योंकि तुम्हारे हृदय में पुराण-कथा सुनने का विशेष प्रेम एवं लालसा हैं। इसलिये मैं शुद्ध बुद्धि से विचार करके तुमसे परम उत्तम शास्त्र का वर्णन करता हूँ।

वत्स ! वह सम्पूर्ण शास्त्रों के सिद्धान्त से सम्पन्न, भक्ति आदि को बढ़ाने वाला तथा भगवान शिव को संतुष्ट करने वाला हैं। कानों के लिये रसायन-अमृतस्वरूप तथा दिव्य है, तुम उसे श्रवण करो।

मुने ! वह परम उत्तम शास्त्र है -शिवपुराण, जिसका पूर्वकाल में भगवान शिव ने ही प्रवचन किया था। यह काल रूपी सर्प से प्राप्त होने वाले महान त्रास का विनाश करनेवाला उत्तम साधन हैं।

व्यास जी ने सनत्कुमार मुनिका उपदेश पाकर बड़े आदर से संक्षेप में ही पुराण का प्रतिपादन किया है। इस पुराण के प्रणयन का उद्देश्य है- कलियुग में उत्पन्न होनेवाले मनुष्यों के परम हित का साधन।

यह शिवपुराण परम उत्तम शास्त्र है। इसे इस भूतल पर भगवान् शिव का वाङ्मय स्वरूप समझना चाहिये और सब प्रकार से इसका सेवन करना चाहिये। इसका पठन और श्रवण सर्वसाधनरूप है। इससे शिव भक्ति पाकर श्रेष्ठतम स्थिति में पहुँचा हुआ मनुष्य शीघ्र ही शिवपद को प्राप्त कर लेता है। इसलिये सम्पूर्ण यत्न करके मनुष्यों ने इस पुराण को पढ़ने की इच्छा की है- अथवा इसके अध्ययन को अभीष्ट साधन माना है। इसी तरह इसका प्रेमपूर्वक श्रवण भी सम्पूर्ण मनोवंछित फलों के देनेवाला है। भगवान् शिव के इस पुराण को सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है तथा इस जीवन में बड़े-बड़े उत्कृष्ट भोगों का उपभोग करके अन्त में शिवलोक को प्राप्त कर लेता है।
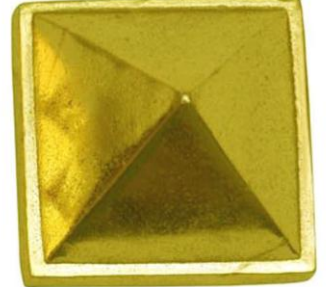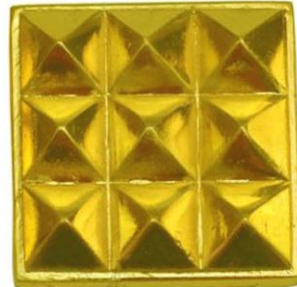
शिवपच्चाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय। नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै न काराय नम: शिवाय॥१॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय। मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय। तस्मै म काराय नम: शिवाय॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय। श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शि काराय नम: शिवाय ॥३॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय। चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै व काराय नम: शिवाय ॥४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय। दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै य काराय नम: शिवाय॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं य: पठेच्छिवसन्निधौ। शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥६॥

अर्थ :- जिनके कण्ठ में साँपों का हार है, जिनके तीन नेत्र हैं, भस्म ही जिनका अङ्गराज (अनुलेपन) है, दिशाएँ ही जिनका वस्त्र हैं (अर्थात् जो नग्न हैं) उन शुद्ध अविनाशी महेश्वर न कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥१॥ गङ्गाजल और चन्दन से जिनकी अर्चना हुई है, मन्दार-पुष्प तथा अन्यान्य कुसुमों से जिनकी सुन्दर पूजा हुई है, उन नन्दी के अधिपति प्रमथगणों के स्वामी महेश्वर म कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥२॥ जो कल्याणस्वरूप हैं, पार्वती जी के मुखकमल को विकसित (प्रसन्न) करने के लिए जो सूर्य स्वरूप हैं, जो दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले हैं, जिनकी ध्वजा में बैल का चिह्न है, उन शोभाशाली नीलकण्ठ शि कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥३॥ वसिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों ने तथा इन्द्र आदि देवताओं ने जिनके मस्तक की पूजा की है, चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र हैं, उन व कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥४॥ जिन्होंने यक्षरूप धारण किया है, जो जटाधारी हैं, जिनके हाथ में पिनाक है, जो दिव्य सनातन पुरुष हैं, उन दिगम्बर देव य कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥५॥ जो शिव के समीप इस पवित्र पञ्चाक्षर का पाठ करता है, वह शिवलोक को प्राप्त करता और वहां शिवजी के साथ आनन्दित होता है॥६॥

॥ शिवषडक्षर स्तोत्रम् ॥

ॐकारं बिंदुसंयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः ॥१॥
नमंति ऋषयो देवा नमन्त्यप्सरसां गणाः ।
नरा नमंति देवेशं नकाराय नमो नमः ॥२॥
महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम् ।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः ॥३॥
शिवं शांतं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम् ।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः ॥४॥
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कंठभूषणम् ।
वामे शक्तिधरं वेदं वकाराय नमो नमः ॥५॥
यत्र तत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः ।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः ॥६॥
षडक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥७॥
॥ इति श्री रुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे षडक्षरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

शिव मंत्र

संकलन गुरुत्व कार्यालय

शंकर भगवान की महिमा का वर्णन हिंदू धर्म शास्त्रो में कल्याणकारी देव के रूपमे किया गया हैं। क्योकि शिवजी सिफ मनुष्य मात्र का कल्याण नहीं करते, देवता और दानवो का भी कल्याण करते हैं।

इसी लिये शिवजी एसे देव हैं, जो तीनो में पूजनिय हैं। इसी लिये उन्हे देवो के भी देव महादेव के नाम से जाना जाता हैं, एवं भगवान शिव की कृपा प्राप्ति हेतु तीनो लोक मे उनकी पूजा उपासना की जाती हैं।

शिव में आस्था रखने वालो का मत हैं की महादेव ने कभी उन्हें निराश नहीं किया, शिव से जो मांगा हैं उनकी कृपा से वह पाया हैं। क्योकी शिव जी भोले भंडारी हैं, भोले अपने भक्तो के समस्त संकट दूर कर उन्हें सुख समृद्धि एवं मोक्ष प्रदान करते हैं। शंकर जी एक एसे देव हैं जो अत्यन्त शीघ्र प्रसन्न होते हैं।

शिवपुराण के अनुसार भगवान शंकर का सर्वाधिक प्रभावी एवं सरल मंत्र हैं पंचाक्षरी मंत्र।

पंचाक्षरी मंत्र-: नम :शिवाय

पंचाक्षरी मंत्र को सभी वर्गो के लोगों के लिए अत्यन्त फलदायीहैं। इस लिए कोई भी व्यक्ति इस पंचाक्षरीमंत्र को नित्य श्रद्धा पूर्वकजप कर सरलता से महादेव की कृपा प्राप्त सकता है।

पंचाक्षरी मंत्र के पांच अक्षरों में पंचानन (पांच मुख वाले) महादेव की सभी शक्तियां समायी हुई हैं।

पंचाक्षरी मंत्र के जाप करने से बडे से बडे संकट का निवारण सरलता से हो जाता हैं।

शिव के अन्य कल्याणकारी मंत्र

भगवान शिव कि शीघ्र कृपा प्राप्ति एवं तीव्र कामना सिद्धि हेतु तेजस्वी मंत्र के अनुभूत प्रयोग। इस मंत्रो के माध्यम से व्यक्ति अपनी समस्त मनोकामनाओं कि पूर्ति कर व्यक्ति दिन-प्रतिदिन सफलता कि और अग्रस्त होकर अपने जीवन में सुख समृद्धि एवं शांति सरलता से प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान शिव के मंत्रो के जाप हेतु रुद्राक्ष की माला उत्तम होती हैं। जाप हेतु पूर्व या उत्तर दिशा का चुनाव करें, एवं उत्तर-पूर्व में मुख कर जाप करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती हैं।

1. नमः शिवाय।
2. ॐ नमः शिवाय।
3. प्रौं ह्रीं ठः।
4. ऊर्ध्व भू फट्।
5. इं क्षं मं औं अं।
6. नमो नीलकण्ठाय।
7. ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय।
8. ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्त्तये मह्यं मेधा प्रयच्छ स्वाहा।

शिव पंचदेवों में देवो के देव महादेव हैं।

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्रीय मतसे

शास्त्रोमें पंचदेवों की उपासना करने का विधान हैं।

आदित्यं गणनाथं च देवीं रूद्रं च केशवम्।
पंचदैवतमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्।।

(शब्दकल्पद्रुम)

भावार्थ: - पंचदेवों कि उपासना का ब्रह्मांड के पंचभूतों के साथ संबंध है। पंचभूत पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से बनते हैं। और पंचभूत के आधिपत्य के कारण से आदित्य, गणनाथ(गणेश), देवी, रूद्र और केशव ये पंचदेव भी पूजनीय हैं। हर एक तत्त्व का हर एक देवता स्वामी हैं-

आकाशस्याधिपो विष्णुरग्नेश्चैव महेश्वरी।
वायोः सूर्यः क्षितेरीशो जीवनस्य गणाधिपः।।

भावार्थ:- क्रम इस प्रकार हैं महाभूत अधिपति

1. क्षिति (पृथ्वी) शिव
2. अप् (जल) गणेश
3. तेज (अग्नि) शक्ति (महेश्वरी)
4. मरूत् (वायु) सूर्य (अग्नि)
5. व्योम (आकाश) विष्णु

भगवान् श्रीशिव पृथ्वी तत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी शिवलिंग के रुप में पार्थिव-पूजा का विधान हैं। भगवान् विष्णु के आकाश तत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी शब्दों द्वारा स्तुति करने का विधान हैं। भगवती देवी के अग्नि तत्त्व का अधिपति होने के कारण उनका अग्निकुण्ड में हवनादि के द्वारा पूजा करने का विधान हैं। श्रीगणेश के जलतत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी सर्वप्रथम पूजा करने का विधान हैं, क्योंकि ब्रह्मांद में सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाले जीव तत्त्व 'जल' का अधिपति होने के कारण गणेशजी ही प्रथम पूज्य के अधिकारी होते हैं।

सोमवार व्रत कथा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

विदित हो कि कैलाश के उत्तर में निषध पर्वत के शिखर पर स्वयं प्रभा नामक एक विशाल पुरी थी जिसमें धन वाहन नामक एक गणविराज रहते थे। समय अनुसार उन्हे आठ पुत्र और अंत में एक कन्या उत्पन्न हुई जिसका नाम गंधर्व सेना था। वह अत्यन्त रूपवती थी और उसे अपने रूप का बहुत अभिमान था। वह कहा करती थी कि संसार में कोई गंधर्व या देवी मेरे रूप के करोड़वे अंश के समान भी नहीं है। एक दिन एक आकाशचरीगण नायक ने उसकी बात सुनी तो उसे शाप दे दिया 'तुम रूप के अभिमान' में गंधर्वों और देवताओं का अपमान करती हो अत :तुम्हारे शरीर में कोढ़ हो जायेगा। शाप सुन कर कन्या भयभीत हो गयी और दया की भीख मांगने लगी। उसकी बिनती सुन कर गणनायक को दया आ गयी और उन्होंने कहा हिमालय के वन में गोश्रृंग नाम के श्रेष्ठ मुनी रहते है। वे तुम्हारा उपकार करेगे। ऐसा कह कर गणनायक चला गया। गंधर्व सेना व छोड़ कर अपने पिता के पास आई और अपने कुष्ट होने के कारण तथा उससे मुक्ति का उपाय बताया। माता पिता उसे तत्क्षण लेकर हिमालय पर्वत पर गए और गोश्रृंग का दर्शन करके स्तुति करने लगे। मुनि के पूछने पर उन्होंने कहा कि मेरे बेटी को कोढ़ हो गया है कृपया इसकी शांति का कोई उपाय बताएं।

मुनि ने कहा कि समुद्र के समीप भगवान सोमनाथ विराजमान है। वहां जाकर सोमवार व्रत द्वारा भगवान शंकर की आराधना करो। ऐसा करने से पुत्री का रोग दूर हो जायेगा। मुनि के वचन सुन कर धनवाहन अपनी पुत्री के साथ प्रभास क्षेत्र में जाकर सोमनाथ के दर्शन किए और पूरे विधि विधान के साथ सोमवार व्रज करते हुए भगवान शंकर की आराधना किए उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर शंकर भगवान ने उस कन्या के रोगों को दूर किया और उन्हे अपनी भक्ति भी दान में दिया। आज भी लोग शिव जी को प्रसन्न करने के लिए इस व्रत को पूरी निष्ठा एवं भक्ति के साथ करते है और शिव कि कृपा को प्राप्त करते है।

शिव के दस प्रमुख अवतार

संकलन गुरुत्व कार्यालय

शिवपुराण के अनुसार भगवान शिव के दस प्रमुख अवतार ।

यह दस अवतार इस प्रकार है जो मानव को सभी इच्छित फल प्रदान करने वाले हैं-

1. महाकाल- शिव के दस प्रमुख अवतारों में पहला अवतार महाकाल नाम से विख्यात हैं। भगवान शिव का महाकाल स्वरुप अपने भक्तों को भोग और मोक्ष प्रदान करने वाला परम कल्याणी हैं। इस अवतार की शक्ति मां महाकाली मानी जाती हैं।

2. तार- शिव के दस प्रमुख अवतारों में दूसरा अवतार तार नाम से विख्यात हैं। भगवान शिव का तार स्वरुप अपने भक्तों को भुक्ति-मुक्ति दोनों फल प्रदान करने वाला हैं। इस अवतार की शक्ति तारादेवी मानी जाती हैं।

3. बाल भुवनेश- शिव के दस प्रमुख अवतारों में तीसरा अवतार बाल भुवनेश नाम से विख्यात हैं। भगवान शिव का बाल भुवनेश स्वरुप अपने भक्तों को सुख, समृद्धि और शांति प्रदान करने वाला हैं। इस अवतार की शक्ति को बाला भुवनेशी माना जाता हैं।

4.षोडश श्रीविद्येश- शिव के दस प्रमुख अवतारों में चौथा अवतार षोडश श्रीविद्येश नाम से विख्यात हैं। भगवान शिव का षोडश श्रीविद्येश स्वरुप अपने भक्तों को सुख, भोग और मोक्ष प्रदान करने वाला हैं। इस अवतार की शक्ति को देवी षोडशी श्रीविद्या माना जाता हैं।

5. भैरव- शिव के दस प्रमुख अवतारों में पांचवा अवतार भैरव नाम से विख्यात हैं। भगवान शिव का भैरव स्वरुप अपने भक्तों को मनोवांछित फल प्रदान करने वाला हैं। इस अवतार की शक्ति भैरवी गिरिजा मानी जाती हैं।

6. छिन्नमस्तक- शिव के दस प्रमुख अवतारों में छठा अवतार छिन्नमस्तक नाम से विख्यात हैं। भगवान शिव का छिन्नमस्तक स्वरुप अपने भक्तों की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला हैं। इस अवतार की शक्ति देवी छिन्नमस्ता मानी जाती हैं।

7. धूमवान- शिव के दस प्रमुख अवतारों में सातवां अवतार धूमवान नाम से विख्यात हैं। भगवान शिव का धूमवान स्वरुप अपने भक्तों की सभी प्रकार से श्रेष्ठ फल देने वाला हैं। इस अवतार की शक्ति को देवी धूमावती माना जाता हैं।

8. बगलामुख- शिव के दस प्रमुख अवतारों में आठवां अवतार बगलामुख नाम से विख्यात हैं। भगवान शिव का बगलामुख स्वरुप अपने भक्तों को परम आनंद प्रदान करने वाला हैं। इस अवतार की शक्ति को देवी बगलामुखी माना जाता हैं।

9. मातंग- शिव के दस प्रमुख अवतारों में नौवां अवतार मातंग के नाम से विख्यात हैं। भगवान शिव का मातंग स्वरुप अपने भक्तों की समस्त अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाला हैं। इस अवतार की शक्ति को देवी मातंगी माना जाता हैं।

10. कमल- शिव के दस प्रमुख अवतारों में दसवां अवतार कमल नाम से विख्यात हैं। भगवान शिव का कमल स्वरुप अपने भक्तों को भुक्ति और मुक्ति प्रदान करने वाला हैं। इस अवतार की शक्ति को देवी कमला माना जाता हैं।

विद्वानो के मत से उक्त शिव के सभी प्रमुख अवतार व्यक्ति को सुख, समृद्धि, भोग, मोक्ष प्रदान करने वाले एवं व्यक्ति की रक्षा करने वाले हैं।

जब शिवजी नें ब्रह्माजी की आलोचना की?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्रो में उल्लेखित कथा के अनुशार एक बार ब्रह्माजी और विष्णुजी में विवाद छिड़ गया कि दोनों देवो में में श्रेष्ठ कौन हैं। एक तरफ सृष्टि के रचयिता होने के कारण ब्रह्माजी स्वयंको श्रेष्ठ होने का चूनाव कर रहे थे, दूसरी तरफ भगवान विष्णु पूरी सृष्टि के पालन कर्ता होने के कारण स्वयं को श्रेष्ठ बता रहे थे।

उसी समय वहां एक विराट ज्योतिर्मय लिंग प्रकट हुआ। ज्योतिर्मय लिंग को देख कर दोनों देवताओं के विचार-विमर्श से यह निश्चय किया कि दोनो में से जो इस ज्योतिर्मय लिंग के छोर का सबसे पहले पता लगायेगा उसे ही श्रेष्ठ माना जायेगा। इस लिये दोनों देवता विपरीत दिशा में ज्योतिर्मय लिंग का छोर ढूंढने निकल गये।

ज्योतिर्मय लिंग का छोर नहीं मिलने के कारण विष्णुजी वापस लौट आये। ब्रह्मा जी भी ज्योतिर्मय लिंग का छोर ढूंढ ने में असफल रहे लेकिन ब्रह्माजी ने वापस आकर विष्णुजी से कहा कि वे छोर तक पहुँच गये थे। ब्रह्माजी ने केतकी के फूल को ज्योतिर्मय लिंग तक पहुँच ने की बात का साक्षी बताया। ब्रह्मा जी के असत्य कहते ही स्वयं शिवजी वहाँ प्रकट हुए और उन्होंने ब्रह्मा जी की आलोचना की।

शिवजी की उपस्थिती से दोनों देवताओं ने भगवान शिव की स्तुति की तब शिव जी बोले कि मैं ही सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता, धरता और स्वामी हूँ। मैंने ही आप दोनों को उत्पन्न किया हैं। तब शिवजी ने क्रोधीत हो कर केतकी पुष्प को झूठी साक्षी देने के लिए दंडित करते हुए कहा कि यह पुष्प मेरी पूजा में प्रयुक्त नहीं होगा। तब से लेकर भगवान शिव के पूजन में केतकी पुष्प का प्रयोग नहीं किया जाता।

जब शिवजी ने चंद्रमा को शाप मुक्त किया

संकलन गुरुत्व कार्यालय

पुराणो में उल्लेखित कथा के अनुशार

शिव पुराण की कथा अनुशार प्राचीन काल में एक दक्ष नामके राजा थे दक्षकी सत्ताईस कन्याएं थीं। दक्ष ने अश्विनी समेत अपनी सभी कन्याओं का विवाह चंद्रमा से किये थे। जहां एक ओर चंद्रमा सत्ताईस कन्याओं के पति बन के बेहद खुश थे। वहीं दूसरी ओर दक्ष की कन्याएं चंद्रमा की पत्नीयां भी चंद्रमा को वर के रूप में पाकर अति प्रसन्न थीं। लेकिन चंद्रमा की पत्नीओं की ये प्रसन्नता ज्यादा दिनों तक कायम नहीं रह सकी। क्योंकि कुछ दिनों के बाद चंद्रमा उनमें से एक रोहिणी पर ज्यादा आकर्षित व मोहित हो गए।

इस बात का जब राजा दक्ष को पता चली तो वो चंद्रमा को समझाने गए। चंद्रमा ने उनकी बातें सुनीं, लेकिन कुछ दिनों के बाद फिर रोहिणी पर उनकी आसक्ति और तेज हो गई। जब राजा दक्ष को यह बात पता चली तो वो गुस्से में चंद्रमा के पास गए। दक्षने कहा कि मैं तुमको पहले भी समझा चुका हूं। लेकिन लगता है तुम पर मेरी बात का असर नहीं होने वाला। इसलिए मैं तुम्हें शाप देता हूं कि तुम क्षय रोग के पीडित हो जाओ।

राजा दक्ष के इस श्राप के तुरंत बाद चंद्रमा क्षय रोग से ग्रस्त होकर धूमिल होती गई। उनकी रौशनी जाती रही। यह देखकर समस्त देवता और ऋषि-मुनि बहुत परेशान हुए। इसके बाद सारे ऋषि मुनि और देवता इंद्र के साथ भगवान ब्रह्माजी के पास में गए। फिर ब्रह्माजी ने उन्हें एक उपाय बताया।

उपाय के अनुशार चंद्रमा को भारत के पश्चिम में सौराष्ट्र (गुजरात) में स्थित सोमनाथ जा कर भगवान शिव का तप करने को कहा, ब्रह्मा जी के अनुशार इसी स्थान पर शिवजी प्रत्यक्ष रुप से प्रकट होने के बाद वो दक्ष के शाप से चंद्रमा मुक्त हो सकते थे।

ब्रह्मा से उपाय पाकर चंद्रमा सोमनाथ गए। भगवान शिव के महामृत्युंजय मंत्र से विधि-वत पूजन किया। चंद्रमा छह महीने तक शिव की कठोर तपस्या करते रहे। चंद्रमा की कठोर तपस्या से प्रशन्न हो भगवान शिव ने प्रत्यक्ष दर्शन दिये और चंद्रमा से वर मांगने को कहा।

चंद्रमा ने वर मांगा कि हे भगवन अगर आप मेरी आराधना से प्रशन्न हैं तो मुझे इस क्षय रोग से मुक्ति दीजिए और मेरे सारे अपराधों को क्षमा कर दीजिए।

भगवान शिव ने कहा कि तुम्हें दक्षने शाप दिया है वो दक्ष कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। लेकिन मैं तुम्हारे लिए कु उपाय करूंगा जरूर। इसके बाद भगवान शिव एक उपाय खोज निकाला, और चंद्रमा से कहां, कि मैं तुम्हारे लिए ये कर सकता हूं एक माह में जो दो पक्ष होते हैं, उसमें से एक पक्ष में तुम निखरते जाओगे अर्थात तुम्हारा तेज फेलेगा। लेकिन दूसरे पक्ष में तुम क्षीण भी होओगे अर्थात तुम्हारा तेज कम होता जयेगा।

यह पौराणिक मान्यता है जिस के फल स्वरुप चंद्रमा के शुक्ल और कृष्ण पक्ष का जिसमें एक पक्ष में वो बढ़ते हैं और दूसरे में वो घटते जाते हैं। भगवान शिव के इस वर से भी चंद्रमा काफी खुश हो गए। चंद्रमाने भगवान शिव का आभार प्रकट किया उनकी स्तुति की।

॥दारिद्र्य दहन शिवस्तोत्रं॥

विश्वेश्वराय नरकार्णव तारणाय कणामृताय शशिशेखरधारणाय।
कर्पूरकान्तिधवलाय जटाधराय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥१॥

गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकङ्कणाय।
गंगाधराय गजराजविमर्दनाय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥२॥

भक्तिप्रियाय भवरोगभयापहाय उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥३॥

चर्मम्बराय शवभस्मविलेपनाय भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय।
मंझीरपादयुगलाय जटाधराय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥४॥

पञ्चाननाय फणिराजविभूषणाय हेमांशुकाय भुवनत्रयमण्डिताय।
आनन्दभूमिवरदाय तमोमयाय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥५॥

भानुप्रियाय भवसागरतारणाय कालान्तकाय कमलासनपूजिताय।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षण लक्षिताय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥६॥

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥७॥

मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय गीतप्रियाय वृषभेश्वरवाहनाय।
मातङ्गचर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥८॥

वसिष्ठेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोगनिवारणं। सर्वसंपत्करं शीघ्रं पुत्रपौत्रादिवर्धनम्।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं स हि स्वर्गमवाप्नुयात्॥९॥

॥इति वसिष्ठ विरचितं दारिद्र्यदहनशिवस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

फल: एसा शास्रोक्त वचन हैं जो व्यक्ति श्रद्धा भाव से तीनोकाल सुबह, संध्या एवं रात्री के समय दारिद्र्य दहन शिवस्तोत्रं का पाठ करते उनके दुख एवं सर्व रोग का निवारण होकर उसे, संपत्ति एवं संतान लाभ प्राप्त होता हैं।

॥ द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्रम् ॥

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम् ।
भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ १॥
श्रीशैलशृङ्गे विबुधातिसङ्गे तुलाद्रितुङ्गेऽपि मुदा वसन्तम् ।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसारसमुद्रसेतुम् ॥ २॥
अवन्तिकायां विहितावतारं मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम् ।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमहासुरेशम् ॥ ३॥
कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय ।
सदैवमान्धातृपुरे वसन्तमोङ्कारमीशं शिवमेकमीडे ॥ ४॥
पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसन्तं गिरिजासमेतम् ।
सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि ॥ ५॥
याम्ये सदङ्गे नगरेऽतिरम्ये विभूषिताङ्गं विविधैश्च भोगैः ।
सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ ६॥
महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः ।
सुरासुरैर्यक्ष महोरगाढ्यैः केदारमीशं शिवमेकमीडे ॥ ७॥
सह्याद्रिशीर्षे विमले वसन्तं गोदावरितीरपवित्रदेशे ।
यद्धर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे ॥ ८॥
सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः ।
श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि ॥ ९॥
यं डाकिनिशाकिनिकासमाजे निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च ।
सदैव भीमादिपदप्रसिद्दं तं शङ्करं भक्तहितं नमामि ॥ १०॥
सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम् ।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ ११॥
इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम् ।
वन्दे महोदारतरस्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शरणम् प्रपद्ये ॥ १२॥
ज्योतिर्मयद्वादशलिङ्गकानां शिवात्मनां प्रोक्तमिदं क्रमेण ।
स्तोत्रं पठित्वा मनुजोऽतिभक्त्या फलं तदालोक्य निजं भजेच्च ॥

॥ इति द्वादश ज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

शिवाष्टकं

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं जगन्नाथनाथं सदानन्दभाजाम् ।
भवद्भव्यभूतेश्वरं भूतनाथं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ १॥

गले रुण्डमालं तनौ सर्पजालं महाकालकालं गणेशाधिपालम् ।
जटाजूटभङ्गोत्तरङ्गैर्विशालं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ २॥

मुदामाकरं मण्डनं मण्डयन्तं महामण्डल भस्मभूषधरंतम् ।
अनादिह्यपारं महामोहहारं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ३॥

तटाधो निवासं महाट्टाट्टहासं महापापनाशं सदासुप्रकाशम् ।
गिरीशं गणेशं महेशं सुरेशं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ४॥

गिरिन्द्रात्मजासंग्रहीतार्धदेहं गिरौ संस्थितं सर्वदा सन्नगेहम् ।
परब्रह्मब्रह्मादिभिर्वन्ध्यमानं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ५॥

कपालं त्रिशूलं कराभ्यां दधानं पदाम्भोजनम्राय कामं ददानम् ।
बलीवर्दयानं सुराणां प्रधानं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ६॥

शरच्चन्द्रगात्रं गुणानन्द पात्रं त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्य मित्रम् ।
अपर्णाकलत्रं चरित्रं विचित्रं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ७॥

हरं सर्पहारं चिता भूविहारं भवं वेदसारं सदा निर्विकारम् ।
श्मशाने वदन्तं मनोजं दहन्तं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ८॥

स्तवं यः प्रभाते नरः शूलपाणे पठेत् सर्वदा भर्गभावानुरक्तः ।
स पुत्रं धनं धान्यमित्रं कलत्रं विचित्रं समासाद्य मोक्षं प्रयाति ॥९॥

॥ इति शिवाष्टकम् संपूर्णम्॥

॥वैद्यनाथाष्टकम्॥

श्रीरामसौमित्रिजटायुवेद षडाननादित्य कुजार्चिताय।
श्रीनीलकण्ठाय दयामयाय श्रीवैद्यनाथाय नमःशिवाय॥१॥

गङ्गाप्रवाहेन्दु जटाधराय त्रिलोचनाय स्मर कालहन्त्रे।
समस्त देवैरभिपूजिताय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥२॥

भक्तःप्रियाय त्रिपुरान्तकाय पिनाकिने दुष्टहराय नित्यम्।
प्रत्यक्षलीलाय मनुष्यलोके श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥३॥

प्रभूतवातादि समस्तरोग प्रनाशकर्त्रे मुनिवन्दिताय।
प्रभाकरेन्द्वग्नि विलोचनाय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥४॥

वाक् श्रोत्र नेत्राङ्घ्रि विहीनजन्तोः वाक्श्रोत्रनेत्रांघ्रिसुखप्रदाय।
कुष्ठादिसर्वोन्नतरोगहन्त्रे श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥५॥

वेदान्तवेद्याय जगन्मयाय योगीश्वरद्येय पदाम्बुजाय।
त्रिमूर्तिरूपाय सहस्रनाम्ने श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥६॥

स्वतीर्थमृद्भस्मभृताङ्गभाजां पिशाचदुःखार्तिभयापहाय।
आत्मस्वरूपाय शरीरभाजां श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥७॥

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय स्रक्गन्ध भस्माद्यभिशोभिताय।
सुपुत्रदारादि सुभाग्यदाय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥८॥

वालाम्बिकेश वैद्येश भवरोगहरेति च।
जपेन्नामत्रयं नित्यं महारोगनिवारणम्॥९॥

॥इति श्री वैद्यनाथाष्टकम्॥

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY

Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvakaryalay.in

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

गुरु पुष्यामृत योग 4 जुलाई 2019

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हर दिन बदलने वाले नक्षत्र मे पुष्य नक्षत्र भी एक नक्षत्र है, एवं अन्दाज से हर २७वें दिन पुष्य नक्षत्र होता है। यह जिस वार को आता है, इसका नाम भी उसी प्रकार रखा जाता है।

इसी प्रकार गुरुवार को पुष्य नक्षत्र होने से गुरु पुष्य योग कहाजात है।

गुरु पुष्य योग के बारे में विद्वान ज्योतिषियो का कहना हैं कि पुष्य नक्षत्र में धन प्राप्ति, चांदी, सोना, नये वाहन, बही-खातों की खरीदारी एवं गुरु ग्रह से संबंधित वस्तुए अत्याधिक लाभ प्रदान करती है।

हर व्यक्ति अपने शुभ कार्यो में सफलता हेतु इस शुभ महूर्त का चयन कर सबसे उपयुक्त लाभ प्राप्त कर सकता है और अशुभता से बच सकता है।

प्रातः 05:00 से रात 02:31 तक

अपने जीवन में दिन-प्रतिदिन सफलता की प्राप्ति के लिए इस अद्भुत महूर्त वाले दिन किसी भी नये कार्य को जेसे नौकरी, व्यापार या परिवार से जुड़े कार्य, बंध हो चुके कार्य शुरू करने के लिये एवं जीवन के कोई भी अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र में कार्य करने से 99.9% निश्चित सफलता की संभावना होति है।

- गुरुपुष्यामृत योग बहोत कम बनता है जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होता है । तब बनता है गुरु पुष्य योग।
- गुरुवार के दिन शुभ कार्यो एवं आध्यात्म से संबंधित कार्य करना अति शुभ एवं मंगलमय होता है।
- पुष्य नक्षत्र भी सभी प्रकार के शुभ कार्यो एवं आध्यात्म से जुडे कार्यो के लिये अति शुभ माना गया है।
- जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होता तब यह योग बन जाता है अद्भुत एवं अत्यंत शुभ फल प्रद अमृत योग।
- एक साधक के लिए बेहद फायदेमंद होता हैं **गुरुपुष्यामृत योग**।
- इस दिन विद्वान एवं गुढ रहस्यो के जानकार मां महालक्ष्मी की साधना करने की सलाह देते है।
- यह योग विशेष साधना के लिये अति शुभ एवं शीघ्र परीणाम देने वाला होता है।
- मां महालक्ष्मी का आह्वान करके अत्यंत सरलता से उनकी कृपा द्रष्टि से समृद्धि और शांति प्राप्त कि जासकती है।

पुष्य नक्षत्र का महत्व क्यों हैं?

शास्त्रो में पुष्य नक्षत्र को नक्षत्रों का राजा बताया गया हैं। जिसका स्वामी शनि ग्रह हैं। शनि को ज्योतिष में स्थायित्व का प्रतीक माना गया हैं। अतः पुष्य नक्षत्र सबसे शुभ नक्षत्रो में से एक हैं।

यदि रविवार को पुष्य नक्षत्र हो तो रवि पुष्य योग और गुरुवार को हो तो और गुरु पुष्य योग कहलाता हैं।

शास्त्रों में पुष्य योग को 100 दोषों को दूर करने वाला, शुभ कार्य उद्देश्यो में निश्चित सफलता प्रदान करने वाला एवं बहुमूल्य वस्तुओं कि खरीदारी हेतु सबसे श्रेष्ठ एवं शुभ फलदायी योग माना गया है।

गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग से सर्वार्थ अमृतसिद्धि योग बनता है। शनिवार के दिन पुष्य नक्षत्र के संयोग से सर्वार्थसिद्धि योग होता है। पुष्य नक्षत्र को ब्रह्माजी का श्राप मिला था। इसलिए शास्त्रोक्त विधान से पुष्य नक्षत्र में विवाह वर्जित माना गया है।

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 190, 280, Real -1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

>> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।
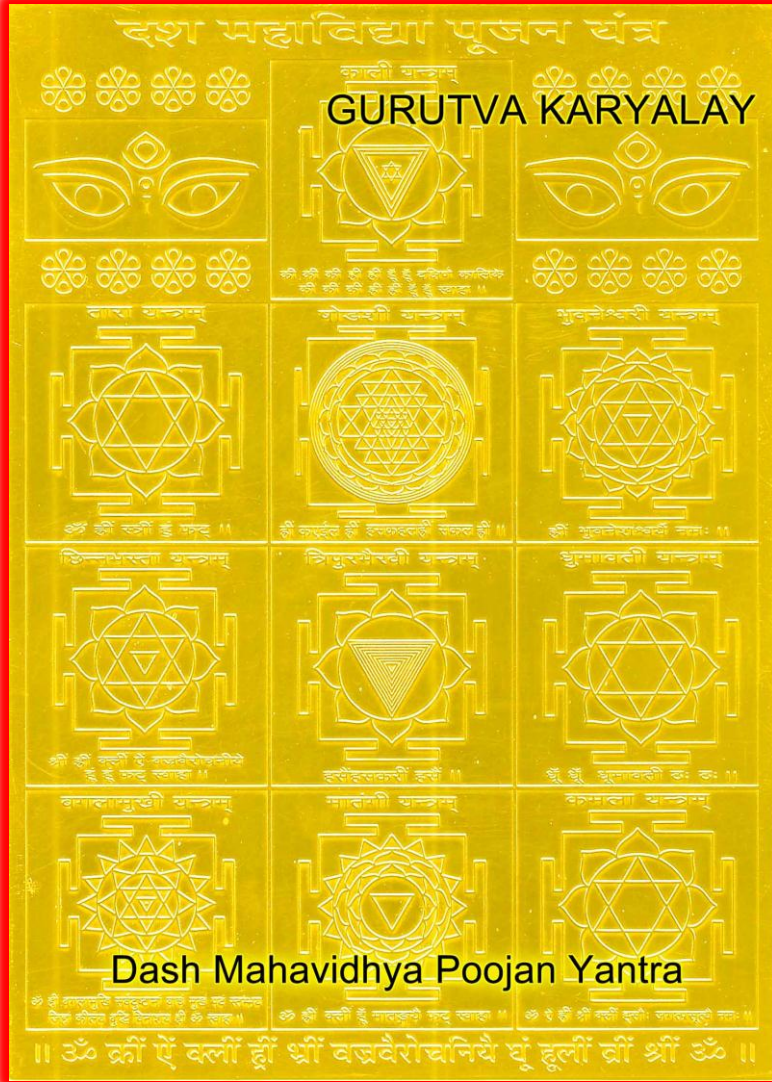
दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

पारद श्री यंत्र	पारद लक्ष्मी गणेश	पारद लक्ष्मी नारायण	पारद लक्ष्मी नारायण
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	100 Gram	121 Gram	100 Gram
पारद शिवलिंग	पारद शिवलिंग+नंदि	पारद शिवजी	पारद काली
21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध	75 Gram	37 Gram
पारद दुर्गा	पारद दुर्गा	पारद सरस्वती	पारद सरस्वती
82 Gram	100 Gram	50 Gram	225 Gram
पारद हनुमान 2	पारद हनुमान 3	पारद हनुमान 1	पारद कुबेर
100 Gram	125 Gram	100 Gram	100 Gram

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> **Shop Online** | **Order Now**

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com |
www.gurutvakaryalay.blogspot.com

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

पुरुषाकार शनि यंत्र

पुरुषाकार शनि यंत्र (स्टील में) को तीव्र प्रभावशाली बनाने हेतु शनि की कारक धातु शुद्ध स्टील(लोहे) में बनाया गया हैं। जिस के प्रभाव से साधक को तत्काल लाभ प्राप्त होता हैं। यदि जन्म कुंडली में शनि प्रतिकूल होने पर व्यक्ति को अनेक कार्यों में असफलता प्राप्त होती है, कभी व्यवसाय में घटा, नौकरी में परेशानी, वाहन दुर्घटना, गृह क्लेश आदि परेशानीयां बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में प्राणप्रतिष्ठित ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की अपने को व्यपार स्थान या घर में स्थापना करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए। शनियंत्र के पूजन मात्र से व्यक्ति को मृत्यु, कर्ज, कोर्टकेश, जोडो का दर्द, बात रोग तथा लम्बे समय के सभी प्रकार के रोग से परेशान व्यक्ति के लिये शनि यंत्र अधिक लाभकारी होगा। नौकरी पेशा आदि के लोगों को पदौन्नति भी शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी यंत्र है जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मूल्य: 1225 से 8200 >> Shop Online | Order Now

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित
22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

शनि तैतिसा यंत्र

शनिग्रह से संबंधित पीडा के निवारण हेतु विशेष लाभकारी यंत्र।

मूल्य: 640 से 12700 >> Shop Online | Order Now

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> **Shop Online** | **Order Now**

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 325 से 12700 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 910 से 12700 तक

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र
मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रह्माण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	550	1" X 1"	370	1" X 1"	325
2" X 2"	910	2" X 2"	640	2" X 2"	550
3" X 3"	1450	3" X 3"	1050	3" X 3"	910
4" X 4"	2350	4" X 4"	1450	4" X 4"	1225
6" X 6"	3700	6" X 6"	2800	6" X 6"	2350
9" X 9"	9100	9" X 9"	4600	9" X 9"	4150
12" X12"	12700	12" X12"	9100	12" X12"	9100

जुलाई 2019 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	सोम	आषाढ़	कृष्ण	चतुर्दशी	27:2	रोहिणि	09:24	गंड	17:38	विष्टि	16:00	वृष	20:54
2	मंगल	आषाढ़	कृष्ण	अमावस्या	24:45	मृगशिरा	08:13	वृद्धि	14:49	चतुष्पाद	13:57	मिथुन	-
3	बुध	आषाढ़	शुक्ल	एकम	22:07	आद्रा	06:35	ध्रुव	11:40	किस्तुघ्न	11:29	मिथुन	23:10
4	गुरु	आषाढ़	शुक्ल	द्वितीया	19:15	पुष्य	26:29	व्याघात	08:16	बालव	08:42	कर्क	-
5	शुक्र	आषाढ़	शुक्ल	तृतीया	16:17	आश्लेषा	24:17	वज्र	25:10	तैतिल	05:46	कर्क	-
6	शनि	आषाढ़	शुक्ल	चतुर्थी	13:20	मघा	22:09	सिद्धि	21:40	विष्टि	13:20	कर्क	0018
7	रवि	आषाढ़	शुक्ल	पंचमी	10:31	पूर्वाफाल्गुनी	20:13	व्यतिपात	18:19	बालव	10:31	सिंह	-
8	सोम	आषाढ़	शुक्ल	षष्ठी	07:56	उत्तराफाल्गुनी	18:33	वरियान	15:13	तैतिल	07:56	सिंह	01:47
9	मंगल	आषाढ़	शुक्ल	सप्तमी - अष्टमी	05:39 -27:46	हस्त	17:15	परिग्रह	12:24	वणिज	05:39	कन्या	-
10	बुध	आषाढ़	शुक्ल	नवमी	26:17	चित्रा	16:21	शिव	09:56	बालव	14:58	कन्या	04:46
11	गुरु	आषाढ़	शुक्ल	दशमी	25:16	स्वाती	15:55	सिद्ध	07:50	तैतिल	13:43	तुला	-
12	शुक्र	आषाढ़	शुक्ल	एकादशी	24:43	विशाखा	15:56	साध्य	06:07	वणिज	12:56	तुला	09:54
13	शनि	आषाढ़	शुक्ल	द्वादशी	24:38	अनुराधा	16:27	शुक्ल	27:53	बव	12:37	वृश्चिक	-
14	रवि	आषाढ़	शुक्ल	त्रयोदशी	25:1	जेष्ठा	17:25	ब्रहम	27:20	कौलव	12:46	वृश्चिक	17:26
15	सोम	आषाढ़	शुक्ल	चतुर्दशी	25:52	मूल	18:51	इन्द्र	27:10	गर	13:23	धनु	-

16	मंगल	आषाढ़	शुक्ल	पूर्णिमा	27:8	पूर्वाषाढ़	20:42	वैधृति	27:20	विष्टि	14:26	धनु	-
17	बुध	श्रावण	कृष्ण	एकम	28:47	उत्तराषाढ़	22:58	विषकुंभ	27:48	बालव	15:55	धनु	03:15
18	गुरु	श्रावण	कृष्ण	द्वितीया	....	श्रवण	25:33	प्रीति	28:32	तैतिल	17:45	मकर	-
19	शुक्र	श्रावण	कृष्ण	तृतीया	06:47	धनिष्ठा	28:24	आयुष्मान	29:28	गर	06:47	मकर	14:54
20	शनि	श्रावण	कृष्ण	तृतीया	09:01	शतभिषा	....	सौभाग्य	....	विष्टि	09:01	कुंभ	-
21	रवि	श्रावण	कृष्ण	चतुर्थी	11:24	शतभिषा	07:24	सौभाग्य	06:29	बालव	11:24	कुंभ	-
22	सोम	श्रावण	कृष्ण	पंचमी	13:46	पूर्वाभाद्रपद	10:24	शोभन	07:31	तैतिल	13:46	कुंभ	03:40
23	मंगल	श्रावण	कृष्ण	षष्ठी	15:57	उत्तराभाद्रपद	13:13	अतिगंड	08:24	वणिज	15:57	मीन	-
24	बुध	श्रावण	कृष्ण	सप्तमी	17:46	रेवति	15:41	सुकर्मा	09:01	बव	17:46	मीन	15:42
25	गुरु	श्रावण	कृष्ण	अष्टमी	19:02	अश्विनी	17:38	धृति	09:15	बालव	06:29	मेष	-
26	शुक्र	श्रावण	कृष्ण	नवमी	19:39	भरणी	18:56	शूल	08:59	तैतिल	07:26	मेष	-
27	शनि	श्रावण	कृष्ण	दशमी	19:31	कृतिका	19:29	गंड	08:07	वणिज	07:41	मेष	01:10
28	रवि	श्रावण	कृष्ण	एकादशी	18:37	रोहिणि	19:17	वृद्धि	06:39	बव	07:10	वृष	-
29	सोम	श्रावण	कृष्ण	द्वादशी	17:00	मृगशिरा	18:21	व्याघात	25:52	कौलव	05:54	वृष	06:55
30	मंगल	श्रावण	कृष्ण	त्रयोदशी	14:43	आद्रा	16:46	हर्षण	22:42	वणिज	14:43	मिथुन	-
31	बुध	श्रावण	कृष्ण	चतुर्दशी	11:54	पुनर्वसु	14:40	वज्र	19:07	शकुनि	11:54	मिथुन	09:15

जुलाई 2019 मासिक व्रत-पर्व-त्योहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	सोम	आषाढ़	कृष्ण	चतुर्दशी	27:2	शिव चतुर्दशी, मासिक शिवरात्रि व्रत, सोमवारी व्रत,
2	मंगल	आषाढ़	कृष्ण	अमावस्या	24:45	स्नान-दान-श्राद्ध हेतु उत्तम आषाढ़ी अमावस्या, भौमवती अमावस, गंगास्नान करोड़ों सूर्यग्रहण समान फलदायक, हलहारिणी अमावस, वंशवर्द्धक अमावस्या व्रत,
3	बुध	आषाढ़	शुक्ल	एकम	22:07	गुप्त आषाढ़ी नवरात्र प्रारंभ, कच्छ के नवसंवत्सर प्रारंभ,
4	गुरु	आषाढ़	शुक्ल	द्वितीया	19:15	नवीन चंद्र दर्शन, श्रीजगन्नाथ-सुभद्रा-बलराम रथयात्रा (जगन्नाथ पुरी), मनोरथ द्वितीया व्रत, स्वयंसिद्ध मुहूर्त
5	शुक्र	आषाढ़	शुक्ल	तृतीया	16:17	नित्यलीलावास, गुण्डीचा महोत्सव (जगन्नाथ पुरी), कामाख्या देवी की अम्बुवाची प्रवृत्ति (असम)
6	शनि	आषाढ़	शुक्ल	चतुर्थी	13:20	विनायकी चतुर्थी, वरदविनायक चतुर्थी व्रत (चंद्र.अ. 22:34) डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी दिवस,
7	रवि	आषाढ़	शुक्ल	पंचमी	10:31	हैरा पंचमी (उ),
8	सोम	आषाढ़	शुक्ल	षष्ठी	07:56	स्कन्दषष्ठी व्रत, कर्दमषष्ठी (प.बं), कसुंबा षष्ठी (गु), कामाख्या अम्बुवाची निवृत्ति (असम),
9	मंगल	आषाढ़	शुक्ल	सप्तमी - अष्टमी	05:39 -27:46	श्रीदुर्गा अष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, परशुरामाष्टमी, महिषघ्नी व्रत, हार अष्टमी,
10	बुध	आषाढ़	शुक्ल	नवमी	26:17	भड्डली नवमी, कन्दर्प नवमी, हार नवमी, गुप्त आषाढ़ी नवरात्र पूर्ण,
11	गुरु	आषाढ़	शुक्ल	दशमी	25:16	आशा दशमी, गिरिजा पूजन, सोपपदा दशमी, पुनर्यात्रा उल्टा रथ (उ)
12	शुक्र	आषाढ़	शुक्ल	एकादशी	24:43	श्रीहरि शयनी (देवशयनी) एकादशी व्रत, रविनारायण एकादशी (उ), पंढ़रपुर यात्रा (महाराष्ट्र), रात्रि में श्रीविष्णु-शयनोत्सव
13	शनि	आषाढ़	शुक्ल	द्वादशी	24:38	वासुदेव द्वादशी
14	रवि	आषाढ़	शुक्ल	त्रयोदशी	25:1	प्रदोष व्रत, चातुर्मास व्रत एवं नियम प्रारंभ, श्रीकृष्ण द्वादशी, वामन-पूजन, हार द्वादशी, श्यामबाबा द्वादशी, वासुदेव द्वादशी. जयापार्वती व्रत प्रारंभ (गुज), मंगला तेरस,
15	सोम	आषाढ़	शुक्ल	चतुर्दशी	25:52	शिव-शयन चतुर्दशी (ओड़ी), चतुर्दशी व्रत,

16	मंगल	आषाढ़	शुक्ल	पूर्णिमा	27:8	स्नान-दान-व्रत हेतु उत्तम आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा महोत्सव, व्यास-पूजन, मुड़िया पूनम, गोवर्द्धन परिक्रमा, दक्षिणामूर्ति पूजन, संन्यासियों का चातुर्मास प्रारंभ, कोकिला व्रत प्रारंभ, खंडग्रास चंद्रग्रहण
17	बुध	श्रावण	कृष्ण	एकम	28:47	सूर्य की कर्क संक्रांति प्रातः 04:40 बजे, श्रावण (सावन मास) प्रारंभ, शिव अर्चन शुरू, सावन में चातुर्मास के व्रत धारी हेतु साग त्याग करने का शास्त्रोंक्त विधान, सूर्य दक्षिणायन, अयन संक्रान्ति के बाद 3 दिनों तक शुभ कार्य वर्जित, पूजा-संकल्प में प्रयोजनीय वर्षा ऋतु प्रारंभ,
18	गुरु	श्रावण	कृष्ण	द्वितीया	....	अशून्यशयन व्रत, हिंडोला प्रारंभ, जयापार्वती व्रत पूर्ण (गुज),
19	शुक्र	श्रावण	कृष्ण	तृतीया	06:47	
20	शनि	श्रावण	कृष्ण	तृतीया	09:01	संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (चं.उ.रा.21:45)
21	रवि	श्रावण	कृष्ण	चतुर्थी	11:24	
22	सोम	श्रावण	कृष्ण	पंचमी	13:46	सावन का प्रथम सोमवार व्रत, गौरी-शंकर पूजन, रुद्राभिषेक उत्तम, नागपंचमी, मौना पंचमी, भैय्या पंचमी,
23	मंगल	श्रावण	कृष्ण	षष्ठी	15:57	सावन के प्रत्येक मंगलवार को भौम व्रत,
24	बुध	श्रावण	कृष्ण	सप्तमी	17:46	शीतला सप्तमी (ओड़ी), बुधाष्टमी पर्व (सूर्यग्रहण के समान),
25	गुरु	श्रावण	कृष्ण	अष्टमी	19:02	कालाष्टमी व्रत,
26	शुक्र	श्रावण	कृष्ण	नवमी	19:39	कौमारी पूजा नवमी
27	शनि	श्रावण	कृष्ण	दशमी	19:31	
28	रवि	श्रावण	कृष्ण	एकादशी	18:37	कामिका एकादशी व्रत, व्यतिपात महापात रात्रि 4:02 बजे से
29	सोम	श्रावण	कृष्ण	द्वादशी	17:00	सावन का दूसरा सोमवार व्रत, सोम-प्रदोष व्रत,
30	मंगल	श्रावण	कृष्ण	त्रयोदशी	14:43	मंगला गौरी, संध्याकालीन शिव चतुर्दशी,
31	बुध	श्रावण	कृष्ण	चतुर्दशी	11:54	सूर्योदय कालीन मासिक शिवरात्रि व्रत, 11:54 बजे से श्राद्ध की अमावस्या, दीप पूजा, आदि अमावस्या (द.भा.), कर्कट पूजा,

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	Diamond (Special)	Green Emerald (Special)	Naturel Pearl (Special)	Ruby (Old Berma) (Special)	Green Emerald (Special)
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	Red Coral (Special)	Y.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	Y.Sapphire (Special)
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं। >> Shop Online | Order Now

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2350 >>Order Now

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रुत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र
(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अदद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

जुलाई 2019 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
01	प्रात: 09:26 से अगले दिन सूर्योदय तक	25	प्रात: 05:21 से दिन 10:38 तक
04	प्रात: 05:00 से रात 02:31 तक	27	रात 07:31 से दिन सूर्योदय तक
23	दिन 10:45 से अगले दिन 05:20 तक	29	प्रात: 05:10 से संध्या 06:23 तक
द्विपुष्कर योग (दोगुना फल दायक)		**त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक)**	
28	दोपहर 04:36 से अगले दिन 05:23 तक	23	रात 12:08 से अगले दिन रात 04:57 तक
		29	सुबह 08:10 से अगले दिन प्रात: 05:13 तक
गुरु पुष्यामृत योग			
04	प्रात: 05"00 से रात प्रात: 02:31तक		
विघ्नकारक भद्रा			
01	प्रातः 04:56 से संध्या 04:05 तक (स्वर्ग)	19	रात 08:03 से अगले दिन प्रातः 09:14 तक (पृथ्वी)
05	रात 02:39 से अगले दिन दोपहर 01:10 तक (पृथ्वी)	23	संध्या 04:16 से अगले दिन प्रातः 05:14 तक (स्वर्ग)
09	प्रातः 05:25 से संध्या 04:25 तक(पाताल)	27	प्रातः 07:57 से रात 07:46 तक (स्वर्ग)
12	दोपहर 12:43 से रात 12:31 तक (स्वर्ग)	30	दोपहर 02:49 से रात 01:27 तक (स्वर्ग)
15	रात 01:48 से अगले दिन दोपहर 02:25 तक (पाताल)		

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- गुरु पुष्यामृत योग में किये गये किये गये शुभ कार्य मे शुभ फलो की प्राप्ति होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

	गुलिक काल (शुभ)	यम काल (अशुभ)	राहु काल (अशुभ)
वार	समय अवधि	समय अवधि	समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक

वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र

रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक

वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, precious and semi precious Gems stone deliver on your door step.

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach	11000	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach	2350
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach	10900	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach	2350
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach	2350
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	6400	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach	2350
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach	6400	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach	2350
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach	6400	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach	2350
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach	2350
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach	2350
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach	2350
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach	4600	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach	2350
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach	2350
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach	2350
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach	3250	शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach	2350
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach	1900
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach	2350	विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach	1900
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach	2350	सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach	1450
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach	2350	सिद्धि विनायक कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach	1450
अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach	2350	सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach	1450
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach	1450	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach	1050

कवच	मूल्य	कवच	मूल्य
वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ………………………………	1450	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1050
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach …………………………………	1450	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	910
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach …………………………	1450	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach …………………………	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ………………………………..	820
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ………………………………..	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ………………………	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ………………………………	910
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach …………………….	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ………………………………	910
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ………………………………..	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ………………………………….	1250	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1250
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach …………………………………	1250	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ………………………………..	820
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach …………………………….	1250	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach …………………………………	820
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……………………………….	1250	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	820
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……………………………………….	1250	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ………………………………	910
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach …………………………………	1250	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ………………………………	910
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach …………………………………	1250	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach …………………………………	910
ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ……………………………	1250	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ………………………………..	910
शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach ……………………………….	1050	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ………………………………..	910
विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………..	1050	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach ……………………………..	910
स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ………………………………	1050	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ………………………	910
मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	820	सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach …………………………………	820

वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach	820	सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach	820
कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach	820	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach	820
विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach	820	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach	820
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach	820	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach	730
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach	820	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah	730
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja)	820	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah	730
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach	820	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach	730
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach	820	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak	640

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजवर्त)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : Bangkok (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 325 to 12700 and Above…..

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

जुलाई 2019

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA JYOTISH

Monthly

JULY -2019